3-1

॥ सैदनराज ॥

॥ कालागुरुदेव ॥



ॐ ३-१

श्री गणेशाय नमः

लेखराज

गंगापत्नी नांथजी को दान

दयानन्द जी

पं. लेखराज शर्मा

शास्त्री

[illegible]

अथ शीघ्रबोधस्य विषयानुक्रमणिका।

प्रकरणम् १

द्वितीयं प्रकरणम् २

तृतीयं प्रकरणम् ३

चतुर्थं प्रकरणम् ४

(इत्यनुक्रमणिका समाप्ता)

श्रीः ।

अथ शीघ्रबोधः ।

(भाषाटीकासमेतः)

श्लोकः ।

भासयन्तं जगद्भासा नत्वाभास्वन्तमव्ययम् । क्रियतेकाशिनाथेन शीघ्रबोधायसंग्रहः ॥ १ ॥

टीका—अपनी कान्तिसे जगतको प्रकाशित करते हुए अविनाशी सूर्यनारायणको नमस्कार कर काशिनाथ शीघ्रबोधके अर्थ ग्रन्थ संग्रह करते हैं॥१॥

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाति मृगो मघा । अनुराधाच हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदाः ॥ २ ॥

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, मूल, स्वाती, रेवती मृगशिर, मघा, अनुराधा, हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवाह में मंगल दाता हैं ॥ २ ॥

माघेधनवतीकन्याफाल्गुनेसुभगाभवेत् । वैशाखेच तथाज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ३ ॥

टीका—माघमासमें विवाह करे तो कन्या धनवती हो, फाल्गुन में सौभाग्यवती, वैशाख, ज्येष्ठ में विवाह होय तो अपने पति को अत्यन्त प्यारी होय ॥ ३ ॥

आषाढेकुलवृद्धिःस्यादन्येमासाश्चवर्जिताः । मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहेकेपिकोविदाः॥ ४ ॥

टीका—आषाढमास में विवाह करे तो कुलकी वृद्धि होय, अन्य महीने विवाह में वर्जित हैं, और मार्गशीर्ष भी कोई कोई आचार्य विवाह में शुभ कहते हैं ॥ ४ ॥

अमावास्याच रिक्ता च वारवेला चजन्मभम् ।गंडांतं क्रूरवाराश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

टीका-अमावास्या और रिक्तातिथि यानी ४। ९। १४ वारवेला सूर्यार्क इत्यादि और जन्मका नक्षत्र और क्रूरवार-रवि, मङ्गल, शनि और गण्डान्त यह विवाह में यत्नपूर्वक वर्जै ॥ ५ ॥

नंदाभद्राजयारिक्ता पूर्णाश्चतिथयः क्रमात् । वारत्रयंसमावर्त्यस्तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ ६ ॥

टीका-नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा यह पांच नाम तिथियों के कहे हैं, तिनमें नन्दा यानी १। ६। ११, भद्रा, २। ७। १२, जया ३। ८। १३, रिक्ता ४। ९। १४ पूर्णा ५। १०। १५ ये प्रतिपदासे गिनना चाहिये ॥ ६ ॥

तुर्यार्कसप्तमश्चान्द्रेद्वितीयेभूमिनन्दने। चंद्रपुत्रेपंचमश्चदेवाचार्येतथाष्टमः ॥ ७ ॥

टीका-अब वारवेला कहते हैं, रविवारको चौथे याममें अर्धयाम ४, और चन्द्रको ७ भौमको २ बुधको ५ गुरुवारको ८ यामार्ध जानना ॥ ७ ॥

दैत्यपूज्येतृतीयश्च शनौषष्ठश्च निंदितः । प्रहरार्धे शुभेकार्ये वारवेलाच कथ्यते ॥ ८ ॥

टीका-शुक्रवार को ३ शनिवार को ६ इसप्रकारसे इन यामके अर्धयाम में वारवेला शुभकार्य में निंदित हैं,

वारवेलाचक्र.							
४	७	२	५	८	३	६	याम
३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	घ
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार

भद्राकर्कटयोगंच तिथ्यंतंयमघंटकम् । दग्धातिथिं च भांतं च कुलिकंच विवर्जयेत् ॥ ९ ॥

टीका—भद्रा और कर्कटयोग तथा तिथिके अंत की २ घटी, यमघण्टयोग, दग्धातिथि, नक्षत्रके अन्तकी ३ घटी और कुलिकयोग इतने दोष विवाह में वर्जित करै ॥ ९ ॥

दशम्यांचतृतीयायां कृष्णपक्षेप रेदले। सप्तम्यांचचतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदलेस्मृता ॥ १० ॥ एकादश्यांच तुर्थ्यां च शुक्लपक्षेपरेदले । अष्ट म्यांपूर्णिमायांच विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ११ ॥

टीका-अब कृष्णपक्ष, शुक्लपक्ष की जिन तिथियों में पूर्वदल वा परदल में विष्टि जो भद्रा होती है सो चक्र से समझलेना १०।११ ॥

अथ पूर्वदलभद्रातिथिपक्ष.			
कृष्णपक्ष	३	१०	परार्द्ध में
कृष्णपक्ष	७	१४	पूर्वार्द्धमें
शुक्लपक्ष	४	११	परार्द्ध में
शुक्लपक्ष	८	१५	पूर्वार्द्ध में

मेषमकरवृषकर्कटस्वर्गे कन्यामि थुनतुलाधननागे । कुंभमीनन्त्र विकेसरि मर्त्यौ विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥ १२ ॥

टीका - भद्रा स्वर्गलोक मृत्युलोक पाताल लोक इन तीनों लोक में वास करती है, मेष, मकर वृष कर्क–इनके चन्द्रमा में स्वर्गलोक में, कन्या मिथुन, तुला, धन इन के चन्द्रमा में पाताल लोक में, और कुम्भ, मीन, वृश्चिक, सिंह, इन के चन्द्रमा में भद्राका मृत्युलोक में वास जानना ॥ १२ ॥

स्वर्गेभद्राशुभंकार्यं पातालेच धनागमम्। मृत्युलोकेयदाविष्टिः सर्वकार्यविनाशिनी ॥ १३ ॥

टीका–यदि स्वर्गलोकमें भद्रा होवे तो शुभकार्य करे और पातालमें होवे तो द्रव्यलाभ होय, मृत्युलोक में हो तो सर्वकार्य विनाश करे ॥ १३ ॥

सम्मुखेमृत्युलोकस्था पाताले च अधोमुखी। ऊर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा संमुखे मरणप्रदा ॥ १४ ॥

टीका— मृत्युलोकमें भद्रा होय तो सन्मुख, पातालमें अधोमुख, स्वर्ग में ऊर्ध्वमुख इन में सन्मुख भद्रा हो तो मृत्युकी दाता है॥ १४ ॥

दिवाभद्रायदारात्रौ रात्रिभद्रायदादिने । तदाविष्टिकृतोदोषो न भवेत्सर्वसौख्यदा ॥ १५ ॥

टीका—कृष्णपक्ष में सप्तमी चतुर्दशी की और शुक्लपक्षमें अष्टमी पूर्णिमा की पूर्वदल भद्रा दिन संज्ञकहै सो रात्रिमें आवे, और शुक्लपक्ष में ४।११ कृष्णपक्ष में ३।१० की परदल भद्रा रात्रि-संज्ञक है सो दिनमें पड़े तो भद्राका दोष नहीं है ऐसी भद्रा सुखकी दाता है ॥ १५ ॥

मीनेचापेद्वितीयाच चतुर्थीवृषकुंभयोः । मेषकर्कटयोः षष्ठी कन्यायुग्मेषुचाष्टमी ॥ १६ ॥ दशमीवृश्चिकेसिंहे द्वादशीमकरेतुले । एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ १७ ॥

टीका—मीन और धन के सूर्य में द्वितीया २, वृषभ कुंभ के सूर्य में चौथ ४, मेष, कर्क के सूर्य

में ६, कन्या, मिथुन के सूर्य में ८, वृश्चिक, सिंह, के सूर्य में १०, मकर, तुला के रवि में १०, इन संक्रांति में उक्त तिथि दग्धा जानिये ये शुभकार्य में वर्जित हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥

मासांते दिनमेकं तु तिथ्यंते घटिकाद्वयम् । घटिकानां त्रयं भांते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ १८ ॥

टीका—मासांत कहिये संक्रांतिके अंतका एक दिन तिथ्यंत कहिये तिथि के अंतकी दो घड़ी भांत अर्थात नक्षत्र के अंतकी तीन घटी ये विवाह में वर्जित हैं ॥ १८ ॥

मासांते म्रियते कन्या तिथ्यंते स्यादपुत्रिणी । नक्षत्रांते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ १९ ॥

टीका—मासांत में विवाह होवे तो कन्या की मृत्यु होय । तिथ्यंत में अपुत्रिणी, नक्षत्र के अंतमें विधवा, भद्रा में विवाह होय तो कन्या और वर की मृत्यु होती है ॥ १९ ॥

सूर्येऽर्कसप्तमीसोमे षष्ठीभौमे च पंचमी । बुधेचतुर्थीह्येवेज्ये तृतीयाभृगुनंदने ॥ २० ॥ द्वितीयावर्जनीयाच प्रतिपच्चशनैश्चरे। कुलिकाख्योहि योगोयं विवाहादौ न शस्यते ॥ २१ ॥

टीका -अब कुलिकयोग कहते हैं,सो चक्रमें समझ लीजिए चक्र में लिखे हुए वार तिथि इनमें कुलिकयोग होता है ॥ २०-२१ ॥

अथ कुलिकयोगतिथिचक्र ।

र	च	म	बु.	गु.	शु	श	वार
७	६	५	४	३	२	१	तिथि

अवर्गो गरुडोज्ञेयो बिडालःस्यात्कवर्गकः । चवर्गः सिंहनामा स्याट्टवर्गः कुक्कुरःस्मृतः ॥ २२ ॥ सर्पाख्यःस्यात्तवर्गोपि पवर्गोमूष

कः स्मृतः। यवर्गोमृगनामास्या त्तथा मेषः शवर्गकः ॥ २३ ॥

टीका—अवर्गादि अष्टौ व्यापार विवाहादि में विचारने को कहते हैं, जिसके नामका जो अक्षर पहिला होय सो वही वर्ग कहाता है तिनमें अ, इ, उ, ए, ये अवर्ग को गरुडवर्ग कहते हैं। क ख, ग, घ, ङ, बिडालवर्ग। च, छ, ज, झ, ञ सिंहवर्ग। ट, ठ, ड, ढ, ण, श्वानवर्ग। त, थ, द, ध, न, सर्पवर्ग। प, फ, ब, भ, म, मूषकवर्ग। य, र, ल, व, मृग वर्ग। श, ष, स, ह, मेंढावर्ग॥२२-२३॥

स्ववर्गात् पंचमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः॥उदासीनस्तृतीयेच वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ २४ ॥

टीका-अपने वर्गसे पांचवाँ वर्ग वैरी जानिये. चौथे से मित्रता और तीसरे वर्गसे उदासीनता है इस प्रकार वर्ग भेद तीन प्रकार के हैं ॥ २४ ॥

अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः

पुनर्वसुः। अनुराधाश्रुतिःस्वाती कथ्यते देवतागणाः ॥ २५ ॥

टीका—अश्विनी, मृग, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, स्वाती ये देवतागण कहलाते हैं ॥ २५ ॥

तिस्रःपूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्या द्रीचरोहिणी । भरणीचमनुष्याख्यो गणश्चकथितोबुधैः ॥ २६ ॥

टीका—तीनो पूर्वा, ३ उत्तरा, अर्द्रा, रोहिणी, भरणी ये मनुष्यगण जानिये ॥ २६ ॥

कृत्तिकाचमघाश्लेषा विशाखा शततारकाः । चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचमूलंरक्षोगणःस्मृतः ॥ २७ ॥

टीका—कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा. धनिष्ठा, ज्येष्ठा ये राक्षस गण जानना ॥ २७ ॥

स्वगणेपरमाप्रीतिर्मध्यमादेवमर्त्ययोः। मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युःकलहोदेवरक्षसोः॥ २८॥

टीका—जो स्त्रीपुरुष एक गणके हों तो अधिक प्रीति होय. देव मनुष्य में मध्यम प्रीति, मनुष्य राक्षस गण हों तो मृत्यु होय, देव राक्षस हों तो कलह होवै॥ २८॥

षष्ठेस्त्रीपुंसयोर्वैरं मृत्युःस्यादष्टमेध्रुवम्। द्विर्द्वादशेच दारिद्र्यं नवमे पंचमे कलिः॥ २९॥

टीका स्त्रीकी राशिसे पुरुष की राशि छठी होय तो वैर जानिये ओर स्त्रीकी पुरुषसे आठवीं राशि आवे तो मृत्यु होय स्त्री से८पुरुष होयतो शुभ है और २। १२ होवे तो दारिद्र्य होय, और ९। ५ होय तो कलह होय॥ २९॥

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्रीमे-

षोहरिर्धनुः। शूद्रोयुग्मं तुलाकुंभो वैश्यः कन्यावृषोमृगः ॥३०॥

टीका—मीन, वृश्चिक, कर्क ये राशि ब्राह्मण वर्ण हैं. मेष सिंह धनु ये क्षत्रिय वर्ण हैं. मिथुन, तुला, कुंभ शूद्र वर्ण हैं, कन्या, वृषभ, मकर ये वैश्यवर्ण हैं ॥ ३० ॥

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः। म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणारक्षितोयदि॥ ३१॥ विप्रवर्णाचयानारी शूद्रवर्णश्चयःपतिः। ध्रुवं भवति वैधव्यं शुक्रस्य दुहिता यदि ॥ ३२ ॥

टीका—जो कन्या उत्तम वर्ण होय और पुरुष हीनवर्ण हो तो पुरुष की मृत्यु होय, इसलिये उत्तमवर्ण की कन्यासे विवाह न करें तिसमें ब्राह्मणी विशेषतः मना है और जो ब्राह्मण वर्ण कन्या से शूद्रवर्ण वरका विवाह होय तो शुक्रकी कन्या

हो तौभी निश्चय करके विधवा होय ॥३१॥ ३२॥

पौष्णादिकंषट्कमुशंतिपूर्वमा द्रादिकंद्वादशमध्यभागम्। पौरंदराद्यंनवकंभचक्रपरंचभागंगण कार्विदग्धाः ॥ ३३ ॥

टीका- रेवती नक्षत्र से ६ नक्षत्र पूर्व भाग कहाते हैं और आर्द्रा से १२ नक्षत्र मध्यभाग के हैं ज्येष्ठा आदि नव नक्षत्र पर भाग कहलाते हैं॥

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे स्त्रकन्यका। परभगे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥ ३४ ॥

टीका – पूर्वभाग का पति और मध्यभागी स्त्री हो तो पति श्रेष्ठ, जो मध्यभागी स्त्री होय और परभागा पुरुष हो तो श्रेष्ठ और स्त्री पुरुष दोनो परभागी हों तो आपसमें अधिक प्रीति होती है ॥ ३४ ॥

सिंहंविनावशाःसर्वे द्विपदानां

चतुष्पदाः। भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ ३५ ॥

टीका—एक सिंह को छोड़कर यावत् चौपाये मनुष्य के वश में हैं, जलचर तो उनके भक्ष्यही हैं। सरीसृप कहिये सर्पादिक भय कारी हैं ॥

मकरस्यपूर्वभागो मेषसिंहधनुर्वृषाः । चतुष्पदाःकीटसंज्ञःकर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ॥ ३६ ॥ तुलाच मिथुनंकन्यापूर्वार्द्धं धनुषश्चयत् द्विपदास्तुमृगार्द्धंतु कुंभमीनौजलाश्रितौ ॥ ३७ ॥

टीका-मकरराशिका पहिला अर्द्धभाग, उत्तराषाढ़ाके तीनों चरण, और श्रवणके डेढ़ चरणपर्यंत का चन्द्रमा और मेष सिंह धन वृषभ आधा ये चतुष्पद संज्ञक जानिये और कर्कराशि की कीट संज्ञा है वृश्चिक की सर्प संज्ञाहै। तुला, मिथुन, कन्या और धन का पहिला अर्ध भाग ये द्विपद और कुम्भ, मीन ये जलचर जानिये ॥ ३६ ३७ ॥

अथ योनिचक्रम्।

अ,	रे.	पु.	रो.	आ	पू.फा	पु.	उ.फा.	स्वा	ज्ये	चि.	पूषा.	ध	ऽभि.
श.	भ.	कृ.	मृ.	मु.	मा	श्लेऽश.	उ.भा	ह.	ऽनु	वि.	श्र.	पू	उ.पा.
घो	ग.	छा	ना	श्वा	मुषा.	वि.	गौं	भं	हि	व्या	वान.	सि	नकु.

अश्विनीवारुणश्चाश्वां रेवतीभ
रणीगजः। पुष्यश्चकृत्तिकाछागो
नागश्चरोहिणीमृगः॥३८॥ आर्द्रा
मूलमपिश्वाचमूषकः फाल्गुनीम
घा। मार्जारोदितिराश्लेषा गो
जातिरुत्तराद्वयम्॥ ३९॥ महिषः
स्वातिहस्तौच मृगोज्येष्ठानुराधि
का। व्याघ्रश्चित्राविशाखाच पू
र्वाषाढीचमर्कटः॥ ४०॥वसुभाद्र

पदौ सिंहो नकुलोऽभिर्जिद्बभ्रु
योः। योनयः कथिताभानां वैर
मैत्री विचार्यताम् ॥ ४१ ॥

टीका—इन चारों श्लोकों का अर्थ योनिचक्र में समझलेना चौदह योनिकोष्ठक के सन्मुख सबके अपने अपने कोष्ठक लिखे हैं ॥ ३८। ३९ ४०। ४१ ॥

अथयोनिवैर।

गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषं श्वै
णंचबभ्रूरगं वैरंवानरमेषकंच सु
महत्तद्बद्बिडालोन्दुरु। लोकानां
व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वाप्रय
त्नादिदं दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि
सदावर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥ ४२ ॥

टीका—गो व्याघ्र का, हाथी सिंह का, घोडा भैंसा का, नकुल सर्पका, वानर मेंढाका, बिलाव

मूषकका वैर भाव इस प्रकार त्यागकर योनि प्रीति विचारना। स्त्री पुरुष, स्वामि सेवक और अनेक लौकिक विवाहादिमें करना चाहिये॥४२॥

मरणंपितृमात्रोश्च संग्राह्यंनवपंचकम्। वरस्यपंचमेकन्या कन्यायानवमेवरः॥ ४३॥ एतत्त्रिकोणकंग्राह्यंपुत्रपौत्रसुखावहम्। षड्ष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत्॥ ४४॥

टीका—जो पुरुष राशिसे कन्याकी राशी ९ होय तो पिताकी मृत्यु होय. और जो कन्याकी राशि पुरुष राशिसे ५होय तो माताकी मृत्यु होय और जो वरकी राशि से ५ राशी कन्याकी हो और कन्याकी राशि से नवम वरकी राशि हो तो यह त्रिकोण शुभ और पुत्र पौत्र के सुखको देनेवाला है और जो ६ छठे, आठवें ८, होय तो मृत्यु होय इसलिये इसका विचार अवश्य करनाचाहिये ४४

वरस्यभास्करबलं कन्यायाश्चगु
रोर्बलम् । द्वयोश्चंद्रबलं ग्राह्यं
विवाहो नान्यथाभवेत् ॥ ४५ ॥

टीका--वरको सूर्यबल, और कन्या को बृहस्प-
तिका बल, और वर कन्याको चन्द्रबल अवश्य
लेना चाहिये अन्यथा विवाह ठीक नहीं ॥ ४५ ॥

अष्टमेचचतुर्थेच द्वादशेचदिवाक
रे । विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नो
त्यत्र न संशयः ॥ ४६ ॥

टीका—जो वरको सूर्य ४ । ८ । १२ स्थान में
होय तो विवाहित वरकी मृत्यु होय ॥ ४६ ॥

जन्मन्यथद्वितीयेवापंचमेसप्त
मेपिवा । नवमेचदिवानाथे पूज
यापाणिपीडनम् ॥ ४७॥ एकाद
शेतृतीयेवा षष्ठेवादशमेपिवा ।

वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिन नायकः ॥ ४८ ॥

टीका—जो वरकी राशिसे १। २। ५। ७। ९। सूर्य होय तो पूजा दान जपादिक करके विवाह शुभ है और जो ११। ३। ६। १० रवि होय तो विवाह कल्याणप्रद होता है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

अष्टमे द्वादशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ। पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥ ४९ ॥

टीका–जो कन्याको बृहस्पति ४। ८। १२ होय तो पूजन करके भी विवाह न करे ॥ ४९ ॥

षष्ठेजन्मनिद्वेवेज्ये तृतीयेदशमे पिवा । भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥ ५० ॥

टीका—जो कन्या का बृहस्पति ६। १। ३। १० होय तो बडी पूजा वा दानादिक देके विवाह करे तो शुभ होय ॥ ५० ॥

एकादशोद्वितीयेवा पंचमेसप्तमेपि वा। नवमेचसुराचार्ये कन्यायाःशुभकारकः ॥ ५१ ॥

टीका–जो बृहस्पति ११। २। ५। ७। ९। होय तो विशेषकर के कन्याको शुभ है॥ ५१ ॥

गौरीत्वष्टाब्दकावापि नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या अतऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ५२ ॥

टीका––अष्टवर्ष की गौरी और नववर्ष की रोहिणी. दश वर्ष की कन्या ये संज्ञा जानिये, अनन्तर रजस्वला कहाती है ॥ ५२ ॥

गौरीगुरोर्बलेदेया रोहिणीभास्करस्यच। कन्याचंद्रबलेदेया सर्वदोषविवर्जिता ॥ ५३ ॥

टीका–गौरी बृहस्पतिका बल देखके, रोहिणी सूर्यबल,और कन्याको चन्द्रबल देखके दानकरै५३

आद्यचंद्रः श्रियंकुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके । तृतीयेधनसंपत्तिं चतुर्थेकलहागमम् ॥ ५४ ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिं चषष्ठेसंपत्तिमुत्तमाम् । सप्तमेराजसन्मानं मरणंचाष्टमेतथा ॥ ५५ ॥ नवमेधर्मलाभंचदशमेमानसेप्सितम् । एकादशेसर्वलाभंद्वादशेहानिमेवच ॥ ५६ ॥

टीका-अब कन्या और वर को चन्द्रबल कहते हैं,१ लक्ष्मीप्राप्ति । २मनःसन्तोष । ३ धनसम्पत्ती । ४ कलहागम । ५ ज्ञानवृद्धि । ६ सम्पत्ति । ७ राजसन्मान । ८ मृत्युभय । ९ धर्मलाभ । १० मनोवांछित कीसिद्धि । ११ सर्वलाभ । १२ हानि ॥५६॥

अब अन्यमत में विशेष ।

गुर्विंद्वर्कबलागौरी गुर्विंदुबल रोहिणी । रवींदुबलजाकन्या प्रौढा लग्नबलास्मृता ॥ ५७ ॥

टीका—गौरी को बृहस्पति, चन्द्रमा सूर्य इन का बल शुभ है. रोहिणी को गुरु और चन्द्रमा का, कन्या को रवि और चन्द्रमाका, प्रौढाको लग्नबलही पर्याप्त है ॥ ५७ ॥

जीवोजीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चंद्रमाः । तेजोदाताभवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥ ५८ ॥ जीव हीनामृताकन्यासूर्यहीनो मृतोवरः । चंद्रहीनेगतालक्ष्मीः स्थान हानिःकुजंविना ॥ ५९ ॥

टीका—बृहस्पति जीव दाता हैं, चंद्रमा धनके. सूर्य तेजके, और मंगल भूमि के दाता हैं।बृस्पति हीन हो तो कन्याकी मृत्यु होवै । सूर्य हीन होय तो वरकी मृत्यु होय। चंद्रमा हीन हो तो लक्ष्मी क्षीणहोय मंगल हीन होय तो स्थानहानि करै॥५८।

गौरींददन्नागलोके वैकुंठेरोहि णींददत् । कन्यांददन्मृत्युलोके रौरवंतु रजस्वलाम्॥ ६० ॥

टीका-गौरीदान करनेवाला पाताल लोकमें, रोहिणीदान कर्ता वैकुंठवास पावे, कन्यादान करनेवाला मृत्यु लोकके सुख को प्राप्त होय और रजस्वलाका दान करनेवाला रौरव में जाताहै ६०

संप्राप्तेकादशेवर्षे याकन्यानविवाहिता । मासेमासेपिताभ्राता तस्याः पिबतिशोणितम् ॥ ६१ ॥

टीका-ग्यारहवां वर्ष प्राप्त होने पर जो कन्या अविवाहित रहे तो प्रति मास में उसका पिता और ज्येष्ठ भ्राता रज संबंधीरुधिर पान करता है

द्वादशैकादशेवर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते । पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्यलग्नंप्रदापयेत्॥ ६२ ॥

टीका—जो ग्यारह बारह वर्ष की कन्या होय तो उसकी शुद्धि नहीं होती अतएव लग्न शुद्धि और पूजा दान करके विवाह करै ॥ ६२ ॥

माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्राताततथैवच । त्रयस्तेनरकंयांति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम् ॥ ६३ ॥

टीका—यदि अविवाहित कन्या पिता के घर रजस्वला हो उसके देखने से मा,बाप,बडा भाई ये तीनों नरक में जाते हैं ॥ ६३ ॥

अथनाडीविचार ।

आदिमध्यान्तकंवापिअंतमध्यादिभानिच।अश्विन्यादिक्रमेणैव

रेवत्यंतंसुसंलिखेत्॥ ६४ ॥ ऊर्ध्वगा वेदरेखाः स्युस्तिर्यग्रेखाद्वयंस्मृताः सर्पाकारं लिखेद्धानांनाडीचक्रंवदेद्बुधः ॥६५॥ नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्चक्ष-

आदिमध्यांतनाड़ीचक्र.

आ.	मध्या	अंत्या
अ.	भ.	कृ.
आ.	मृ.	री.
पु.	पु	आ.
उ.	पू.	म.
ह.	चि.	स्वा.
ज्ये.	अ.	वि.
मू.	पू.	उ.
श.	ध.	श्र.
पू.	उ.	रे.

त्त्रये ॥ गणाद्दोषधूचवैश्येषुयो
निर्दोषस्तुपादजान् ॥ ६६ ॥

टीका—ऊपर के चक्र से नक्षत्रानुसार नाड़ी का क्रम जानना तिसमें विशेष करके, नाड़ी का विचार ब्राह्मणको,गण विचार वैश्यको, योनि विचार शूद्र को करना चाहिये। ६४॥६५॥ ६६ ॥

एकनाडीस्थनक्षत्रेदंपत्योर्मरणं-
ध्रुवम्। विद्धायांचभवेद्धानिर्विवा
हेचाशुभं भवेत् ॥ ६७ ॥

टीका—वर कन्या का जो एक नाड़ी के नक्षत्रमें जन्म होय तो दोनों की मृत्युहोय और नाडीके वेधमें विवाह करे तो हानि होय ६७ ॥

आद्यानाडीवरंहंतिमध्यानाडी
चकन्यकाम्। अंत्यानाडीद्वयोर्मृत्यु
र्नाडीदोषंत्यजेद्बुधः ॥ ६८ ॥

टीका-आद्या नाड़ी का वेध होय तो वर को अरिष्ट करे और मध्याका होय तो कन्या को दूषित है. अन्त्या नाडीका वेध हो तो दोनों की मृत्यु होय ॥ ६८ ॥

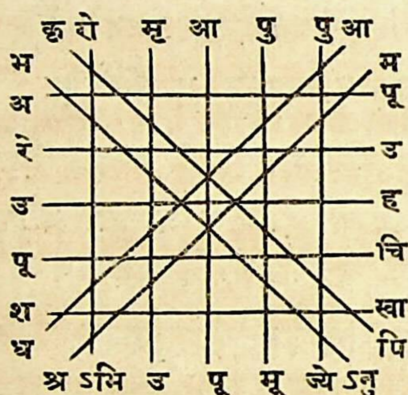
एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषोन विद्यते। अन्यर्क्षपत्तिवेधेषु विवाहोवर्ज्जितःसदा ॥ ६९ ॥

टीका-वर कन्या का एकही नक्षत्र में जन्म होय तो एक नाडी का दोष न मानना औरही और नक्षत्र का जन्म होय तो विवाह सर्वथा वर्जित है

पंचोर्ध्वाःस्थापयेद्रेखाः पंचतिर्यङ्मुखास्तथा। द्वयोश्चकोणयोर्द्वेद्वे चक्रंपंचशलाककम् ॥ ७० ॥ ईशानेकृत्तिकादेया क्रमादन्यानि भानिच। ग्रहास्तेषुप्रदातव्या येच यत्रप्रतिष्ठिताः ॥ ७१ ॥ लग्नस्यानि

पंचशलाका चक्र ।

कटे याचगताभवतिपूर्णिमा। तन्न क्षत्रस्थितश्चन्द्रोदातव्यो गणको त्तमैः ॥ ७२ ॥



टीका-ईशान दिशा से कृत्तिका आदि नक्षत्र क्रमपूर्वक धरिये ॥ ७१ ॥ जो लग्न के निकट गत स्थित पूर्णिमा हो तिस नक्षत्र स्थित चन्द्रमा को उत्तम ज्योतिषियों ने देना चाहिये ॥ ७२ ॥

लत्तापातो युतिर्वेधो जामित्रं बुधपंचकम् । एकार्गलोपग्रहौ

च क्रांतिसाम्यंनिगद्यते ॥ ७३ ॥ दग्धातिथिश्चविज्ञेयादशदोषा महाबलाः। एतान् दोषान् परित्यज्य लग्नंसंशोधयेद्बुधः॥७४॥

टीका–अब लत्तादि दोष कहते हैं, लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बुधपञ्चक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य, दग्धातिथि ये दश दोष महा बलवान् हैं। इनको छोड लग्न शोधन करे॥७३।७४॥

नक्षत्रंद्वादशं भानुस्तृतीयंलत्तयाकुजः। षष्ठंजीवोष्टमंमंदोहंति दक्षिणतः सदा ॥ ७५ ॥ वामेनसप्तमश्चान्द्रिर्नवमंसिंहिकासुतः। हन्तिभं पंचमं शुक्रोद्वाविंशंपूर्णचन्द्रमाः ॥ ७६ ॥

टीका–जो नक्षत्र का लग्न हो वही नक्षत्र से दाहिने गिने। सूर्य, भौम, गुरु, शनि ये चारग्रह

इस प्रकार लात मारते हैं, १२ रवि, ३ भौम, ६ गुरु, ८ शनि, लात मारते हैं और वाम भाग होके सातवें नक्षत्रको बुध लात मारता है। नव- में राहु, पांचवें शुक्र, और बाईसवें नक्षत्र को चन्द्रमा लात मारता है ॥ ७५ । ७६ ॥

रवेर्लत्ता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् । बृहस्पतेर्बंधुनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ७७ ॥ बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ताराहोर्विनाशयेत् शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा तु कलानिधेः ॥ ७८ ॥

टीका-सूर्य की लत्ता सम्पत्ति को हरण करती है भौम की लात मृत्यु कारक है बृहस्पति की बन्धुको नाशकरे, शनिकी लात कुलका क्षय करे. राहुकी लातसे सर्व नाश होय, शुक्र की लात दुःख दायक है बुध की लात त्रास करे ॥ ७७ । ७८ ॥

सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्राद्दोषपातो विधीयते । मघाऽऽश्लेषाचचित्रा

चसानुराधाश्चरेवती ॥७९॥ श्रव-
णोपिचषट्कोऽयंपातदोषोनिग
द्यते। अश्विनीमवधिंकृत्वाग
णयेल्लग्नभावधि॥ ८०॥

टीका-जो नक्षत्र में सूर्य हो उसी नक्षत्र से पातदोष कहना। मघा, आश्लेषा, चित्रा, अनुराधा, रेवती, श्रवण ये छःपात हैं. इन नक्षत्रों को सूर्य के संयोग से छःप्रकारके पात कहते हैं. प्रथम सूर्य के नक्षत्रसे सत्ताईस रेखा खैंचिये. अश्विनी से लग्न तक गिनिये जो उक्त छःनक्षत्र में गिनती पूरी होय तो पातदोष लगे ७९। ८०

पावकःपवमानश्चविकारः क-
लहोपरः। मृत्यु क्षयश्च विज्ञेयं
पातषट्कस्यलक्षणम् ॥ ८१ ॥

टीका-अब छः प्रकार पात के नाम कहते हैं पावक १ पवमान२ विकार ३ कलह ४ मृत्यु ५क्षय ६। ये छहों पात अपने नामानुसार फल करते हैं॥

पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितोहरिः । पातेनपतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ ८२ ॥

टीका—पात ने ब्रह्मा को गिराया और विष्णु को और शिवको अतएव विवाह में पातदोष विशेष करके वर्जित करै ॥ ८२ ॥

चित्रांगतेपातविचित्र देशे मैत्रे मघामालवकेनिषिद्धः ॥ पौष्णाश्रुतीचोत्तरदेशजातःसर्वत्रवर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥ ८३ ॥

टीका—चित्रा नक्षत्रका पात विचित्रदेशमें वर्जित है, अनुराधाका मालवदेशमें, मघा का पात मालवदेश में और रेवती और श्रवण इनका पात उत्तर में, और आश्लेषाका सर्वदेशमें वर्जित हैं ॥

यत्रगृहेभवेच्चन्द्रोग्रहस्तत्रयदा

भवेत् । युतिदोषस्तदाज्ञेयोविना शुक्रंशुभाशुभम् ॥ ८४ ॥

टीका—जिस नक्षत्रका चन्द्रमा हो और उसी नक्षत्रमें और कोई ग्रह होय तो युतिदोष जानना परन्तु शुक्र विना शुभ संयुक्त शुभ, अन्यतम अशुभ हैं ॥ ८४ ॥

रविणासंयुतोहानिं भौमेननिधनं शशी । करोतिमूलनाशंचराहुकेतुशनैश्चरैः ॥ ८५ ॥

टीका—जो चन्द्रमाके साथ सूर्य हो तो हानि करे, भौम के हो तो मृत्युकरै और राहु, केतु, शनैश्चर के साथ होय तो मूल नाश करैं ॥८५॥

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चंवा मित्रराशिगः । युतिदोषश्च न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसीसदा॥ ८६ ॥

टीका—जो चन्द्रमा षड्वर्ग में, श्रेष्ठ वर्गन में होय अथवा उच्चका होय वा मित्रराशिका

होय तो युतिदोष का नाश करे और स्त्री पुरुष दोनों सुखी रहैं ॥ ८६ ॥

एकरेखास्थितिर्वेधो दिनना थादिभिर्ग्रहैः। विवाहेतत्रमासंतु नजीवतिकदाचना ॥ ८७ ॥

टीका—जिस नक्षत्रका लग्न होय और वही नक्षत्रस्थास सूर्य आदि कोई ग्रह होय तो उसका वेध कहे विवाह के पीछे एक महीना के भीतर मृत्यु करे ॥ ८७ ॥

अश्विनीपूर्वफाल्गुन्या भरणी चानुराधया । अभिजिच्चापिरो हिण्या कृत्तिकाच विशाखया । ॥८८॥ मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषा- ढातथार्द्र्या । पुनर्वसुश्चमूलेन तथापुष्यश्चज्येष्ठया ॥ ८९॥ ध- निष्ठयातथाश्लेषा मघापिश्रवणो

नत्र। रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्ते नोत्तरभाद्रपात्॥ ९०॥ स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रयापूर्व्वभाद्रपात्। विद्धान्येतानिवर्ज्यानि विवाहेभादिकोविदैः॥ ९१॥

टीका-अश्विनी से और पूर्वा फाल्गुनी से एक रेखा है ऐसे जो दोनों जगह एक रेखा होय तो वेध कहिये ऐसे अट्ठाईस नक्षत्र को जानिये ये वेध पञ्चशलाका चक्रमें समझ लेना॥ ९१॥

रविवेधेचवैधव्यंकुजवेधेकुलक्षयम्। बुधवेधेभवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः॥९२॥ अपुत्राशुक्रवेधेच सौरेचन्द्रेचदुःखिता। परपुरुषरताराहोःकेतोःस्वच्छन्दचारिणी।

टीका-जो सूर्यका वेध लगे तो विधवा होय, मंगल का वेध लगे तो कुलका क्षयहोय, बुधका

वेधलगे तो वन्ध्या, गुरुका वेधलगे तो सन्यासिनी, शुक्र का लगे तो पुत्र न होय शनि चन्द्रमा का वेधलगेतो दुःखी होय, राहुका वेध लगे तो पर पुरुषगामिनी होय. केतुके वेध में स्वच्छन्दचारिणी होय ॥ ९४ ॥

शनिराहुंकुजादित्या यदाजन्मर्क्षसंस्थिताः। विवाहिताचयाकन्यासाकन्याविधवाभवेत् ॥ ९४ ॥

टीका—शनि, राहु, भौम, सूर्य इनमें से कोइ ग्रह विवाह में जन्मनक्षत्र पर होय तो कन्या विधवा होय ॥ ९४ ॥

चतुर्दशंचनक्षत्रं जामित्रंलग्नभात्स्मृतम्। शुभयुक्तंतदिच्छन्ति पापयुक्तंचवर्जयेत् ॥ ९५ ॥

टीका—जो लग्नके नक्षत्र से चौदहें नक्षत्र पर कोइ ग्रह होय तो जामित्रदोष शुभयुक्त ग्राह्य है व पापयुक्त वर्जित है ॥ ९६ ॥

चन्द्रपूर्चान्द्रिभृगुजीवोजामि

त्रेशुभकारकाः । स्वर्भानुभानुम
न्दारा जामित्रे न शुभप्रदाः ॥९६॥

टीका-जो चन्द्रमा बुध बृहस्पति और शुक्र ये ग्रह जन्मके नक्षत्र से जामित्र होयँ तो शुभ, और जो शनि राहु केतु हों तथा भौम चौदहें जामित्रपर होय तो अशुभ है ॥ ९६ ॥

चन्द्राद्वालग्नतोवापिग्रहावर्ज्या
श्चसप्तमे । तत्रस्थिताग्रहा नूनं
व्याधिवैधव्यकारकाः ॥ ९७ ॥

टीका-चन्द्रमा से वा लग्नके राशिसे सातवें कोई ग्रह हो तो व्याधि और वैधव्य करै ॥ ९७ ॥

धार्यातिथिर्मासदशाष्टवेदाः सं-
क्रान्तितोयातदिनैश्च योज्याः ।
ग्रहैर्विभक्तायदिपंचशेषोरोगस्त
थाग्निर्नृपचौरमृत्युः ॥ ९८॥

टीका—अब पञ्चक कहते हैं, तिथि १५, मास कहिये १२ दश १० अष्ट ८ वेद ४ संक्रान्ति से जितने दिन गए हों तिनको युक्त करके नव ९ का भाग दे, जो पांच शेष बचे तो पञ्चक जानिये. ऐसेही पांचों अंक विचार के रोगपञ्चक १५ में, अग्निपञ्चक बारह में १२, राज्यपञ्चक दशवें १०, और चौरपञ्चक ८ में, मृत्युपञ्चक ४ में ॥ ९८ ॥

यद्यर्कवारेकिलरोगपञ्चकं सोमेचराज्यंक्षितिजेचवह्निः । सौरेचमृत्युर्धिषणेचचौरो विवाहकाले परिवर्जनीयाः ॥ ९९ ॥

टीका—रविवार को रोगपञ्चक, सोमको राज्य पञ्चक, मंगलको अग्निपञ्चक, शनैश्चरको मृत्युपञ्चक, भृगुवारको चौरपंचक ये विवाहमें होंय तो वर्जित हैं ॥ ९९ ॥

रोगञ्चौरंत्यजेद्रात्रौ दिवाराज्याग्निपञ्चकम् । उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युरन्यकालेननिन्दिताः १००

टीका—रोगपञ्चक चौरपंचक रात्रि को अशुभ है, और राज्य अग्नि दिनमें, दोनोंके संधिन में मृत्युपंचक निंदित है, और समय में वर्जित नहीं हैं ॥ १०० ॥

सूर्यभात्पञ्चमे विद्युन्नक्षत्रे शूलमष्टमे। चतुर्दशे शनेः पातः केतुरष्टादशे तथा ॥१०१॥ ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्च द्वाविंशके। त्रयोविंशतिके कम्पः पञ्चविंशे तु वज्रक॰

टीका—सूर्यके नक्षत्र से पांचवें कोई ग्रह होय तो विद्युद्दोष लगे, और ८ वें शूलदोष, चौदहें शनिपात दोष, अठारह पर केतुदोष, १९ पर उल्का, २२ पर निर्घात, २३ पर कम्प २५ पर वज्रदोषलगे ॥ १०१ । १०२ ॥

पुत्रनाशकरी विद्युत् पत्युः शूलो विनाशकः। शनेःपातो वंशघाति केतुर्देवरनाशकः ॥ १०३ ॥

द्रव्यनाशकरीचोल्का निर्घातोब न्धुनाशकः। कंपःकंपयते नित्यं वज्रे स्त्रीव्यभिचारिणी १०४ ॥

टीका—विद्युत् दोष लगै तो पुत्रका नाश करै, शूलदोष पतिका नाशकरै, शनिका पातदोष वंश घात करै, केतुदोष देवरका नाश करै, उल्का दोष द्रव्यका नाशकरै, निर्घात भ्राताको नाश-करै, कँप नित्यही कंपावे, वज्रदोष लगै तो स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥ १०३, १०४ ॥

योगांकेविषमेचैको देयोष्टाविं शतिःसमे। अर्द्धंकृत्वाश्विनीपूर्वा संकसंमूर्ध्निदीयते ॥ १०५ ॥

टीका—जो योगके अंक विषम होंय तो एक जोड़ना और सम अंक हों तो अट्ठाईस जोडना उसे आधा कर, अश्विनीते से पूर्व्व जो अंक हो सो मस्तकपर लिखिये ॥ १०५ ॥

विष्कम्भेचाश्विनीदेया प्रीतौ

स्वातिर्निगद्यते । सौभाग्येचविशाखा स्याद्वायुष्मान्भरणीयुतः ॥१०६॥ शोभनेकृत्तिका देया अनुराधा चगण्डके । रोहिणी च सुकर्माख्येधृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्त्तिता ॥१०७॥ गण्डेमूलंमृगःशूले वृद्धौचार्द्रानिगद्यते । पूर्वाषाढाध्रुवेप्रोक्ता व्याघातेचपुनर्वसुः॥१०८॥ हर्षणेचोत्तराषाढा वज्रेपुष्यःप्रकीर्त्तितः । अभिजिच्चतथासिद्धावाश्ले

	भृ.	
रो.		आ.
कृ.		पु.
भ.		पु.
अ.		ऽश्लो.
रे.		म.
उ.		पू.
पू.		उ.
श.		ह.
ध.		चि.
श्र.		स्वा.
अ.		वि.
उ.		ऽनु.
पू.		ज्ये.
	मू.	

षाव्यतिपातके॥१०९॥वरीयसिमृ
तिर्दैयापरिघेचमघातथा। शिवे
धनिष्ठादातव्या सिद्धौपूर्वाचफा
ल्गुनी॥११०॥साध्येमृतभिषादेया
शुभेचोत्तरफाल्गुनी ।पूर्वाभाद्र
पदाशुक्ले हस्ते ब्रह्मा प्रकीर्तितः
॥१११॥ उत्तराभाद्रपच्चन्द्रचित्रादे
याच्चवैधृतौ। सूर्याचन्द्रमसोर्यो
गे भवेदेकार्गलंतदा ॥११२॥ त्रयो
दशातिरोरेखा एकोर्ध्वामूर्ध्वभि
स्मृता। योगांकेप्राप्तनक्षत्रे ज्ञेय
मेकार्गलं बुधैः॥ ११३॥

टीका—एकार्गलचक्रकी तरह रेखा तिरछी और एक रेखा खडी खींचे, योगके अंक और जो नक्षत्र कहे हैं सूर्य चंद्रका योग एक रेखा से होय तो एकार्गल दोष कहिये. विष्कम्भ योगे

को और अश्विनीको कहा है ऐसेही क्रमसे चक्र में समझ लीजै ॥ ११३ ॥

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीनंलिखेद्बुधः। सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौक्रांतिसाम्यंनिगद्यते ॥११४॥ मीनःकन्ययायुक्तो मेषःसिंहेन संगतः। मकरेणवृषक्रांतिश्चापोपिमिथुनेनच॥११५॥ कर्कोणवृश्चिक कोविद्धो वेधश्चतुलकुम्भयोः। क्रांतिसाम्येकृतोद्वाहो नजीवति कदाचन ॥ ११६ ॥

टीका—तीन रेखा ऊर्ध्व और तीन तिरछी खैंच के मध्यकी रेखापर मीन कन्या और तिरछी पर मिथुन, धन, ऊपर लिखके क्रमसे सब लग्न को रख चक्र बनाइये तिस एक रेखापर चंद्र सूर्य पडे तो क्रांतिसाम्य दोष कहिये, मीन और

कन्याका वेध जानिये ऐसेही सब राशियों का वेध चक्रमें समझ लीजिये तुला कुंभसे कन्यावृश्चिक से मिथुन धन

	११	१२	१	
१०				२
९				३
८				४
	७	६	५	

से मकर वृषभ से मेष सिंहसे इन राशियों से परस्पर समझ करके त्याग कर दीजिये यह वेध विवाहदिक और अनेक कार्य में वर्ज्य है ॥ ११६ ॥

क्रांतिसाम्येचकन्याया यदिपाणिग्रहो भवेत् । कन्या वैधव्यतां याति ईश्वरस्यदुहितायदि ॥११७॥

टीका—जो क्रांतिसाम्य में विवाह हो तो ईश कहिये महादेव की पुत्री होय तौ भी विधवा होय ॥ ११७ ॥

मर्मवेधःकराटकश्च शल्यंछिद्रं चतुर्थकम् । एतद्वेधचतुष्कंतुपरित्याज्यं प्रयत्नतः ॥११८॥

टीका— अब चार दोष कहते हैं. मर्मवेध १,

कंटक २, शल्य ३, छिद्र ४ इस वध चतुष्क को यत्न कर के त्यागना ॥ ११८ ॥

लग्नेपापेमर्मवेधः कंटकोनवपं चके। चतुर्थेदशमेशल्यंछिद्रंभव तिसप्तमे ॥ ११९ ॥

टीका—लग्नमें पापग्रह होय तो मर्मवेध होय, चतुर्थ, दशम स्थान में पाप ग्रह हो तो शल्य दोष कहते हैं. और सप्तम स्थान में पापग्रह हो तो छिद्रदोष जानिये. नवम, पंचम स्थान में पापग्रह हो तो कंटक दोष जानना ॥ ११९ ॥

मरणं मर्मवेधेस्यात् कंटकेचकु लक्षयः। शल्येचनृपतेर्भीतिःपुत्र नाशश्चछिद्रके ॥ १२० ॥

टीका—यदि मर्मदोष में विवाह हो तो मरण होता है और कंटक में हो तो कुटुम्ब का क्षय होय,और शल्यदोष लगे तो राजा से भय होय, छिद्र में होय तो पुत्र नाशक है ॥ १२० ॥

जन्ममासे जन्मभे चनक्ष जन्म दिनेपि च। ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥ १२१ ॥

टीका—जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म दिन में विवाह न करे। और ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठ पुत्र का विवाह कदापि न करे ॥ १२१ ॥

नकन्यावरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम्। द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे नज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥ १२२ ॥

टीका—जो वर तथा कन्या दोनों प्रथम गर्भ के होंय तो ज्येष्ठ मास में विवाह विशेष करके वर्जित है. और दोनों में एक ज्येष्ठ होय तो ज्येष्ठ में विवाह का दोष नहीं है कारण तीन ज्येष्ठ एकत्र न होना चाहिये ॥ १२२ ॥

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहे ज्येचशुभप्रदः ॥ १२३ ॥

टीका—सिंहस्थ बृहस्पति में विवाह न करना चाहिये केवल मेषके सूर्य में करे तो सिंहका गुरु भी शुभ फलदायक है ॥ १२३ ॥

रवौसार्धत्रयोभागाः पञ्चच न्द्रेगुरौत्रयः। द्वन्द्वेशुक्रेंदुपुत्रेस्या द्विश्वाभागप्रदायकाः ॥ १२४ ॥ प्रत्येकंसार्धभागाश्च मन्दमंगल राहुषु। ग्रहाबलयुताविश्वाप्रय च्छन्ति नदुर्बलाः ॥ १२५ ॥

टीका—सूर्य ३॥ भाग, चन्द्रमा ५ भाग, गुरु के ३ भाग, बुधके २ भाग, और शनि, मंगल, राहु,केतु इन ग्रहों को डेढ डेढ भाग रूप विश्वा देते हैं. जौलौं ये बलिष्ठ रहैं तौलौं विश्वा देते हैं. दुर्बल होनेसे नहीं देते ॥ १२५ ॥

केंद्रसप्तमहीनेच द्वित्रिकोणेषु भाऽशुभाः। धनेशुभप्रदश्चन्द्रः

पापाः षष्ठेचशोभनाः ॥ १२६ ॥ तृ
तायैकादशेसर्वेसौम्याःपापाःशुभ
प्रदाः। ते सर्वे सप्तमस्थानेमृत्युदा
वरकन्यायोः ॥ १२७ ॥

टीका—केंद्रस्थान अर्थात् लग्न. चतुर्थ, सप्तम, दशम, इन स्थानों में शुभग्रह हों तो श्रेष्ठ हैं. अकेला सातवाँ स्थान अशुभ है. शुभग्रह करके शुक्र, बुध, बृहस्पति और शुक्ल दशमी से कृष्णपक्षकी ५ पर्यंतका चन्द्रमा बली होता है सूर्य, राहु शुक्ल २ से दशमी पर्यंतका चंद्रमा ये चार ग्रह जानिये, भौम, शनि, केतु कृष्ण पंचमी से ३० तक का चन्द्रमा ये पापग्रह हैं । लग्न से धन स्थान का चंद्रमा शुभ है. पापग्रह लग्न से ३ । ६ स्थान के शुभ हैं और ३। ११ स्थान के सर्व ग्रह शुभ हैं. और सौम्य क्रूर पापग्रह, ७ स्थान में नेष्ट हैं ॥ १२७ ॥

शनिःसूर्यश्चलग्नेसतेचन्द्रोल-
ग्नेऽष्टमेरिपौ । कुजो लग्नेष्टऽमे

चास्ते शुक्रोद्यूनेऽष्टमेरिपौ॥१२८॥ गुरुर्मर्त्यौसैंहिकेयो लग्नेतुर्य्येच सप्तमे। बुधोऽष्टमेचयामित्रे विवाहः प्राणनाशकः॥१२९॥ क्रूरयोरन्तरं लग्नं चन्द्रं चपरिवर्ज्जयेत्। वरंहन्तिध्रुवंलग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम्॥१३०॥

टीका–यदि शनि, सूर्य लग्न में और सातवें हों और चन्द्रमा १।६।८, और भौम १।८। ७, और शुक्र ७।८।६ बृहस्पति ८ राहु १।७। ४ र बुध ८।७ ये ग्रह उक्त स्थानों में हों, तो विवाह प्राण नाशक होता है. और क्रूर ग्रह के मध्य चन्द्रमा होय अथवा लग्न होय तो वर्जित करे, ऐसा लग्न वर का, और चन्द्रमा कन्या का नाश करता है॥

तुलाचमिथुनंकन्या पूर्वार्द्धौ

धनुषो वृषः । एते लग्नाः शुभा नित्या मध्यमाश्चापरे स्मृताः १३१

टीका—तुला, मिथुन, कन्या, वृष तथा धन का पूर्वार्द्ध इतने लग्न शुभ हैं. और लग्न मध्यम हैं

लत्तामालवकेदेशे पातश्चकुरुजांगले । एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ १३२ ॥

टीका—लत्तादोष मालवदेश में, एकार्गल दोष काश्मीर देशमें और वेधदोष सर्व देश में वर्जित है ॥ १३२ ॥

मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः । मिथुने च तुलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः ॥ १३३ ॥ मेषाद्यौ च धनुः सिंहौ गोकन्यामकरादिकौ । तुलाद्यौ युग्मकुम्भौ च क

कौघौमीनवृश्चिकौ ॥ १३४ ॥ गो तुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभ दाःस्मृताः । धनुषः प्रथमोभागो विवाहेऽन्येचमध्यमाः ॥ १३५ ॥

टीका—मेष आदि बारह राशियों के नवांशक कहते हैं लग्नके नव भागको नवांशक कहते हैं. लग्न १ नक्षत्र २ नवांशकका भोग करते हैं. सो मेष, सिंह, धन इन तीनों का पहिले नवांश में मेष से नव पर्यंत गिनिये, और वृष, कन्या, मकर इन तीनों का नवांश मकर आदि कन्या पर्यंत। और मिथुन, तुला, कुम्भ इन तीनों का नवांश तुला आदि मिथुन पर्यन्त गिनिये और कर्क आदि मीनपर्यंत गिनिये, वृष तुला, मिथुन, कन्या इनका नवांश शुभ है और धनका पहिला शुभ अशुभ मिश्रित है। और नवांश जो हैं सो विवाह में मध्यम हैं ॥ १३५ ॥

अंशस्यपतिरंशेच तन्मित्रंवाशुभोपिवा। पश्यतेवाशुभोज्ञेयः सर्वे दोषाश्चनिष्फलाः ॥ १३६ ॥

टीका—अंशका पति नवांशका स्वामी, सो अपने नवांशक में हो अथवा इसका मित्र वा और शुभग्रह देखते होयँ तो शुभफल करै और दोषन को निष्फल करै ॥ १३६ ॥

शुक्लाष्टमीसमारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्। पूर्णिमामवधिंकृत्वा त्याज्यंहोलाष्टकंबुधैः ॥ १३७ ॥ शतुद्र्यांचविपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे। होलाष्टकंविवाहादौ त्याज्यमन्यत्रशोभनम् ॥ १४८ ॥

टीका-फाल्गुनके शुक्लपक्षकी अष्टमी से पूर्णिमातक होलाष्टक होता है सो शुतुद्री के, विपाशा नदीके, इरावती नदी के तीरस्थ देशों में और त्रिपुष्कर में विवाहादिक उत्तम कार्य वर्जित हैं और अन्यत्र शुभ हैं ॥ १३८ ॥

दिनेमदान्धावृषमेषसिंहा रात्रौचकन्यामिथुनंकुलीरः । मृग-

स्तुलालिर्बधिरोपराह्णे सन्ध्यासु कुब्जाघटधन्विमीनाः ॥ १३९ ॥

टीका—वृष, मेष, सिंह, दिनमें अन्ध लग्न हैं, कन्या, मिथुन, कर्क, रात्रि में, मकर,तुला, वृश्चिक, अपराह्ण में बधिर हैं, कुम्भ, मीन संध्या समय ये लग्न कुबरे हैं ॥ १३९ ॥

दिवांधोवरहन्ताचरात्र्यंधोधननाशकः। दुःखदोबधिरोलग्नःकुब्जोवंशविनाशकः ॥ १४० ॥

टीका-दिनान्ध लग्नमें विवाह होय तो वर की हानि होय; रात्रि के अन्ध लग्न में होय तो धनका नाश करे, और बहरे लग्न में पाणिग्रहण होय तो दुःखदायक है और कुबरे लग्न में विवाह होय तो वंशनाश करे ॥ १४० ॥

यत्रचैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः। गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषाधूलिमुखाःस्मृताः ॥ १४१ ॥

टीका—जो ग्यारह वें स्थानमें चन्द्रमा हो अथवा दूसरे तीसरे हो सो गोधूलिक है, और स्थान में चन्द्र होनेसे धूलीमुख कहते हैं ॥१४१॥

कुलिकःक्रांतिसाम्यंचलग्नेषष्ठाष्टमेशाशी । तदागोधूलिकस्त्याज्यःपञ्चदोषैश्चदूषितः॥१४२॥

टीका—कुलिक और क्रांतिसाम्य और लग्न में, छठे, और आठवें चन्द्रमा हो तो गोधूलिक लग्न में विवाह नहीं करना. क्योंकि वह लग्न पांच दोषों से दूषित है ॥ १४२ ॥

यद्दानास्तंगतोभानुर्गोधूल्यापूरितंदभः। सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्चप्रशस्यते ॥ १४३ ॥

टीका—सुर्य अस्त न होय और गौ खुरन की धूर आकाश में पूरित होरही हो तो यह घटी सकल उत्तम कार्य में मंगल दाता है तिसको गोधूलि कहते हैं ॥ १४३ ॥

अष्टमेजीवभौमौच बुधोवाभा
र्गवोऽष्टमे। लग्नेषष्ठाष्टमेचन्द्रस्त
द्गोधूलिनाशकः ॥ १४४ ॥

टीका—जो लग्नसे आठवें स्थानमें भौम, गुरु, बुध, शुक्र ये ग्रह होंय, अथवा लग्न में वा छठे आठवें चन्द्रमा हो तो वह गोधूलि नाशक दोष है ॥

लग्नादेकादशेसर्वे लग्नपुष्टिक
राग्रहाः । तृतीयेचाष्टमेसूर्यःसूर्य
पुत्रश्च शोभनः ॥ १४५॥ चन्द्रोध
नेतृतीयेचकुजःषष्ठेतृतीयके। बुधे
ज्यौनवषड्द्वित्रिचतुः पञ्चदशे
स्थितौ ॥ १४६ ॥ शुक्रोद्वित्रिचतुः
पञ्च धर्मकर्मतनुस्थः । राहु
र्दशाष्टषट्पंचत्रिनवद्वादशेशुभः

टीका—लग्न से ग्यारहें स्थान के सर्व ग्रह

शुभ हैं और ३ सूर्य, और ८ शनि और चंद्रमा २ । ३, और भौम ३ । ६ और बुध, बृहस्पति ९ । ६ । १ । ३ । ४ । ५ । १० और शुक्र २ ।३ ।४ ।५ ।९। १० । ? इन स्थानों में शुभ हैं, और राहु केतु ये १० । ८ । ६ । ५ । ३ । ९ । १२ इतने स्थान में शुभ फलदायक हैं ॥

छायापादैरसोपेतैरेकविंशशतं भजेत् । लब्धांकेघटिका ज्ञेयाः शेषांकेचपलाः स्मृताः ॥ १४८ ॥

टीका-दिन नापना कहते हैं, अपनी छाया अपने पावँ से नापिये. जै पाँव छाया हो उसमें ६ और मिलावे, फिर एकसौ इक्कीस में १२१ तिनको भाग दीजै जो भाग आवे सो घडी दिन जानै जो चढता होय तो चढता दिन जाने और जो उतरता होय तो बाकी दिन रहा जाने भाग देनेसे शेष बचे तिन्हे साठ गुना करके भाग प्रमाण अङ्कनपर फैलायके पल कर लीजै, सोई पल जानिये ॥ १४८ ॥

पूर्वाषाढानुराधाच ज्येष्ठापूर्वे

षाचरेवती। विशाखाचयदामू
र्ध्निर्तदास्यादष्टमोदयः ॥ १४९ ॥
सूर्यभान्मौलिभंगण्यं सप्तहीनंच
शेषकम्। द्विगुणंच द्विहीनंचगता
रात्रि स्फुटाभवेत् ॥ १५० ॥ मस्त
केमृगशीर्षंच मूलेचनवमोदयः।
अन्यदृक्षंयदामूर्ध्नि तदास्याद
ष्टमोदयः ॥ १५१ ॥

टीका–अब गत रात्रि निर्णय. पूर्वाषाढा, अनुराधा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती. विशाखा इन नक्षत्रों में कोई नक्षत्र माथेपर हो तो आठवें नक्षत्रपर उदय जानिये और जो नक्षत्रका सुर्य्य होय तिससे जो नक्षत्र शिर पर होय उसको गिन ले तब सातका भाग दे शेष बचे को न्यून कीजै तिन में दो और घटा वे. जो रात्रि गत वा भोग्य जानिये. और मृगशिर वा मूल माथे पर होय तो नवें नक्षत्र का उदय जानिये. और जो अन्य नक्षत्र माथे पर हों तो आठवें नक्षत्रका उदय कहिये

किंकुर्वन्तिग्रहाःसर्वे यस्यकेन्द्रे बृहस्पतिः। मत्तमातंगयूथानां शतं हन्ति चकेसरी॥ १५२॥

टीका-जो केन्द्र में (१।४।७।१०)बृहस्पति अकेले हो और सब ग्रह अनिष्टकारक होंय तो कुछ नहीं करसकते। जैसे अकेला सिंह सैकड़ों हाथियों के समूह का नाश करता है॥ १५२॥

शुक्रोदशसहस्राणि बुधोदशश तानिच। लक्षमेकंतुदोषाणां गुरु र्लग्नेव्यपोहति॥ १५३॥

टीका--जो लग्न में शुक्र होय तो दसहजार दोष को, और बुध हजार और गुरु लक्ष दोषों को दूर करता है॥ १५३॥

सर्पाकारंलिखेच्चक्रं विवाहेच त्रिनाडिकम्। अश्विनीप्रमुखं भंच दत्त्वासाम्यंविचारयेत् १५४

एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम्। सेवायां चभवेद्धानिर्विवाहेत्वशुभं भवेत् ॥ १५३ ॥

टीका-सर्पाकार चक्र लिखकर त्रिनाडी करके अश्विनीप्रमुख ३ नक्षत्र एक नाडी में देवे ऐसे ९ ठिकाने मुखसे लेकर पुच्छतक सत्ताईस नक्षत्र रखे एक नाडी में विवाह लग्नका नक्षत्र आवे तो अशुभ होय सेवा में (चाकरी करने में) हानि होय ॥ १५५ ॥

परिघार्धंव्यतीपातं वैधृतिंसकलंत्यजेत्। विष्कम्भे घटिकाःपञ्च शूलेसप्तप्रकीर्त्तिताः ॥ १५६ ॥ षड् गण्डेचाति गण्डेच्चनवव्याघातवज्रयोः। एतेतुनवयोगाश्चवर्ज्या लग्नेसदाबुधैः ॥ १५७ ॥

टीका-परिघकी ३० घटी, व्यतीपात और वैधृति

शम्पूर्ण त्याग करे, विष्कम्भ की ५ घड़ी शूलकी ७ और गण्ड तथा अतिगण्डकी ६, व्याघात की ८ वज्रकी ९ ये शुभ कार्य में नवयोग वर्जित हैं ॥

व्यतीपाते भवेन्मृत्युर्गण्डान्ते मरणंध्रुवम् । अग्निदग्धोभवेद्व ज्रे रुजश्चैवापिगण्डके ॥ १५८ ॥ वैधव्यंवैधृतौचैव विष्कम्भे काम चारिणी । वीर्यहीनातिगण्डेच व्याघातेमृतवत्सका । परिघेचभ वेद्दासीमद्यमांसरतसदा ॥ १५९ ॥

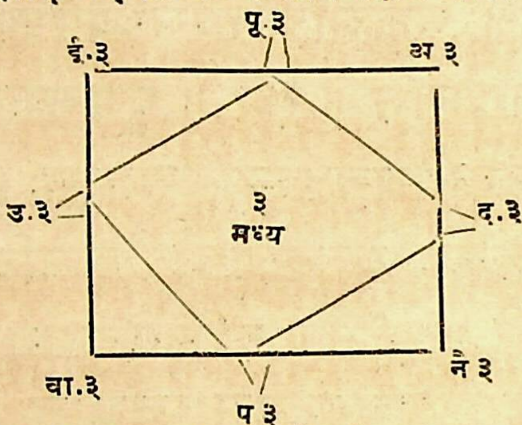
टीका—व्यतीपात में विवाह करे तो मृत्यु होय। गण्डान्तमें करे तो निश्चय करके मृत्यु करे वज्र में आग लगे, गण्ड में रोगी, वैधृति में वैधव्य, विष्कम्भमें कामातुर, अतिगण्ड में धातुक्षय, व्याघात में मृतवत्सा, परिघ में पराई दासी होय और मांस मदिरादिक का सेवन करे ॥ १५९ ॥

पट्टाकारं लिखेच्चक्रमष्टकोणस

मन्वितम् । यस्मिन्नृक्षेभवेत्सूर्य
स्तदाद्यंमध्यगंत्रयम् ॥१६०॥ त्रय
स्त्रयश्चसर्वत्रततःपूर्वादितोलि
खेत् । नक्षत्रत्रितयेमध्येपक्षद्वय
विनाशनम् ॥ १६१ ॥ पूर्वस्थानेभ
वेल्लक्ष्मीर्धनधान्यसमागमः । अ
ग्निकोणेभवेन्मृत्युर्नारीकुलविना
शिनी ॥ १६२ ॥ दक्षिणेदुर्भगाना
री दारिद्र्यंमृत्युमाप्नुयात् । न
ऋत्येपुत्रलाभश्च सुखंसौभाग्य
मेवच ॥ १६३ ॥ पश्चिमेविधवाक
न्या वायव्येव्यभिचारिणी । उत्तरे
धनधान्यानि चैशाने सुखसम्पदः
॥१६४॥ मांगल्यंसर्वकार्येषुपट्टचक्रं

विचारयेत् । गर्गाचार्येण संप्रोक्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ १६५ ॥

टीका-पट्टचक्रके सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्रतक गिनिये पुनः मध्यके कोष्ट में ३ धरिये ऐसे क्रम से पूर्वादि दिशा में ३ तीन नक्षत्र आठों दिशा



ओं में रखे जिस दिशा में दिनका नक्षत्र पडे उसका फल कहे पूर्व होय तो लक्ष्मी धन धान्य होय अग्नि में मृत्यु, कुलविनाश, दक्षिण में दुर्भगा स्त्री, दारिद्य, मृत्यु, नैऋत्य में पुत्रलाभ, सौभाग्य, सुख,पश्चिम में वैधव्य होय वायव्य, में व्याभिचारिणी, उत्तरमेंधन, धान्य, सुख । ईशान्य में सुख सम्पदा ॥ १६५॥ इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्यकृतौ शीघ्रबोधे विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

श्रीः ॥

अथ द्वितीयप्रकरणम् ।

द्विरागमनमुहूर्त्त.

धातृयुग्मंहयोर्मैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम् । पुनर्मसुद्वयंपूषा मूलंचाप्युत्तरात्रयम् ॥ १ ॥ विषमे वत्सरेमासे मार्गेमेषेचफाल्गुने । मकरेमिथुनेमीने लग्ने कन्यातुला धनुः ॥२॥ भौमार्कवर्जितावारा गृह्यन्तेचद्विरागमे । षष्ठीरिक्ताद्वादशीचअमावास्याश्च वर्जिताः॥३॥

टीका–रोहिणी, मृग. अश्वि. अनु. श्र. ध. ह. चि. स्वा. पु.पु.पू. षा.मू. उत्तरात्रय इतने नक्षत्र द्विरागमनको श्रेष्ठ हैं, और विवाह से विषम

वर्ष श्रेष्ठ है, अगहन, फाल्गुन, वैशाख ये मास ह. म. मि. मी. क. तु. ध. ये लग्न श्रेष्ठ हैं 'और मंगल शनिवार, षष्ठा द्वादशी अमावास्या रिक्तातिथि वर्जित हैं ॥ ३ ॥

आर्द्रात्रयंभाद्वयुग्मं मृगःपूषाश्रुतिःकरः॥मूलत्रयंगुरौसूर्ये भौमेरिक्तांविनातिथिः ॥ ४ ॥ आद्येद्वयेत्रयेमासे लग्नेकन्याझषेस्थिरे। चापेपुंसवनंकुर्यात्सीमन्तंचाष्टमे तथा ॥ ५ ॥ शुभैस्त्रिकोणकेन्द्रस्थे पापेषष्ठेत्रिलाभगे। पुत्रकामःस्त्रियंगच्छेन्नरोयुग्मासुरात्रिषु ॥ ६ ॥ पुनर्वसुद्वयेहस्तत्रयेमैत्रद्वयेमृगे। मूलोत्तराधनिष्ठासु द्वादशैकादशेदिने ॥ ७ ॥ अन्यत्रापिशुभेयोगे

वारेबुधशशांकयोः । भानोर्गुरोः
स्थिरेलग्ने बालनाम कृतं शुभम्
॥ ८ ॥ मैत्रत्रयेहरिद्वन्द्वे विधिद्व
न्द्वेऽदितिद्वये । स्वातिहस्तोत्त
राषाढा पूषार्यमद्वयेषुच ॥ ९ ॥
सिंहत्रयेघटेलग्ने मासयोस्त्रिच
तुर्थयोः। यात्रातिथौच निष्कास्यः
शिशुर्नैवार्कभौमयोः ॥ १० ॥

टीका—आर्द्रा पु.पु.पू.भा. मृ.रे.अ.ह.मू.पु.षा.
उ.षा.इननक्षत्रों में और र,मं.गु. वार सीमतोन्न-
यन करे। रिक्ता तिथि वर्जित हैं और पुंसवन कर्म
१।२।३।मास और ६। १३२।५।११।८ लग्न में करे
और सीमन्तोन्नयन अष्टममास में कीजै ॥५॥
जो त्रिकोण ५। ९, केन्द्र १।४।७। १० इनमें
सौम्य, और ३।६।११ इनमें पापग्रह हों तब
स्त्री प्रसंग करे तो सन्तान होय, परन्तु रात्रि-
अन्ध लग्न त्याज्य हैं। पु. पु. ह. चि.स्वा. अनु.

ज्ये. मू. मू. उ.ध.ये नक्षत्र और ११ । १२ । दिन. बु. चं. र. गु. वार और २ । ६ । ८ । ११ लग्नमें बालक का नाम करण करे ऽनु. ज्ये.मू श्र. ध. रो. मृ.पु.स्वा.हे.उ.षा.रे.पू.षा. अ. ये नक्षत्र और सिंह, कन्या, तुला, कुम्भ ये लग्न, तीसरे चौथे मासमें शुभतिथि में, और भौम, शनि वार त्यागके बालकको नक्षत्रदर्शन करावे ॥ ९ । १० ॥

आथरणीयन्त्र ।

आ.	पु.	पु.	पूभा.	उषा.	मू.	रे.	अ.
ह.	मू.	पूषा.	उषा.	न.	र.	वृ.	मं.
वार.	१	२	३	५	६	७	८
१०	११	१२	१३	ति.	१	२	३
मा.	६	२	५	८	११	९	१२

बालक नामकरणयंत्र ।

पु	पू.	ह.	वि.	स्वा.	ऽनु	ज्ये.	मू.	पू.
उ.३	ध.	न.	सू	चं.	बु.	वृ.	वा.	ह.
११	२	५	८	ल.	नामकरण			

पुनर्वसुद्वयंचित्राविशाखाभर णीद्वयम् । मूलमार्द्रामघाहेया श्रवणोदशमस्तथा ॥ ११ ॥ सोम शुक्रबुधा नारीप्रसूतास्नानकर्म णि । हेयाप्रतिपदाषष्ठीनवमीच तिथिक्षयम् ॥ १२ ॥

टीका—पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा वि. भ. कृ. मू. आ. म. श्र. ये दश नक्षत्र प्रसूतिस्नान को वर्जित हैं और सोम शुक्र बुध ये वार वर्जित हैं और १ । ६ । ९ । ३० । ये तिथि वर्जित हैं. इनमें प्रसूतिस्नान न करै ॥ ११ । १२ ॥

बालनिष्कासन यंत्र ।						
ऽनु.	ज्ये	मू.	श्र.	ध.	रो	०
मृ.	पु.	पु.	ह.	स्वा.	उ.	फा.
रे.	आ.	उ.	ऽनु	च.	पा.	०
३	८.	१३.	५.	१०	१५.	०
सि.	क.	तु.	ल,	ति.	थि.	०

हस्तादिपञ्चकेऽश्विन्यांधनि
ष्ठायांच रेवती।गुरौ शुक्रेबुधेवा
रेधार्यं स्त्रीभिर्नवांबरम् ॥ १३ ॥
लग्ने मीनेचकन्यायांमिथुनंचवृ
षः शुभः । पुष्येपुनर्वसुद्वंद्वेरोहि
ण्युत्तरभेषुच ॥ १४ ॥

टीका—ह. चि, स्वा. वि.अनु अश्विनी. ध.रे. पु: पु. रो. कृ. तीनों उत्तरा गुरु, शुक्र, बुध ये वार. मीन, कन्या, मिथुन, वृष ये लग्न स्त्री को नवीन वस्त्र धारण के लिये शुभ जानिये॥ १३॥

स्त्रीनवांबर,				पुरुषनवांबरमुहूर्त्तः					
ह.	चि.	स्वा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ऽनु	पु.	पु.
वि.	ऽनु	ज्ये.	अ	रो.	उ.३	ध.	रे.	बु	बृ.
मृ.	ऽश्वि	ध. रे.	शु	१२	६	३	२	४	९
बु.	शु.	बृ.	ति.	थि.	३	८	१३	५	१०
पू.	१२ ६	३ २	१५	ये	ति	थि	शु.	[illegible]	०

रोहिण्युत्तररेवत्योर्मूलं वात्य नुराधयोः । धनिष्ठाचत्रयः पूर्वा ज्येष्ठायांमृगशीर्षके ॥ १५ ॥ एते यत्नागताभानि प्रसूतिस्नानकोविदैः । वारेभौमार्कयोर्जीवेस्नानमुक्तंसदैवहि ॥ १६ ॥ मूलादितिद्वयंग्राह्यं श्रवणश्चमृगःकरः । जलवाप्यर्चनेहेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ॥ १७ ॥

स्त्रीप्रसूतिस्नान यन्त्र							
ऽश्वि.	रो.	मृ,	ऽश्ले	पु.	उ.	फा.	ह.
स्वा.	ऽनु	ज्ये.	पू.	उ.	फा.	ध.	श
पू.३	रे.	वार	सू.	चं.	बृ.	श.	ज.
३	४	५	७	८	१०	११	१२
१३	१४	१५	ये.	ति	थे	यः	०

टीका—रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, पूर्वात्रय, ज्येष्ठा, मृगशिर, ये चौदह नक्षत्र त्यागके बाकी के नक्षत्र और भौम, रवि, गुरु, ये वार प्रसूति स्नान को विशेष करके शुभ हैं. और मृ. पु. पु. अ. मृ. ह. ये नक्षत्र शुभ हैं शुक्र, शनि रवि, भौम ये वार छोड़कर बाकी प्रसूति को कूप अथवा जलाशय के पूजन में उत्तम हैं ॥ १७ ॥

नवान्नभोजनेग्राह्यं वस्त्रंप्रोक्तम शेषतः । वाराधिकौ सूर्यसोमौन क्षत्रंश्रवणोमृगः ॥ १८ ॥ आद्यान्न प्राशनेपूर्वासर्पार्द्रावरुणोयमः । नक्षत्राणिपरित्यज्यवारौ भौमा र्कनंदनौ ॥ १९ ॥ द्वादशीसप्तमीरि क्ता पर्वनंदास्तुवर्जिताः । लग्ने षुचझषो ग्राह्योवृषकन्याचमत्स

थः ॥ २० ॥ शुक्लपक्षेशुभेयोगेसंग्रा
ह्यः शुभचंद्रमाः । मासेषष्ठाष्टमे
पुंसांस्त्रियोमासिचपंचमे ॥ २१ ॥

टीका-नवीन अन्नका भोजन और नवीन वस्त्र धारण करने में शनि,रवि ये वार वर्जित हैं. और श्रवण मृगशिर नक्षत्र और रवि, सोम वार, वस्त्र के मुहुर्त्तविषे, नवान्न भोजन में अधिक हैं ॥१८॥ अब बालक को अन्न प्राशनके मुहुर्त्तविषे इतने नक्षत्र वर्जित हैं तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी अरु भौम. शनिवार अरु १।२ ७।४।९।१४।३० । १।६।११। तिथि और व्यतीपात योग ये सब वर्जित हैं. और मीन, वृष, मिथुन, कन्या ये लग्न शुभ हैं. अरु शुक्लपक्षविषे उत्तम शुभयोग में कीजे अरु शुभ चन्द्रमा होय अरु छठवां मास पुत्रके अन्नप्राशन में ग्राह्यहै, अरु कन्याको पांचवें मास में उक्त है ॥१९।२० ।२१॥

प्रथमान्नप्राशनमुहूर्त्तयन्त्र ।							
ऽश्वि	कृ.	रो.	मृ.	पु.	पु.	म.	उ.
ह.	चि	स्वा.	वि.	ऽनु	ज्ये	मू.	भा.
श्र.	ध.	उ.	रे.	न.	सू.	चं.	बु.
शु.	बृ.	वार	२	३	५	१०	१३
ति.	२	३	६	१२	ल.	शु.	उ.
या.	चं.	द्र.	पू.	र.	पूर.	वसं	६
८	मा	सा	स्त्रि.	य.	५	मा.	स.

पुनर्वसुद्वयंज्येष्ठामृगघ्नचश्रवणा द्वयम् । हस्तत्रयेचरेवत्यांशुक्लप क्षोत्तरायणे ॥ २२ ॥ लग्नंगोस्त्री धनुःकुंभोमकरो मन्मथस्तथा । सौम्येवारेशुभेयोगे चूडाकर्मस्मृ तं बुधैः॥ २३ ॥हस्तत्रयेहरिद्वंद्वे

पूर्वाश्वमृगपंचके। मूलेपौष्णेच नक्षत्रेबुधेऽर्कगुरुशुक्रयोः ॥ २४ ॥

टीका–पु.पु.ज्ये.मृ.अ.ध.हे. चि. स्वा.रे, ये नक्षत्र और शुक्लपक्ष, उत्तरायण, बृष, क. कुं. ध. म. मि. ये लग्न चंद्र, बुध, शुक्र ये वार सर्वांग श्रेष्ठ हैं जन्म मास रिक्ता ये मूड़न, भूषण धारण में वर्जित हैं ह.चि.स्वा.अ.पू. ३ मृ.आ.पु.पु.आश्ले. मू.रे.ये नक्षत्र रवि,बुध,गुरु शुक्र ये वार शुभ हैं।

चूडाकर्ममुहूर्तयंत्र.							
पु.	पु.	ज्ये.	मृ.	अ	५	ह.	०
चि.	स्वा	रे.	न.	शु.	क्ल	प.	क्षः
११	१२	१	२	३	रा.	शि.	चं.
बु.	बृ.	शु.	वा	र.	२	६	११
१०	३	ल	ग्न.	२	३	५	६
७	१०	१	१३	ति.	थि.	भ.	द्रा.
व्य.	ति	पा	त	व	र्ज्य	हैं.	०

देवोत्थानेमीनचापेलग्ने वर्षे चपंचमे । विद्यारंभोत्रवर्ज्यश्च पठनाध्यायरिक्तकाः ॥ २५ ॥ रिक्तायांचअमावस्यांप्रतिपच्च विवर्जयेत् । बुधेंदुवासरेमूर्खः शनिभौमोमृतिप्रदः ॥ २६ ॥ विद्यारंभेगुरुःश्रेष्ठोमध्यमौभृगुभास्करौ। बुधेंदूचोपविद्यायां शनिभौमौपरित्यज्येत् ॥ २७ ॥ पर्वाषाढाश्विनीहस्तत्रयेचश्रवणात्रये । ज्येष्ठाभगेमृगेपुष्येरेवत्यांचोत्तरायणे २८ द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यांदशमीत्रये । सूर्यशुक्रसुराचार्यैवारेपक्षेतथासिते ॥ २९ ॥ लग्नेवृषे

धनुःसिंहे कन्यामिथुनयोरपि।
व्रतबंधःशुभेयोगे ब्रह्मक्षत्रविशां
पतेः ॥ ३० ॥ पापोभौमःशनिःके
तुक्रूरोराहूरविस्तथा। सौम्यः सो
मोबुधश्चैवगुरुःशुक्रस्तथैवच ३१

टीका--देवोत्थान कहिये आषाढ़शुक्ल ११ से कार्त्ति कशुक्ल ११ तक, मीन धनु लग्न पांचवें वर्ष तांई षष्ठी, आमावस्या, पड़िवा, नौमी चौदस ये तिथि वर्जित हैं. और बुध, चंद्रवार में विद्या रंभ करै तो मूर्ख होय शनि, भौम को मृत्यु होय, विद्यारंभ में गुरुवार श्रेष्ठ है. शुक्र, रवि मध्यम हैं. बुध, सोम उपविद्या में प्रशस्त कहे हैं। शनि मंगल सर्वथा त्याज्य हैं॥ यज्ञोपवीत मुहुर्त पू.षा. अ. हस्त. चित्रा. स्वा. श्रव. शतभि. पूर्वफा. मृग. रेव. उत्तरायण सूर्य. २।३।५।१०।११।१२। तिथि रवि, शुक्र गुरुवार, शुक्लपक्ष और वृष, धनु, सिंह, कन्या, मिथुन लग्न शुभयोग ये व्रत-बन्ध में शुभ हैं इनमें ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य

तीनोंका कहाहै,बडेग्रन्थ में चारों वेदके ब्राह्मणों के मुहुर्त्त के जुदे जुदे भेद कहे हैं २८।२९।३०।३१

अथव्रतबंधमुहूर्तयंत्र.								
पू.	ऽश्वि	ह.	चि.	स्वा.	श्र.	ध.	श.	ज्ये.
भय	मृ.	पु.	रे	उ.	उ.	उ.	सू.	बु.
मे.	कुं.	सि.	वृ.	मी	उ	त्त	रा	थ.
२	३	.१।	१०	११	१२	ति.	शु	क्ल
प	क्षः	२	९	५	६	ल.	ग्न	शु.
वा	ह्म,	ण.	क्ष.	त्री	वै.	श्य.	शू.	द्र.

श्रुतित्रयेऽदितिद्वंद्वेमैत्रेहस्तत्रयोत्तरे। भगेविधियुगेमूलेपूषाश्वे सौम्यवासरे ॥३२॥ द्विस्वभावेघटेलग्नेकर्णवेधःप्रशस्यते ।चैत्रपौषौहरिस्वापंवर्षचयुगलंत्यजेत्३३

टीका— श्र.ध.श. पु.अ.उ. ३ पू.पु.रा.मृ.मू.रे. अश्विनि ये नक्षत्र और सौम्यवार शुभ है और मि.क.ध.मी.कुं. ये लग्न शुभ हैं. चैत्र, पौष और आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक और सम वर्ष त्याज्य हैं ॥ ३३ ॥

कर्णवेधमुहूर्त्तयन्त्र।							
स्वा.	उ.३	पूफा.	रो.	मृ.	मू.	रे.	अश्वि.
श्र.	ध.	श.	पु.	पु.	अ.	ह.	चि.
चं.	बु.	बृ.	शु.	वा.	३	२	१
१२	११	ल.	वै	शा.	ज्ये.	आ.	मा.
मृ.	फा.	मा.	१	३	५	७	व.

पूर्वाषाढादितिद्वंद्वंविधियुग्मं हरित्रयम्। उत्तराफाल्गुनीहस्त त्रयंमूलंचरेवती ॥ ३४ ॥ मैत्राश्वि नीचलग्नानिसिंहःकन्याघटोवृषः

मिथुनं मकरो ग्राह्यं वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥ ३५ ॥ श्रावणश्चाथवैशाखः कार्तिकः फाल्गुनस्तथा । मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तु कर्मणि शस्यते ॥ ३६ ॥ वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गंडकः। विष्कंभः परिघो वर्ज्यौ वारो भौमश्च भास्करः ॥ ३७ ॥

टीका—पूर्वाषाढा, पु.पु.रो.मृ.अ.ध.श.उ.फा.ह.चि.स्वा.मू.रे.अनु.अ.ये नक्षत्र सिं. क. कुं. वृ. मि. मकर. लग्न. श्रा. वै. का. फा. मार्गशीर्ष ये मास शुभहैं. व व्या. शू.व्य. गं. वि. प. ये योग, मङ्गल रवि ये वार छोडकर सब वस्तु कर्म में प्रशस्त है

वास्तुकर्ममुहूर्तयंत्र							
पू.	पु.	पु.	मृ.	श्र.	ध.	श.	रो.
उ.	ह.	चि.	स्वा.	मू.	रे.	ऽनु	ऽश्वि.
न.	५.	६.	११.	२.	३.	१०	ल.
श्रा.	वै	का.	फा.	मृ	मा	मी.	ओ.
गौ.	गो.	ऽति.	शु.	धृ.	श.	श.	म.
वि.	शि.	स	स	श.	ध.	ऐ.	वै.

आर्द्राशतभिषाऽऽश्लेषाविशाखाभरणीद्वयम्। त्याज्यौचद्वादशीरिक्ताषष्ठीचंद्रक्षयोऽष्टमी॥३८॥ प्रतिपच्चतिथिर्वारौत्याज्यौ शनिकुजौतथा। देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरेलग्नोत्तरायणे॥३९॥ विशाखाभरणी हेयाश्लेषाख्याचमघा

तथा। अमावास्याचरिक्ताचवा रेभौमेरवौतथा ॥ ४३ ॥ गृहप्रवेशोवैशाखेश्रावणेफाल्गुनेतथा। आश्विनेचस्थिरेलग्ने ग्राह्यःपक्षो बुधैः सितः ॥ ४१ ॥

टीका—अब वापी कूप तड़ाग बाग देव प्रतिष्ठा गृहप्रवेशका मुहुर्त। आर्द्रा, शततारका, आश्लेषा. वि. भ. कृ. ये नक्षत्र, १२, ४। ९। १४ ३०। ६। ८। १। ये तिथि शनि भौम वार ये सब त्याज्य हैं. और वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ, उत्तरायण, का सूर्य इनमें उक्तकार्य करे वि. भ. श्ले. में नक्षत्र, ३०। ४। ९। १४ ये तिथि, भौम रवि वार ये सब गृहप्रवेश में वर्जित हैं वैशाख, फाल्गुन. श्रावण, आश्विन, वृष, सिंह, वृश्चिक कुम्भ ये स्थिर लग्न और शुक्लपक्ष इनमें गृह प्रवेश उत्तम है॥ ४१ ॥

देवालय यन्त्र।

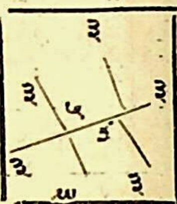
अ.	रो.	मृ.	पु.	पु.	म.	पू	उ.
ह.	चि.	स्वा.	ऽनु	ज्ये	मू.	उ.	पू.
श्र.	ध.	पू.	उ.	रे.	स.	३	२
५	७.	१०	११	१३	ति	सू	चं.
बु.	बृ.	शु.	वा.	२	५	८	११ ल

गृहप्रवेश यन्त्र।

अ.	रो.	मृ.	अ.	पु.	पु.	उ.	ह.
चि.	स्वा	अ.	ज्ये	मू.	श्र.	श्र.	श
रे.	न.	चं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वा.
वै.	श्रा.	पौ.	मा	फा.	ज्ये	मा	स.
२	५	८	११	ये.	ल	ग्न	मू.

अनुराधाचतुष्कंचमघादिति युगेकरे। स्वातिश्रुतिविधिद्वंद्वे रेवत्यामुत्तरात्रयम्।.४२॥ गोस्त्री

ऋषेहलंकार्यंहेयःसूर्यःशनिःकुजः। षष्ठीरिक्ताद्वादशीचद्वितीयाद्वय पर्वच॥४३॥ त्रिभिस्त्रिभि स्त्रिभिः पंचत्रिभिः पंच त्रिभिर्द्वयम् । सूर्यभाद्दि नभंयावद्धानिवृद्धिर्हलेक्रमात् ४४



टीका—अनुरा. ज्ये. मू. पू. षा. म. पु. पु. ह. स्वा. श्र. रो. मृ. रे. उत्तरात्रय ये नक्षत्र हलकर्म को शुभ हैं. वृष, मी. क. ये लग्न और रवि, शनि, मङ्गलवार, ६ । ४ । १४ । ९ । १२ । २ । १२ ३० तिथि । व्यतीपात योग त्याज्य हैं। और सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने सो क्रमसे हलचक्रमें समझ लेना प्रथम हानि फिर वृद्धि फिर हानि फिर वृद्धि इस प्रकार से जानना ४४

हलचक्र।

श.	ज्ये.	मू	पू.	म.	पु.	पु.	ह.
स्वा.	अ.	रो	मृ.	उ.३	रे.	न.	०
२	६	१२	ल.	र.	चं.	बु	वृ
शु.	आ	१	५	७	१०	११	ति
३	३	३	५	३	५	३	३
हा	वृ.	हा.	वृ.	हा	वृ.	हा.	वृ

अनुराधात्रयंहस्तमृगाश्वौच दितिद्वयम्। यात्रायांरेवतीश्च स्ता निंद्याद्राभरणीद्वयम् ॥४५॥ मघोत्तराविशाखाच सर्पश्चान्ये चमध्यमाः। षष्ठीरिक्ताद्वादशीच पर्वाणिचविवर्जयेत् ॥४६॥ लग्ने कन्यामन्मथश्च मकरश्चतुला धरः। यात्राचंद्रबलेकार्या शकुनं

चविचारयेत् ॥ ४७ ॥ शनौचंद्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणांचदिशं गुरौ। सूर्यशुक्रेपश्चिमांच बुधेभौमेतथो त्तराम् ॥ ४८ ॥

टीका—अनु. ज्ये. ह. मृ. अ. पु. रे. ये नक्षत्र शुभ हैं।४।६।९।१२।१४।३०।१५।तिथि और व्यतीपात वर्जित हैं। कन्या मि. तु. मकर ये लग्न शुभ हैं। और चन्द्र बल शकुन विचार कर यात्रा करे। अथ दिक्शूलम् शनि सोम को पूर्व में गमन न करे गुरु दक्षिण, रवि, शुक्र पश्चिम मंगल, बुध उत्तर को इस प्रकार जानिये ॥४८॥

सर्वदिग्गमनेहस्तः पूषाश्वौश्र वणोमृगः। सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायांचगुरुर्यथा ॥ ४९॥ प्रति पत्सुनवम्यांचपूर्वस्यांदिशियोगि नी। अग्निकोणेतृतीयायामेकाद

श्यांतुसास्मृता ॥५०॥ त्रयोदश्यां च
पंचम्यां दक्षिणस्यांशिवप्रिया।
द्वादश्यांचचतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यको
णगामिनी ॥ ५१ ॥ चतुर्दश्यांचष
ष्ठ्यांच पश्चिमायांचयोगिनी।
पूर्णिमायांचसप्तम्यां वायुकोणेतु
पार्वती ॥ ५२ ॥ दशम्यांचद्विती
यायामुत्तरस्यांशिवावसेत्। ईशा
न्यांदर्शेचाष्टम्यां योगिनीसमुदा
हता ॥ ५३ ॥ योगिनीसुखदा वा
मेपृष्ठेवांछितदायिनी। दक्षिणे

धनहंत्रीचसम्मुखे मरणप्रदा ॥ ५४ ॥ मासस्यप्रति पक्षे ष्ठा द्वितीया काम

ई.		पू.		अ.
	८।३०	१।९	३।११	
उ.	२।१०	योगि	५।१३	द.
	७।१५	६।१४	४।१२	
वा.		प.		नै.

कारिणी । आरोग्यदातृतीयाच चतुर्थीकलहप्रदा ॥ ५५ ॥ पंचमीचश्रियायुक्ताषष्ठीकलहकारिणी। भक्ष्यपानसमायुक्तासप्तमी सुखदा मुदा॥ ५६ ॥ अष्टमीव्याधिदा नित्यंनवमी मृत्युदास्मृता । दशमी भूरिलाभास्याच्चैकादशीचहेमदा ॥ ५७ ॥ द्वादशीप्राणसंदेहा सर्वसिद्धात्रयोदशी । शुक्लावा यदि वाकृष्णावर्जनीयाचतुर्दशी ॥५८॥

पौर्णिमायाममायांच प्रस्थानंनै वकारायेत् । तिथिक्षयेच मासां तोग्रहणांतेदिनत्रयम् ॥ ५९॥

टीका—अब सर्वदिशाओं की यात्राके नक्षत्र और सर्व दिग्द्वार कहते हैं ह. रे. अ. श्र. मृ. पु. ये नक्षत्र सर्व शुभ है. और पुष्य आधिक सिद्धि-प्रद है, जैसे विद्या में बृहस्पति प्रतिपदा नवमी को योगिनी का वास पूर्वमें है, अग्नि कोण में ३ । ११ , दक्षिण में ५ । १३, नैऋत में १२ । ४ । पश्चिम में १४ । ६, वायव्य में १५ । ७ उत्तर में १० । २.ईशान में ३० । ८ को योगिनी का वास रहता है, यात्रा में बाँये योगिनी सुखप्रद है, पीछे वाञ्छाप्रद है, दाहिने हानिप्रद, और सम्मुख मृत्युप्रद है । मासारंभ में १ श्रेष्ठ है, २ काम करिणी, ३ आरोग्यप्रद, ४ कलहप्रद, ५ श्रीप्रद ६ कलहप्रिय. ७ भोजन प्रद, ८ व्याधि प्रद, ९ मृत्युप्रद, १० लाभप्रद, ११ सुवर्णप्रद है१२ द्वादशी प्राणसंदेह कारिणी है, १३सर्वसिद्धिप्रदा पौर्णिमा, अमावास्या, मासांत, क्षयतिथि, ग्रहण के बाद

तीन दिन इनमें कदापि प्रस्थान न करे। और दोनों पक्षकी १४ अमावास्या त्याज्य है ॥ ५९ ॥

अथदिवसेपूर्वादिवासचतुर्थघटिकाराहुचक्रम्.								
पूर्व	वा	द.	ई.	प.	आ	उ.	नै.	दिशा
३॥। यावत्	७॥ य.	११। या.	१५ या.	१८॥। या	२२॥ या.	२६। या.	३० या.	०घटीउपरां ३॥ यावत्

अथरात्रौचतुर्थघटिकाराहुविभागचक्रम्.								
पूर्व	वा.	द.	ई.	प.	आ.	उ.	नै.	दिशा
३३॥। यावत्	३७॥ या.	४१। या.	४५ या	४८॥। या.	५२॥ या.	५६। या.	६० या	३०घटीउपर ३॥। यावत्

अष्टसुप्रहरार्द्धेषुप्रथमाद्योष्टवह र्निशम् । पूर्वस्यांवामतोराहुस्तु र्यांतुर्यदिशंव्रजेत् ॥ ६० ॥ राहुःप्रा च्यांततो वायुर्दक्षिणेशानपश्चि मे । अग्नावुत्तरनैर्ऋत्येप्रहरार्द्धे चतिष्ठति ॥ ६१ ॥ जयश्चदक्षिणे

राहुर्योगिनीवामतःशुभा । पृष्ठ
तोद्वयमाख्यातं चंद्रमाःसंमुखःशु
भः ॥ ६२ ॥ चंद्रश्च रतिपूर्वादिक्र
मेणादिक्चतुष्टयम् । मेषादिके
षुयात्रायांसंमुखेदक्षिणेशुभः॥६३॥
मेषेचसिंहेधनुपूर्वभागे वृषेचक
न्यामकरेचयाम्ये । युग्मेतुलाकुंभ
सुपश्चिमायांकर्कालिमीनेदक्षि
णोत्तरस्याम् ॥ ६४ ॥

टीका—अब राहु की चौघटी, या आठोंदि
दिशामेंराहु जिस प्रकार दिन रात्रि में चलता
है सो चक्र में देख लेना ॥ ६० ॥ यात्रा में राहु
दक्षिण भाग में शुभ है, योगिनी बाँये शुभ
है, और पीछे दोनों शुभ हैं, चन्द्रमा सन्मुख
वा दक्षिण शुभ है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ अब चन्द्रमा
जिस प्रकार चारो दिशाओं में चलता है सो

कहहते हैं मेषादि सर्व्व राशियोंकोयात्राके समय संमुख और दहिनाचंद्रमा सदैव शुभ है ॥ ६३ ॥मेष, सिंह धनका चन्द्रमा पूर्व में रहता है, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में, कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर में, ऐसे चारों दिशाओं में चन्द्रमा का वास रहता है ॥ ६४ ॥

ई.		पू		आ.
उ.	ई.	सू. मे१सिं	२अ.	
	४।८ वृ.उ	०	वृ२क व६	द.
	वा.	मा३त ७व	नै.	
वा		प.		नै.

सम्मुखेत्वर्थलाभायपृष्ठेचंद्रे धन क्षयः । दक्षिणेसुखसंपत्तिर्वामेतु मरणंभवेत् ॥ ६५ ॥

टीका--सम्मुख चंद्रमा हो तो अर्थलाभ होय, पीछे हो तो धनहानि करै, दहिने धन सम्पत्ति करै,वाम भाग में चन्द्रमा हो तो मरण करै ॥६७॥

यामयुग्मेचरात्रौचवासेपूर्वा दिगोरविः । यात्रास्मिन्दक्षिणे वामेप्रवेशेपृष्ठकेद्वयम् ॥ ६६ ॥

टीका--पिछली पहर रात्री से १ पहर दिन चढे तक सूर्य पूर्व में बसे है,फिर २ पंहर दक्षिण में फिर प्रहरदिन से १ प्रहररात्रि तक पश्चिम में, फिर २ प्रहर आगे उत्तरमें, सो यात्रा विषे दहिने बाँये शुभ है, प्रवेशमें सम्मुख और पीछे शुभ है॥ ६६॥

मनुभानुदिशासर्परसवेदाश्विनः क्रमात्। रविवारान्मुहूर्तोयं कुलिकोनिंदितःशुभे॥ ६७॥ गता नाड्योद्विगुणिताः पंचभिश्चविभाजिताः। शेषंत्याज्यंयुतश्चैकः सप्तशेषेप्रशंसितम्॥ ६८॥ कालहोरेतिविख्यातं सौम्येसौम्यफलप्रदा। सूर्यशुक्रबुधाश्चंद्रोमंदजीवकुजाःक्रमात्॥ ६९॥ योवारो यत्रदिवसेतदादिगणयेत्क्रमात्।

शुभग्रहस्य सुखदो मुहूर्तोऽनिष्ट दुःखदः ॥ ७० ॥

टीका--अथ कुलिक योग कहते हैं रविवार को १४ हो मुहुर्त कुलिक है, सोमको १२, भौम को ८. गुरुको ६, शुक्रको ४, शनिको २ सो शुभ कार्य में कुलिकयोग वार्जित है ॥ ६७ ॥ रविवार में सातोवार भोग करे सो कालहोरा कहिये, उदाहरण, सुर्य्योदय से गतघटी द्विगुणित कर पांचका भाग दे, तिसमें बचे शेष को घटा के एक बढाय दीजै, फिर सातका भाग दीजे, शेष बचे सो होरादिवस कहिये १ बचे तो रवि २ चन्द्र, ३ मंगल, ४ बुध, ५ गुरु, ६ शुक्र, ७शनि सो क्रमसे शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु, मंगल इस प्रकार ह रा दिवस प्रथम लीजै, सुर्य्य से गिनिये २ घटी ३० पल प्रथम दिनको५। ०दुसरे, ७। ३० तीसरे, १०। ० चौथे,१२। ३०पांचवे १५ ० छः १७। ३० सातवां ॥ ६८ ॥

तिथिवारंचनक्षत्रंनामाक्षरस मन्वितम् । द्वित्रिघचतुर्भिर्गुणि

तंरससप्ताष्टभाजितम्॥७१॥आदि
शून्येभवेद्धानिर्मध्यशून्येरिपोर्भय
म्।अंत्यशून्येभवेन्मृत्युःसर्वाकेवि
जयीभवेत्॥ ७२ ॥ शशिप्रवाहेग
मनादिशस्तंसूर्यप्रवाहेनहिकिंच
नापि।अष्टुजयःस्याद्बहुमानभागे
रिक्तेचभागेविफलंसमस्तम्॥७३॥
दक्षिणे दुःखदःशुक्रःसन्मुखेहंति
लोचनम्।वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोध
येच्चास्तगःशुभम् ॥ ७४॥ पुष्यंभा
द्रपदायुग्मंमैत्रश्रवणमश्विनी ।
हस्तोत्तरामृगस्वाती तथाश्लेषा
चरेवती ॥ ७५ ॥ ग्राह्याणिभानि
चैतानि क्रयविक्रयणेबुधैः। चंद्र

भार्गवजीवाभ्रचवाराः शकुनमुत्तमम् ॥ ७६ ॥

टीका--तिथि, वार नक्षत्र और नामके अक्षर सब जोड़के पिंड कीजै तिसको दूना कर ६ का भागदे फिर उस पिण्डको चौगुना कर आठ का भाग दे, जो प्रथम शून्य आवै तो हानि होय मध्य शून्य में शत्रुभय अन्तशून्य में मृत्यु होय और जो तीनों में शेष अंक बचे तो विजय होय ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ जो चन्द्रस्वर (बायें) चले तो यात्रा कीजै, सूर्यस्वर (दाहिना) में अशुभ है यात्रा न कीजै, और गणक व पृच्छकका एक स्वर हो तो सर्व कार्य सिद्ध है । जो सुषुम्णा चले तो सर्वकार्य निष्फल होय ॥७३॥ जो यात्रा में शुक्र दहिना हो तो दुःख दे, सन्मुख नेत्रपीडा करे, बायें पीछे पडे ता शुभ है॥ ७४ ॥ पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, अनु, श्र. अश्विनी, हस्त. उत्तरात्रय. मृ.स्वा.ऽश्ले.रे. ये नक्षत्र क्रय विक्रय कार्य को शुभहैं ऐसा पंडितों ने कहा है और चन्द्र, शुक्र, बृहस्पति वार और शुभ शकुन देखके खरीदना वा बेचना ॥ ७६ ॥

धनिष्ठापंचकेत्याज्यस्तृणकाष्ठा
दिसंग्रहः। त्याज्यादक्षिणादिग्या
त्रागृहाणांछादनंतथा ॥ ७७ ॥ तै
लाभ्यंगेरवौतापः सोमेशोभाकुजे
मृतिः । बुधे धनं गुरौहानिःशुक्रे
दुःखंशनौसुखम् ॥७८॥ रवौपुष्पं
गुरौदूर्वाभौमवारेचमृत्तिका। गो
मयं शुक्रवारेचतैलाभ्यंगेनदोष
भाक् ॥ ७९ ॥ हस्तत्रयेब्रह्मयुगेम
घायांपुष्येधनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु ।
मूलानुराधाहयरेवतीच स्थिरेषु
लग्नेषुवधूप्रवेशः ॥ ८० ॥ आश्ले
षाद्वितयंस्वाती रोहिणीचपुनर्व
सुः । रोगीस्नानेरेवतीचवर्जयेद्

त्तरात्रयम् ॥ ८१ ॥ रिक्तातिथौच रेलग्ने वारेचरविभौमयोः। स्नानंचरोगिणांप्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ॥ ८२ ॥

टीका—धनिष्ठा से रेवती पर्यंत इन कार्य को न कीजै तृण काष्टादिसंचय, दक्षिणयात्रा, गृहछावना प्रेतदाह शय्याका वितरण ॥ ७७ ॥ रविवारको तैल लगावे तो ताप होय, चन्द्र को शोभा, मंगल को मृत्यु, बुधको धन, गुरुको हानि, शुक्रको दुःख, शनि को सुख होय ॥ ७८ ॥ और जो अवश्य लगाना होय तो रविको पुष्प, गुरु को दूर्वा, मंगल को मृत्तिका, शुक्रको गोबरसंयुक्त लगावे तो दोष न होय ॥ ७९ ॥ ह. चि. स्वा. रो. मृ. म. पुष्य. ध. श्र. उ. मू. अनु. अ. रे. इन नक्षत्रों में और वृ. क. वृ. कुं. इन लग्नों में वधूप्रवेश करावे ॥ ८० ॥ अब रोगी स्नानमें वर्जित ग्राह्य कहते हैं, आश्ले. म. स्वा. रो. पुन, रे. तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों को रोगी के स्नान कराने में वर्जित करे और ४।९।१४। ये तिथि मेष. क. तु. मकरये

लग्नरवि मङ्गल ये वार ८।१२ चन्द्रमा में रोगी को स्नान करावे और ब्राह्मणभोजन इत्यादि शुभ हैं॥ ८१॥ ८२॥

आनंदःकालदंडश्चधूम्राक्षश्च प्रजापतिः। सौम्योध्वांक्षोध्वज श्चापिश्रीवत्सोवज्रमुद्गरौ॥८३॥ छत्रंमित्रंमानसाख्यंपद्माख्यंलुंब कस्तथा। उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चाथशुभोऽमृतः॥८४॥ मुश लंगदमातंगराक्षसाश्चचरः स्थि रः। वर्धमानश्चविज्ञेयाअष्टाविं शतिरित्यपि॥ ८५॥ फलंतुनामस दृशंयोगादैवज्ञभाषिताः। अ श्विनी रविवारेच योगोह्यानंद

संज्ञकः ॥८६॥ मृगशीर्षे शीतरश्मि श्लेषायां क्षितिनंदनः । बुधे हस्तो नुराधा च देवराजपुरोहिते ॥८७॥ भार्गवे चोत्तराषाढा शनौ शतभिषा यदा । तदानंदाख्ययोगः स्यात्कालदंडादयः क्रमात् ॥ ८८ ॥

सू	अ.	भ	कृ.	रो.	मृ.	आ	पु	पु.	श्ले	म.	पू	उ	ह.	चि.
चं	मृ.	आ	पु	पु	ऽश्ले	म	पू	उ	ह.	चि.	स्वा	वि.	ऽनु	ज्ये.
मं	श्र.	म.	पू.	उ	ह.	चि	स्व	वि	ऽनु	ज्ये.	म.	पू.	उ	अ.
बु.	ह.	चि	स्वा	वि.	ऽनु	ज्ये	म	पू	उ.	अ.	श्र	ध.	श.	पू.
गु.	श्र.	ज्ये	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र	ध.	श.	पू.	उ.	रे	अ.	भ
शु.	उ.	अ.	श्र	ध	श.	पू	उ.	रे	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.
श.	श.	पू	उ	रे	अ.	भ.	कृ	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले	म.
योग नाम	अनंद	काल	धूम्र	प्रजा	सौम्य.	ध्वांक्ष.	ध्वज	श्रीवत्स	वज्र.	मुद्गर	छत्र.	मैत्र.	मानस	पद्म.

सू.	स्वा	वि	ऽनु	ज्ये	मू	पू.	उ.	अ.	अ.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
चं.	मू.	पू.	उ	अ	अ	ध.	श	पू.	उ.	रे	अ.	भ	कृ.	रो.
मं	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	अ	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.
बु	उ.	रे.	अ.	भ	कृ.	रो	मृ	आ.	पु.	पु	श्ले	म.	पू.	उ.
बृ.	कृ.	रो.	मृ.	आ	पु	पु.	श्ले	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.
शु.	पु.	पु.	आ	ज.	पू.	उ.	ह.	चि	स्वा	वि.	अ.	ज्ये	मू.	पू.
श.	पू.	उ.	ह.	चि	स्वा	वि	ऽनु	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.
वार.	लुंबक	उत्पात.	मृत्यु	काण	सिद्धि	शुभ	अमृत	मुसल	गद	मातग	राक्षस	चर	स्थिर	वर्धमा.

टीका-ज्योतिषियों ने इन योगों के फल नामानुसार कहे हैं। अश्विनी रवि को आनन्दयोग कहिये, इसी भांति कालदण्डादि जानिये ८८॥

हस्तः सूर्यमृगःसोमे वारेभौमे तथाऽश्विना ॥ बुधेमैत्रंगुरौपुष्यं रेवतीभृगुनंदने ॥ ८९ ॥ रोहिणी रविपुत्रेच सर्वसिद्धिप्रदायकः ।

अयंचामृतसिद्धिस्याद्योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥ ९० ॥

टीका—अब अमृतसिद्धियोग कहते हैं। रविवारको हस्त होय तो अमृतसिद्धि योग होताहै मृ. सो; अ. म; अनु, बु. पु. गु, रे. शु. श. रो. ८९ ॥ ९० ॥

अथ अमृतसिद्धियोगयंत्र.							
र.	चं.	मं.	बु	गु.	शु.	श.	वार
ह.	मृ.	अश्वि	अनु.	पुष्य	रे.	रो	नक्षत्र
ऽमृ	ऽमृ	ऽमृ	ऽमृ	ऽमृ	ऽमृ	ऽमृ	योग

मघादित्यविशाखेंदौ भौमेचाद्रानलेगुरौ । बुधेमूलंविधिःशुक्रे यमघंटःशनौकरः ॥ ९१ ॥

टीका-रवि को मघा हो तो यमघण्टयोग कहिये, वि. सोम; ओ. मंगल, मू. बुध. कृ. गुरु, रो. शुक्र शनि व, सोम, आ.मंगल, मु, बुध, कृ,गुरु, रो. शुक्र,

शनि को हस्त हो तो यमघण्टयोग कहिये सो शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ ९१ ॥

अथ यमघण्टयोगयंत्र							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार
म.	वि.	आ.	मू.	कृ.	रो.	ह.	नक्षत्र

नंदासूर्येचभौमेच भद्राभार्गवचंद्रयोः । बुधेजयागुरौरिक्ता शनौ पूर्णाच मृत्युदा ॥ ९२ ॥

टीका—शनि भौमको नन्दा, शुक्र सोमको भद्रा, बुधको जया, गुरुको रिक्ता, शनिको पूर्णा ये मृत्युयोग शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ ९२ ॥

मृत्युयोगचक्र.					
रवि	शुक्र.	बुध.	गुरु	शनि	
भौम.	चंद्र.	०	०	०	वार
१	२	३	४	५	
६	७	८	९	१०	तिथी.
११	१२	१३	१४	३०	

तिर्य्यंकेनसमायुक्तो वारांको यदि जायते। त्रयोदशांकः क्रकचो योगः प्रोक्तःपुरातनैः ॥ ९३॥

टीका—क्रकचयोग जो यन्त्र में लिखा है, सो समझ लेना ॥ ९३ ॥

अथक्रकचयोगयंत्र							
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ	शु.	श.	वार.
१२	११	१०	९	८	७	६	तिथि

अंधाक्षश्चिचिपिटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः। गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥९४॥ अंधेचलभते शीघ्रंमंदेचैवदिनत्रयम्। काणाक्षे मासमेकंतु सुनेत्रे नैवलभ्यते ॥ ९५ ॥

टीका—अब अन्धाक्ष, चिपिटाक्ष काणाक्ष सुलोचन ये चार प्रकारके नक्षत्र नष्ट वस्तु में

विचारिये सो रोहिणी आदि सातवार गनिये रो. अन्ध, मृ, चिपिटा आ, काणाक्ष, पुन. सुलोचन, फिर इसी रीतिसे समझ लीजै ॥ ९४ ॥ अन्धनक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो शीघ्र मिले जो चिपिटाक्ष मन्ददृष्टिवाले में जाय तो तीन दिनमें मिले जो काणनक्षत्रमें जाय तो महीने भरमें मिले जो सुलोचनमें जाय तो फिर न आवे ॥ ९५ ॥

अथ अंधादिनक्षत्रयंत्र.

रो.	पु.	उ	वि.	पू.	ध.	रे.	अंध.
मृ	ऽश्ले	ह.	ऽनु.	उ.	श.	अ	चिपटा
आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	काण.
पु.	पू.	स्वा	मू.	श्र	उ.	क.	सुलो.

पुनर्वसुमृगश्चार्द्रा ज्येष्ठामैत्रं करस्तथा । पूर्वाषाढोत्तराषाढे मूलं दक्षिणचारिणः ॥ ९६ ॥ कृत्तिकारोहिणीपुष्यश्चित्राश्लेषाचरेवती । प्रातं धनिष्ठाश्रवणोनवम

ध्यमचारिणः ॥ ९७ ॥ अश्विनी भरणीस्वाती विशाखाफाल्गुनी द्वयम्। मघाभाद्रपदायुग्मं नव चोत्तरचारिणः ॥ ९८ ॥

टीका—पु. मृ. आ. ज्ये. अनु. ह. पू.षा. उ. षा. मू. ये नक्षत्र पूर्व दक्षिणचारी हैं. कृ. रो. पु. चि. आश्ले. रे. श. ध. श्र. ये पूर्व से मध्यको अर्थात् आकाशको चले हैं अश्वि. भ. स्वा. वि. पू. फा. उ. म. पू. भा. उ. भा. ये पूर्व से उत्तरचारी, हैं, ९६। ९७। ९८ ॥

अथ नक्षत्रप्रचारयंत्र.

पु.	मृ.	आ.	ज्ये.	ऽनु.	ह	पू.	उ.	मू.	दक्षिण.
कृ.	रो.	पु.	चि.	श्ले.	रे.	श	ध.	श्र.	मध्य.
ऽश्वि.	भ.	स्वा.	वि.	पू.	उ.	म.	पू.भा.	उ.भा.	उत्त.

भ्रमतींद्रदिशोवत्सो मासानांच त्रिकंत्रिकम्। आदौभाद्रपदंकृत्वा

सव्यतोदिक्चतुष्टयम्। यात्राविवादसंबंधे द्वारेचगृहहर्म्ययोः। भूपतेर्मिलनेयुद्धेवत्सस्याभिमुखं त्यजेत् ॥ १०० ॥

टीका—पूर्व आदि चारों दिशा में वत्सरूप तीन तीन मास सव्य मार्ग से भ्रमते हैं. भा. आ.का.पूर्व में। मा. पौ. मा. दक्षिण में फा,वै.चै पश्चिममें,ज्ये.आ श्रा.उत्तरमेंसो यात्रा विवाद, सम्बन्ध, गृहद्वार,राजा से मिलना, युद्ध ये कार्य बायें पीछे वत्सयोग देखकर करना ९९

		पू		
	ई	भा आ का	आ	
उ	ज्ये. आ. श्रा	वत्सयन्त्र	मा पौ- मा.	द
	वा	फा. चै. वै.	नै	
		प		

त्रयंयमेध्रुवेचाग्नौदूविधौपंच मृगेत्रयम्। एकमार्द्राचनक्षत्रेच

त्वारि चपुनर्वसौ॥१॥ पुष्येत्रयंर सा:सर्पेमघायांचैवपंचकम्।द्वयंद्वयंफाल्गुनयोर्ज्ञेयंहस्तेतु पंचकम्॥२॥ चित्रास्वात्योरेकमेकंचतुष्कं चद्विदैवते। त्रयंस्यादनुराधायां ज्येष्ठायांचत्रयंस्मृतम्॥३॥ मूलेरुद्राश्चतुष्कंचपूर्वाषाढेतथोत्तरे। त्रयंचाभिजितः प्रोक्तं श्रवणेचत्रयंतथा॥४॥ धनिष्ठायांचचत्वारः शतंशतभिषासुच। द्वयंद्वयंभाद्रयोश्चद्वात्रिंशदपिचांत्यके॥५॥

टीका---अ. ३ भ. ३. कृ. ६ रा. ५ मृ. ३ आ. १ पु. ४ पु. ३ श्ले. ६ म. ५ पू. फा. ६ ज्ये. मू. ११ पू. षा. ४ उ. षा. ४ अभि. ३ श्र. ३ ध. ४ श. १०० पू. भा. २ उ. रे. ३२ इस प्रकार तारकासंयुक्त नक्षत्रों का उदय होता है १।२।३।४।५।

अट्ठाईस नक्षत्रतारासंख्यायंत्र।

अ.	भ.	कृ.	रो.	म.	आ.	पु	पु	आ.	म	पू.	उ.	ह.	चि.
३	३	६	५	३	१	४	३	६	५	२	२	५	१
स्वा.	वि.	ऽनु	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
१	४	३	३	११	४	४	३	३	४	१००	२	२	३२

लग्नेष्टमेव्येसूर्ये क्षेत्रपालस्यदूषणम्। आकाशदेव्याश्चचंद्रेतुलग्नेषष्ठेष्टमेव्यये॥ ६॥ द्वादशेदशमेभौमे डाकिनीदूषणंस्मृतम्। वनदेव्युद्भवोदोषःसप्तमेद्वादशेबुधे॥ ७॥ जामित्रेद्वादशेजीवेदेवदोषोनिगद्यते। अस्तेव्ययेदैत्यपूज्ये जलदेव्याश्चदूषणम्॥८॥

शनैश्चरेव्ययेचास्तेदोषः स्यादा
मवातजः । जामित्रेद्वादशेराहुः
कुमतिज्ञातिदूषणम् ॥ ९ ॥

टीका—जो सूर्य ८।१२ अथवा लग्न में होय तो क्षेत्रपाल का दोष जानिये जब शरीर में कुछ व्यथा होय तो क्षेत्रपाल का पूजन कीजे जो चन्द्रमा १।६।१२ होय तो आकाश देवी का दोष तिसकी पूजा करै, कष्ट दूर होय जो जन्मकाल में मंगल १०।१२ होय तो डाकिनी दोष होय, जो बुध ७।१२ हो तो वनदेवी का दोष कहिये और जो बृहस्पति १२।७ होय तो देवदोष मानिये, जो शुक्र ७।१२होय तो जलस्थदेवी का दोष जानिये जो शनैश्चर १२।७ होतो आमवात दोष करै, जो राहु ७।१२ होय तो कुमतिजन्य स्वजाति दोष उत्पत्ति होय ॥ ९ ॥

पितृदोषोभवेन्मेषेक्षुधाहानि
र्विवर्णतः । वृषेगगनदेव्यास्तुज्व
रोदुःस्वप्नमक्षिरुक् ॥१०॥ मिथुनेच

महामायादोषोवेलाज्वरोनिलः। कर्कैचशाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनताः ॥ ११ ॥ सिंहेजलप्रेतदोषो दिवाशीतज्वरोऽरुचिः । ग्रहदोषश्चकन्यायांक्रोधालस्येतथारुचिः ॥ १२ ॥ क्षेत्रपालभवोदोषस्तुलेसंतानपीडनम् । वृश्चिकेनागदोषश्चज्वालादेहेकुबुद्धिता॥१३॥ चापेदेहेभवेद्दोषोज्वरःशोकोदरव्यथा। मकरेचंडिकादोषो देहभंगोज्वरोऽनलः ॥ १४ ॥ मलिनःप्रेतदोषश्चकुंभेदेहस्यपीडनम् । मीनेचापेङ्गनादोषोज्वरोजंजालदर्शनम् ॥१५॥

ष्ययं धर्मेतृतीयेचषष्ठेपापग्रहोयदा। हतोगरेजलेशस्त्रेतस्यदोषःकुलोद्भवः ॥ १६ ॥

टीका—जो मेष लग्नमें जन्म होय और ऐसे ग्रह पडें तो पितृदोष होय और कुरूप होय. जो वृषमें जन्म होय तो आकाशदेवी दोष करे ज्वर होय, भयानक स्वप्न देखे, नेत्र पीड़ा पावे। मिथुनमें होय तो महामाया दोष करे, सामयिक ज्वर आवे. अनिल भय होय. जो कर्क में होय तो शाकिनी दोषसे रोवे. हंसै, कबहुं मूक होरहे ॥ ११ ॥ जो सिंहमें होय तो प्रेत बाधा करे. दिन में ज्वर आवै. जो कन्या में होय तो दुष्ट ग्रहदोष से शारीरिक बाधा, क्रोध, आलस्य अरुचि होय ॥ १२ ॥ जो तुला में जन्म होय तो क्षेत्रपाल दोष करै, सन्तान को पीडा करे, जो वृश्चिक में होय तो सर्पसे भय. देहपीड़ा ज्वर को उपजावे. कुबुद्धि होय ॥ १३ ॥ धनमें होय तो देह दोष ज्वर शोक. पेटपीड़ा शूल होय. और जो मकरलग्न में जन्म होय तो चाण्डिका का दोष होय अङ्ग भङ्ग होय. और ज्वर होय ॥ १४ ॥ कु-

ग्भ में होय तो प्रेत दोष करै. मलिन रहै. देह पीड़ा मीन में जन्म होय तो योगिनीदोष. महा ज्वर करे १५ जो १२। ९। ३। ६ इनमें पापग्रह होय तो विष जल शस्त्रसे मृत्यु पावै. वा कुल दोष होवे ॥ १६ ॥

शनौजलेकुजेशस्त्रे युतेसूर्येस्व बन्धुजः। राहौविक्रमतोनष्टःशा- न्तिपूजाद्विजार्चनैः॥१७॥ स्वक्षेत्रे गोत्रदोषोपि परक्षेत्रेपरोद्भवः। शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषोऽमित्रेस्वजन संभवः॥ १८ ॥

टीका—जो इन स्थान में शनि होय तो जल में डूबै, और मंगल होय तो हथियार से मरे और सूर्य होय तो निजवंशवाले के हाथ से मरे वा विष से। और राहु होय तो कुत्सितप्रकृति उ: पजै. चोरी और कुमार्गगामी होय जो ऐसे ग्रह होंय तो ब्राह्मण की पूजा करने से संतान भली होय, जो स्वक्षेत्री ग्रह पडें तो गोत्र से दोष हो,

और जो स्वक्षेत्री ग्रह पड़े तो गोत्र से दोष होय और परक्षेत्री दूषित ग्रह पड़ें तो पर:मनुष्य जनित पीड़ा होय जो शत्रु से क्लेश पावै. मित्रक्षेत्री होय तो मित्रों से क्लेश पावै ॥१०।१८॥

इतिक्षेत्रदोषः ॥



अथ नक्षत्रतिथिवारशुभाशुभयोगयन्त्र ॥

र.	अ.	ह.	पु.	पु.	उ३	ध.	न	क्ष	त्र	८	ति	थि	॥	ऽशुभयोग
र.	वि	भ	ज्ये	अ.	म.	मृ.	न	क्ष	१४	१२	७	ति	थि	ऽशुभयोग
चं.	पु.	अ	अ.	रो.	मृ.	न.	क्ष	त्र	९	१०	ति	थि	०	शुभयोग
चं.	चि	वि	पू.	उ.	न.	क्ष	११	१२	१२	१३	ति	थि	०	ऽशुभ
मं.	मू.	अ.	श्र.	मृ.	उ.	न.	ह	३	७	८	१३	०	०	शुभ
मं.	श.	श्र.	ध.	मू.	म.	उ.	उ	न.	२	१०	ति	थि	०	ऽशुभ
बु.	अ	पु.	कृ.	रो.	मृ.	न.	२	७	१२	ति	थि	०	०	शुभ
बुं.	मू.	ध	रे.	श्र.	भ.	न	१	३	९	ति	थि	०	०	ऽशुभ
बृ.	पु.	अ.	ऽनु	रे	पु.	न.	५	१०	१५	ति	थि	०	०	शुभ
बृ.	श.	अ.	कृ.	उ.	रो.	मृ.	न.	४	६	८	ति	थि	०	ऽशुभ
शु.	वि.	उ.	पू.	अ.	अ.	मू.	न	११	६	१	१३	ति	थि	शुभ
शु.	रो.	पु.	ज्ये	अ.	म.	न.	२	७	ति	थि	०	०	०	शुभ
श.	रो.	स्वा	श्र.	पु.	म.	न.	४	९	३	ति	थि	०	०	शुभ
श.	ह.	उ.	चि	उ.	रे.	द.	६	७	ति	थि	०	०	०	ऽशुभ

आदित्येचाश्विनीहस्तमूलम्पु ष्योत्तरात्रयम् । सिद्धियोगोधनि ष्ठाच तिथिरष्टमीतथा ॥१९॥ सूर्यैविशाखाभरणीज्येष्ठा मैत्रंम घातथा । चतुर्दशीद्वादशीच वि रुद्धासप्तमीतिथिः ॥ २० ॥ सोमेपु ष्यानुराधाच श्रवणोरोहिणीमृ गः । नवमीदशमीचापि सिद्धियो गाःप्रकीर्त्तिताः ॥ २१ ॥ चन्द्रेचित्रा विशाखाच तथाषाढाद्वयंबुधैः । एकादशीतथाषष्ठी वर्ज्जनीयात्र योदशी ॥ २२ ॥ भौमेमूलाश्विनी सर्पैमृगशचोत्तरभाद्रपात् । सिद्धा

ष्टमीतृतीयाच सप्तमीच त्रयोद
शी ॥ २३ ॥ निंद्याशतभिषार्द्राच
धनिष्ठापूर्वभाद्रपात्। मघाचोत्त
रषाढेचद्वितीयादशमीकुजे॥२४॥
बुधानुराधापुष्येच कृत्तिकारोहि
णीमृगः। द्वादशीसिद्धियोगाश्च
द्वितीयासप्तमीतिथिः॥ २५ ॥ बुधे
मूलं धनिष्ठाचरेवतीचाश्विनीमृ
गः। तृतीयांनवमींचापि वर्जये
त्प्रतिपत्तिथिम् ॥ २६ ॥ गुरौचद
शमीपञ्चपौर्णमासीविशेषतः। पौ
ष्णाश्विन्यनुराधाच सिद्धिःपुष्यः
पुनर्वसुः ॥ २७ ॥ जीवेशतभिषा

द्र्रांच कृतिकोत्तरफाल्गुनी। वि
धिर्मृगोऽष्टमीषष्ठी चतुर्थीच वि
वर्जिताः ॥ २८ ॥ शुक्रेचित्रार्यमा
पूषाश्रवणाचश्च पुनर्वसुः । सिद्धा
चैकादशीषष्ठी प्रतिपच्च त्रयोद
शी ॥ २९ ॥ भार्गवेरोहिणीपुष्यो
ज्येष्ठाऽश्लेषामघातथा । द्विती
यासप्तमीचापि वर्ज्जनीया सदा
बुधैः ॥ ३० ॥ शनौचरोहिणीस्वा
ती श्रवणःपूर्वफाल्गुनी । मघा
चनवमीसिद्धाचतुर्थीचत्रयोदशी
॥ ३१ ॥ शनौहस्तोत्तराषाढा चि
त्राचोत्तरफाल्गुनी। रेवतीचसदा
वर्ज्या तिथिःषष्ठीचसप्तमी ॥३२॥

टीका—अष्टमी रवि वार को अ. ह. मू. पुष्य तीनों उत्तरा धनिष्ठा हों तो सिद्धियोग कहिये जो रवि को १४।७।१२ विशा. भर. ज्ये. अनु. मघा हों तो कुयोग कहिये । सोमवार को ९। १० पुष्य अनु. श्रव. रो मृग. हो तो सिद्धि योग कहिये । जो सोमवार को ११।६।१३ चित्रा, विशा. पूर्वाषा. उत्तराषा. हों तो कुयोग कहिये । जो भौमको ८।३।७।१३ मूल, श्रव. आश्ले. मृ. उ. भा. हों तो सिद्धियोग कहिये जो भौमको २ । १० श. आ. ध. पू. भा. मघा, उषा. होय तो कुयोग कहिये बुध को १२ । २ । ७ वा अनु. पु. पुष्य. कृ. रो. मृ. हों तो सिद्धियोग कहिये बुध को ३ । ९ । १ । वा मूल, ध. रे. श्र. मृ. हों तो कुयोग कहिये जो गुरु को ५ । १० । १५ वा अ. रे. अनु. पु. पुष्य हों तो सिद्धि योग कहिये जो गुरु को ८ । ३ । ६ वा श. आ. कृ. उ. भा. रो. मृग हों. तो कुयोग कहिये जो शुक्र को ११ । ६ । १ । १३ वा चि. उ.फा. रे.श्र.अ. ये पुनर्वसु सिद्धि योग कहिये ॥ २९ ॥ जो शुक्र को २ । ७ रो. पु. आश्ले. मं. ज्येष्ठा होंतो कुयोग कहिये जो शनि को ९ । ४ । १३ वा रो. स्वा श्र. पूफा.

म.हो तो सिद्धियोग कहिये,जो शनि को ह।७वा ह.उ.षा. चित्रा उत्तरा.रे. हो तो कुयोग कहिये॥

चरंचलंस्मृतंस्वातीपुनर्वसुश्रु तित्रयम्। क्रूरमुग्रंमघापूर्वात्रित यंभरणीतथा॥३३॥ ध्रुवंस्थिरंवि निर्दिष्टं रोहिणीचोत्तरात्रयम्। तीक्ष्णदारुणमाश्लेषाज्येष्ठार्द्रा मूलमेवच॥३४॥ लघुक्षिप्रंस्मृतपु ष्योहस्तोऽश्विन्यभिजित्स्मृतम्। मृदुमैत्रंस्मृतंचित्राऽनुराधारेव- तीमृगः॥३५॥मिश्रंसाधारणंप्रोक्तं विशाखाकृत्तिकातथा।नक्षत्रेष्वेषु कर्माणिनामतुल्यानिकारयेत् ३६

टीका—अब अट्ठाईस नक्षत्रोंकी सात संज्ञा हैंसो भिन्न भिन्न कहते हैं प्रथम स्वाती पु. श्र. ध.श. ये नक्षत्र चरसंज्ञक हैं ये चरकार्यको शुभ-

हैं। पूर्वात्रय म. भ ये. क्रूरसंज्ञकनक्षत्र क्रूरकार्यमें लीजिये। रोहिणी उत्तरात्रय ये ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र स्थिरकार्य में लीजिये। आश्ले. ज्ये. आ. मूल ये तीक्ष्णासंज्ञक नक्षत्र तीक्ष्णकार्यमें ग्राह्य हैं। ह. पु. अश्वि. अभि. ये लघुक्षिप्रसंज्ञक नक्षत्र शीघ्रस्वल्पकार्य में ग्राह्य हैं। चित्रा. अनु मृग रेवती ये मृदुमैत्रसंज्ञक नक्षत्र कोमल मैत्रीकार्य को शुभ हैं, वि. कृ. ये मिश्र साधारण नक्षत्र सामान्यकार्य में शुभ हैं ये सबों का संज्ञाफल नामानुसार जानिये॥ ३३। ३६॥

नक्षत्रों का सातप्रकार की संज्ञाका चक्र।

स्वा.	पुन.	श्र.	ध.	श.	चर चल
म.	पू.	पू.	पू.	भ.	क्रूर उग्र
रो.	उ.	उ.	उ.	०	ध्रुव स्थिर
आश्ले	ज्ये.	आ.	मू.	०	तीक्ष्ण दारुण
ह.	पुष्य.	अ.	अभि.	०	लघु क्षिप्र
चि.	अनु,	मृ.	रे.	०	मृदु मैत्र
वि.	कृ.	०	०	०	मिश्र साधारण

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत्। तन्नक्षत्रंमुखेदत्त्वा यावन्नामनरस्यच॥ ३७॥ तावद्विचारयेत्तत्रज्ञेयंतत्रशुभाशुभम्। एकंमुखेचनक्षत्रं चत्वारिदक्षिणे करे॥ ३८॥ त्रयंत्रयंपादयोश्च वामहस्तेचतुष्टयम्। ललाटेद्वित्रयंनेत्रे हृदिपञ्चगुदेद्वयम्॥३९॥ एकैकंदक्षिणेकुक्षौनक्षत्राणिक्रमेणच। हानिर्मुखेदक्षहस्तेलाभोवामेचरोगता॥४०॥ हृदिश्रीर्मस्तकेराज्यंपादेपर्य्यटनं फलम्॥नेत्रे सुखंगुदेमृत्युःकुक्षौशोकंविचिंतये

तु ॥ ४१ ॥ जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणंजायतेसदा। अन्यान्येवं विचार्याणिवाहनादिबहूनिच ॥

टीका—अब शनिचक्रका विचार कहते हैं, शनिचक्र नराकार लिखे जो नक्षत्रका शनि होय तिसे जन्मनक्षत्र तक गिने फिर शनि नक्षत्र से आदि प्रति अंग में सब नक्षत्र स्थापित करे जिस अंगमें जन्मनक्षत्र पड़े तहांका फल जानिये मुखमें एक, दहिने हाथ ४ दक्षिण पाद ३ वामपाद ३, वाम हाथ ४, ललाट ३ नेत्र २ हृदय ५ गुदा २, दक्षिण कोण में १, ये ऐसे क्रमपूर्वक रखिये जो मुखमें जन्मनक्षत्र पड़े तो हानिकरे. वाम हस्त में रोग, हृदय में लक्ष्मी, ललाट में राजपद, दक्षिणहस्त में लाभ, चरणन में भ्रमावे, नेत्र में सुख, गुदा में मृत्यु, कांख में पड़े तो शोक करे इसलिये जप, दान, पूजा ब्राह्मणभोजनादिक से कल्याण सुख होय, और इसी प्रकार अनेक वाहनादि विचार होता है सो अन्य ग्रन्थन विषे विचार कह्यो है ॥

मेषेग्नौगुर्जरेषु प्रभासेचार्बुदे

वृषे । मिथुनेजायतेपीडा स्थलेमूलस्थलेषुच ॥ ४३ ॥ कर्कैकाश्मीरकेबाधा शक्रप्रस्थेमृगाधिपे । शनैश्चरेचकन्यायांमालवाख्येचसंक्षयम् ॥ ४४ ॥ तुलावृश्चिकचापेषु यदियातिशनैश्चरः । नवर्षन्ति तदामेघाः पृथ्वीदुर्भिक्षपीडिता ॥ ४५ ॥ सुभिक्षंमकरेकुम्भे जायते बहुधाशनौ । मीनेचसर्वलोकानां दुर्भिक्षन्तुक्षयोभवेत् ॥ ४६ ॥

टीका—मेषका शनि हो तो गुर्जर देशमें पीड़ा करे. वृषका प्रभासक्षेत्र और अर्बुद देशमें,मिथुनका मूलस्थलो देशमें. कर्कका काश्मीर देश विषे सिंहका इद्रप्रस्थ देशमें. कन्याका मालव देशमें पीड़ा करे. तुला वृश्चिक धन का हो तो स्वल्प

वृष्टि करे पृथ्वी दुर्भिक्ष से दुःखित होय. कुंभ मकरका हो तो अन्नका सुकाल करे मीनका हो तो सर्वत्र काल पड दुर्भिक्षसे पीड़ा होय ४१

यत्रमासेरवेर्वाराजायन्तेपञ्च सन्ततम् । दुर्भिक्षंछत्रभंगञ्च तदास्तेचमहद्भयम् ॥ ४७ ॥ सोमस्यपञ्चवाराश्चयत्रमासेभवन्ति हि । धनधान्यसमृद्धिश्च सुखी भवतिमेदिनी ॥ ४८ ॥ यत्रमासेमहीसूनोर्यन्ते पंचवासराः । रक्तेनपूरितापृथ्वीछत्रभंगस्तदाभवेत् ॥ ४९ ॥ बुधस्यपंचवाराश्च जायन्तेर्चानिरन्तरम् । प्रजाश्च सुखसम्पन्नाः सुभिक्षञ्चप्रजायते

॥५०॥यत्रमासेपञ्चवाराजायन्तेच बृहस्पतेः। विग्रहःपश्चिमेदेशे पीडायुद्धंचजायते ॥ ५१ ॥ शुक्रस्यप ञ्चवाराश्च यत्रमासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षंच सुखंतत्रप्रव र्त्तते ॥ ५२ ॥ शनिवारायदापञ्च पा तालेकस्पतेफणी । ईशानदेशभ ङ्गश्च वह्निदाहोमहर्घता ॥ ५३ ॥

टीका—जिस महीने में पांच रविवार पड़ें तो अन्न महंगा छत्रभंग तथामहाभय होय। महीने में पांच सोमवार पड़े तो धनधान्य की वृद्धि सर्वत्र सुख करे। एक मास में पांच मंगल पड़े तो पृथ्वी रुधिर पूरित तथा छत्रभंग होय ॥ ४९ ॥ जिस मासमें पांच बुधवार पड़े तो प्रजा सुखी होय सुभिक्ष रहे ॥ ५० ॥ जो मास में पांच गुरुवार पड़े तो पश्चिम में विग्रह पीड़ा और युद्ध होवे

॥५१॥ एक महीने में पांच शुक्रवार पड़ें तो प्रजा बढै सुभिक्ष सुख होय जौन मासमें पांच शनैश्चर पडे तो पाताल में शेष कांपे ईशान देश भंग अग्निकोप और अन्न महँगा होय॥५३॥

अंगुल्योविंशतिःसूर्ये शंकुःसोमे चषोडश । कुजेपञ्चदशांगुल्योबुधवारेचतुर्दश ॥ ५४ ॥ त्रयोदश गुरोर्वारे द्वादशार्कजशुक्रयोः । शंकुमूलेयदाछाया मध्यान्हेचप्रजायते ॥ ५५ ॥ तदाचाभिजिदाख्याता घटिकैकास्मृता बुधैः।अत्रकार्याणिसर्वाणि सिद्धिंयांतिकृतानिच ॥ ५६ ॥ जातोभिजितिराजास्याद्व्यापारेसिद्धिरुत्तमा । महाक्रूरवियोगेनसर्वमंगलदायकः

टीका—रविवारको बीस अंगुल सींक ठाढी कीजे, सोमको १६, मं. को १५ बु. को १४, बृ.को १३, शु. को १२, शनिको १२, जब दो प्रहर के अन्त में सीककी छाया सीकके मूल में आवे तब अभिजित् मुहूर्त एक घटी का होताहै. सो सर्व कार्य व्यौपार में सिद्धिप्रद होताहै. इस मुहूर्तपर जन्म होय तो राजा होय ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

अथाभिजित्मुहूर्तयंत्र							
वार	र.	च.	मं.	बु	गु.	शु.	श.
ऽगु.	२०	१६	१५	१४	१३	१२	११

अर्थवृद्धिः फाल्गुनेस्याच्चैत्रेच धनसम्पदः। वैशाखेविग्रहोराज्ञां ज्येष्ठेवृष्टिश्चभूयसी॥५८॥ आषाढे चोदितेशुक्रेजलंभवतिदुर्लभम् । श्रावणेतुपशोः पीडाभाद्रेधान्यस मृद्धये ॥ ५९ ॥ आश्विनेसर्वसम्प

त्तिःशुभंकार्त्तिकमार्गयोः। पौषेमा
घेछत्रभंगो यद्युदेतिभृगोसुतः ६०

टीका—जो शुक्रका उदय फाल्गुन में होय तो अन्न सस्ता होय. चैत्र में होय तो मेघ नीके बरसें और चौपाये को सुख होय. धनसंपदा अधिक होय. वैशाखमें उदय होय तो राजन में विग्रह करे, ज्येष्ठ में उदय होय तो वर्षा विशेष करे ॥ ५८ ॥ आषाढ़में होय तो मध्यम करे श्राव-णमें होय तो पशुओं को पीड़ाकरे. भादों में होय तो अन्न बहुत उपजावे ॥ ५९ ॥ जो आ-श्विन में होय तो सर्वसंपत्ति करे. कार्तिक तथा अगहनमें होय तो शुभ है; जो पौष माघ में उदय होय तो छत्रभंग करे ॥ ६० ॥

पूर्ववायुर्होलिकायाःप्रजाभूपा
लयोस्सुखम् । पलायनंचदुर्भिक्षं
दक्षिणेजायतेध्रुवम्॥ ६१ ॥ पश्चि
मेतृणसंपत्तिरुत्तरेधान्यसम्भवः।

यद्दिखेचभिश्खावृद्धिर्दुर्गराज्ञोपि संक्षये ॥ ६२॥

टीका—जो होलिका को पूर्व वायु चले तो राजा प्रजाको सुख करे. और दक्षिण पवन चले तो देश भागे दुर्भिक्षकरे, पछुवां चले तो तृण सम्पत्ति बढ़े. उत्तरपवन चले तो धान्यवृद्धि होय जो होलिका का धुवां आकाशको सूधा चले तो राजगढ़ छूटजाय ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

एकादश्यांकार्तिकस्य यदिमेघःसमीक्ष्यते । आषाढेचतथावृष्टिर्जायते नात्रसंशयः ॥ ६३ ॥ मार्गशीर्षस्यचाष्टम्यां दृश्यन्तेविद्युतोयदा । तदावृष्टिःश्रावणेच मासिसञ्जायतेध्रुवम् ॥ ६४ ॥ कृष्णपक्षेदशम्यांच वृष्टिःपौषेचजायते। तदाभाद्रपदेमासे वृष्टिर्भवति

भूयसी ॥ ६५ ॥ वृष्टिश्चेन्माघस
प्तम्यांज्येष्ठेमूलेचवर्षते । नक्षत्रे
वारिवाहश्च तदान्नैः पूर्यतेम
ही ॥ ६६ ॥ पञ्चम्यांप्रथमेपक्षे श्रा
वणेचप्रवर्षते । पयोवाहस्तदाधा
न्यैर्धराव्याप्ताजलैरपि ॥ ६७ ॥

टीका—जो कार्तिकी एकादशीको मेघ छाया करे तो आषाढ़ में वर्षा हो ॥ ६३ ॥ मार्गशीर्षके अष्टमी को विद्युत् देखे तो श्रावणमें उत्तमवृष्टि होय ॥६४॥ जो पौषकृष्ण दशमीमें मेघ वर्षे तो भादों में अधिक वर्षे ॥६५॥ जो माघ में सप्तमी को वर्षे और ज्येष्ठ में मूल नक्षत्र वर्षे तो वर्षा के सर्व नक्षत्र उत्तम वर्षे और अन्न उपजे ६६ जो श्रावणकृष्ण पञ्चमी में वर्षे तो वर्षा बहुत होय ॥ ६७ ॥

आषाढेपूर्णिमायांतु यन्नक्षत्रं
विचारयेत् । पूर्वाषाढेसुभिक्षंच

मूलेदुर्भिक्षमुच्यते । उत्तराषाढ केघ्रवानां पीडाकटकसंगतिम् ६८

टीका-जो आषाढ़ी पौर्णिमा को जो नक्षत्र होय उसका विचार करे जो पूर्वाषाढ़ा होय. मूल होय तो दुर्भिक्ष पड़े उत्तराषाढ़ा होय तो घोड़ाओंको पीडा होय ॥ ६८ ॥

ज्येष्ठस्यप्रथमेपक्षे प्रतिपच्चय दाभवेत् । रवेर्वारस्तदावायुर्वा तिवृक्षान्तकारकः॥ ६९॥ अत्यन्त विग्रहोभौमेबुधेदुर्भिक्षमुच्यते । अनावृष्टिःशनेर्वारेजलंक्वापिनल भ्यते॥७०॥ सोमशुक्रसुरेज्यानांय द्विवारःप्रजायते। धनधान्यसुतो त्पत्तिर्गेहेगेहेमहोत्सवः॥७१॥ पौ षमासस्यसंक्रांतौ रविवारोयदा

भवेत्। धान्यानांत्रिगुणंमौल्यंभौ
मवारेचतुर्गुणम् । त्रिगुणंशनिवा
रेचबुधेशुक्रे समंभवेत् ॥७२॥सुरा
चार्यैप्रसोमेचमौल्यमर्धंसुनिश्चि
तम्।क्रूरोहिलाभकृद्धान्ये सौम्यो
हानिप्रदोभवेत् ॥ ७३ ॥ मीनसंक्र
मणेसूर्यै वारेवातिसमीरणः ।भौ
मेपीडापशूनांचदुर्भिक्षंचशनैश्च
रे ॥७४॥ वृक्षपातःप्रजापीडा मि
थ्यासञ्ज्वरतेमही । हिंसाकामातु
रालोकायदिवृष्टिश्चतद्दिने॥७५॥
संक्रान्तौयदिमीनस्य बुधवारःप्र
जायते। छत्रभंगोमहामारी रोद
नंभयचिन्तया ॥७६॥ संक्रान्तौसो

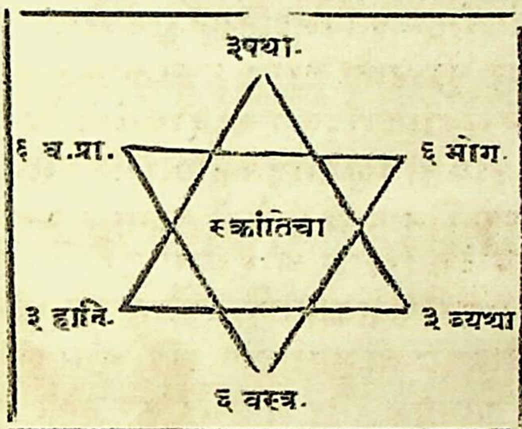
सवारश्चेत्प्रजानांपरमंसुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धंमह
र्घता ॥ ७७ ॥

टीका जो ज्येष्ठ कृष्ण १ रविवार को पड़े तो पवन अतिवेग से चले. और वृक्ष टूटें. भौम पड़े तो विग्रह बढ़े बुध पड़े तो दुर्भिक्ष होय. शनिपड़े तो वर्षाजल न मिले. सोम शुक्र गुरु पड़ें तो धन धान्य संतानसे सुखहोय ६९ ॥७०॥ ७१ पौष संक्रांति रविको पड़े तो अन्न त्रिगुण मोल बिके. भौमको चौगुन. शनिको तिगुन. गुरु सोमको आधे, शुभवार पड़े घाटा क्रूरपर नफा होय ॥ ७२॥ ३७ जो मीन संक्रांति रविवार को होय तो वर्षभरपवन चले मं. होय तो पशु पीडित होय. शनि पड़े दुर्भिक्ष रहे और ये दिन वर्षा होयतो वृक्षागिरे प्रजा दुखी मिथ्यावादी, हिंसक और कामातुर होय बुध में पड़े तो छत्रभंग, महामारी, चिन्ता और भय उप जावे सोमपडे तो सुख होय. रवि, भौम शनिवार पड़े तो पापयुद्ध और महँगाई करे ॥७४ ७५ ७६

संक्रान्त्या धरनक्षत्रादात्सभा
वोऽधिगम्यते । त्रिकंषट्कंत्रिकं

षट्कं त्रिकंषट्कंपुनःपुनः ॥ ७८ ॥
पन्थाभोगोव्यथावस्त्रं हानिश्च
विपुलंधनम् । षट्केभागेफलंश्रे
ष्ठंमासेमासे विचारयेत् ॥ ७९ ॥

टीका—संक्रांत्येति । संक्रांतिसमय के नक्षत्र से २७ नाम नक्षत्रताई गनिये. जो तीन ताई होय तो पंथचलावे. नवताई सुखभोग. १२लौं व्यथा १८लौं वस्त्रसुख. २१ लौं हानि २७लौं विपुलधन तथा भोगमिले या प्रकार मास मास विचारिये॥



राशिचक्रं लिखित्वादौ मेषसं
क्रांतिभादिकम् । अष्टाविंशति

कंतत्र लिखेन्नक्षत्रसंकुले ॥ ८० ॥ सिन्धोद्वयंद्वयंदद्या दन्यत्रैकैकमेव च । चत्वारःसागरास्तत्र सन्धयश्चाष्टसंख्यया ॥ ८१ ॥ शृङ्गाणि तत्रचत्वारि तटान्यष्टौसमृतानि च । रोहिणीपतितायत्र ज्ञेयंतच्छुभाशुभम् ॥ ८२ ॥ ज्ञाताजलप्रदस्यैषाचन्द्रस्यपरमप्रिया । समुद्रेतिमहावृष्टिस्तटे वृष्टि श्चशोभना । पर्वतेबिन्दुमात्राच खण्डवृष्टिश्चसन्धिषु ॥ ८३ ॥

टीका—अब वर्षानिर्णयविषे मुख्य विचार, प्रथम रोहिणी पतन को कहिये । पहिले द्वादशकोठा कुण्डलीचक्राकार रोहिणीचक्रमें गर्भित कीजै तो रोहिणीचक्रमें २८ नक्षत्र रखिये छि छि २ समुद्रमें. एक एक १ शृङ्गनमें एक एक १ नक्षत्र संधिन में. और एक एक १ तटनमें धरिये तहां मेषकी सक्रांति जौन नक्षत्रमें होय तिस

नक्षत्रमें धरिये. जो रोहिणी समुद्रमें पड़े तो वर्षा अधिक होय. शृंगनमें परे तो वर्षा थोडी होय. संधिनमें परे तो कभी वर्षे कभी न वर्षे. तट में रोहिणी परे तो शोभनवृष्टि होय. अश्विनीके स्थान सें संक्रातिदिननक्षत्र धरिये॥८०।८१।८२।८३

अथ रोहिणीचक्रम्

संधि. शत. उ. भा. सिंधु. पू. भा.	तट रे. शृं.	सिंधु. अश्विनी भरणी	तट कृ. शृं.	संधि. रोहिणी. मृ. संधि. १२ आ.
तट. धनिष्ठा.				तट पुनर्वसु
सिंधु अभिजित्.श्रवण.		२ १२ ३ १ ११ ४ १० ५ ९ ७ ६ ८		सिंधु पुष्य श्लेषा.
तट उत्त. षा.	शृं.		शृं.	तट. मघा.
संधि. पूर्वाषाढा. मू. संधि. ज्ये.	तट नु	सिंधु. स्वातीविशाखा	तट चि	संधि. पूर्वाफाल्गु उ.फा. संधि. ह. ८

नराकारंलिखेच्चक्रं सूर्योयत्र
व्यवस्थितः। तन्नक्षत्रादिकंकृत्वा
त्रयंदद्याच्चमस्तके॥ ८४ ॥मुखेत्र
यंस्कन्धयोश्च दद्यादेकैकमेवच।
बाहुद्वयेतथैकैकं पाणयोरेकैकमे
वच ॥ ८५॥ हृदिपञ्चगुदेचैकंना
भौचैकम्प्रदापयेत् । जंघयोरेक
मेकंच षडंकाःपादयोर्द्वयोः ॥८६॥
मस्तकेपट्टबंधीस्यान्मुखे मिष्टान्न
भोजनम्। स्कन्धेगजेन्द्रगामीस्या
द्बाहुस्थानेच्युतोभवेत् ॥ ८७ ॥
पाणौचजायतेचौरोहृदयेऽपीश्व
रोनरः । स्वल्पतोषीभवेन्नाभौ
परदाररतोगुदे ॥८८॥ जंघयोः

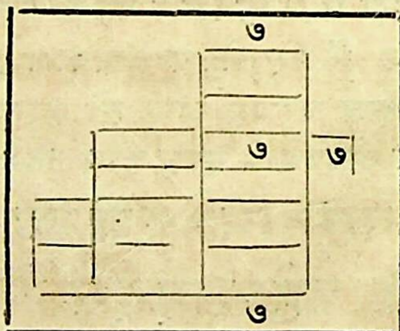
परदेशीस्यादल्पायुश्चपदद्वये ।
नृचक्रेसूर्यनक्षत्राज्जन्मभावोऽधि
गण्यते ॥ ८६ ॥

टीका-अब नरचक्र कहते हैं ताको गणितचक्र में समुझिये. सूर्य के नक्षत्र से जन्मनक्षत्र तक गिनिये. जिस अंग में जन्म नक्षत्र परे ताको फल कहिये. जो माथेविषे जन्म नक्षत्र परे तो कुटुंब नायक होय और जो मुख में परे तो मीठा अन्न भोजनकरे स्कन्धमें परे तो गजगामी होय. और जो भुज में परे तो भूमि छुटि जाय. हाथनमें परे तो चोर होय. हृदयमें परेतो ठाकुर होय. ऐश्वर्य अधिक पावे. ईश्वर तुल्य सन्मान पावे. और जो नाभिमें परे तो थोड़े भोजन में सन्तुष्ट रहै और जो गुदा में जन्मनक्षत्र परे तो परस्त्रीगामी होय. जांघ में परे तो परदेशवास करे. और जो जन्मनक्षत्र चरणमें आवे तो आयुष्य थोरी पावे. थोडी अवस्थामें मृत्यु होय ॥८४।८५।८६

ग्रामनाम्नाभवेदृक्षं तदाद्याःस
प्तमस्तके। पृष्ठेसप्तहृदेसप्तपादयोः

सप्त तारकाः ॥ ९० ॥ मस्तकेच धनोमान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः । हृदयेसुखसंपत्तिः पादेपर्यटनंफलम् ॥ ९१ ॥

टीका— जिस ग्राममें वा नगरमें तैसा चाहे तैसा ग्रामके नामसे नक्षत्र कर लीजे. जो नक्षत्र ग्राम का पाइये ताहीके प्रथम नक्षत्र पर्यंत अट्ठाइसों जानिये तामेंते ग्राम नक्षत्र आदि देके सात नक्षत्र ग्रामके माथे पर दीजे अरु ७पीठ पर दीजे. ७ हृदय पर दीजे. ७ पांव पर दीजे. तब अपने नक्षत्र देखिये जो माथे पर परे तो वंश धनी होय सन्मान पावे पीठ में हानि पावे, और हृदयमें परे तो सुखसंपत्ति पावे, पांवमें परे तो परदेश में पर्यटन करावे ९०।९१ ।



मूलेष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाःप रिकीर्त्तिताः। स्तम्भेषुषट्कघटि कास्त्वचिचैकादशस्मृताः ॥ ९२ ॥ शाखायांचनवप्रोक्ताः पत्रेप्रोक्ता श्चतुर्दश । पुष्पेपञ्चफलेवेदाः शिखायांचत्रयंस्मृतम् ॥ ९३ ॥ मूले नाशोहिमूलस्य स्तम्भेहानिर्धन क्षयः । त्वचिभ्रातुर्विनाशश्चशा खायांमातृपीडनम् ॥ ९४ ॥ परिवा रक्षयंपत्रे पुष्पेमन्त्रीचभूपतेः । फलेराज्यं शिखायांचेदल्पजीवी च बालकः ॥ ९५ ॥

टीका–अब मूल संज्ञक जो नक्षत्र हैं तिनके बिचार की रीति मूलचक्रकरिके कहते हैं। मूल वृक्ष बनाय के ८ घरी मूल में धरिये, ६ स्तंभ में

११ त्वचामें, ९ शाखामे, १४ पत्र ५ पुष्प, ४ फल, ३ शिखा में ये ६० घटिका क्रम सों धरिये उस का फल जो मूल की ८ घडी में बालक का जन्म होय तो मूल नाश हो स्तंभ की ६ घरिनमें हो तो धन हानि होय त्वचा की ११ घरिनमें होय तो भ्राता का नाश होय, शाखा की ९ घरिन में होय तो पीड़ा करे, जो पत्रन की १४ घरिन में हो तो परिवार क्षय करे फूल की पांच घरिनमें राजमंत्री होय. फलन की ४ घरिनमें जन्मे तो राजा होय अथवा वंश में वा देश में श्रेष्ठ होय. शिखा की ३ घरिन में जन्मै तो आयु अल्प पावे ॥ ९२॥९३॥९४॥९५॥

मूलवृक्ष		फलं
शिखा	३	अल्पायु.
फल	४	नृप
फूल	५	राजमंत्री.
पत्र	१४	परिवारक्ष
शाखा	९	माताना.
त्वचा	११	भ्राताना.
स्तंभ	६	धनहानि
मूल	८	मूलनाश

रेवत्यादिमृगान्तेच यावत्तिष्ठ

तिचन्द्रमाः। तावच्छुक्रोभवेदन्धः सम्मुखेदक्षिणेशुभः॥ ९६॥ प्राक्पश्चादुदितः शुक्रः पञ्चसप्तदिनंशिशुः। विपरीतन्तुवृद्धत्वं तद्वद्देवगुरोरपि॥ ९७॥ तृतीयेदशमेषष्ठे प्रथमेसप्तमेशशी। शुक्लपक्षाद्द्वितीयस्तु पञ्चमेनवमेशुभः। ९८॥ ताराः शुभप्रदाः सर्वास्त्रिपञ्चसप्तवर्जिताः। प्रथमेदशमेषष्ठे तृतीयैकादशेतथा॥ ९९॥ यदिस्यात्सबलश्चंद्रस्ताराऽपिक्लेशदायिनी। तृतीयेपञ्चमेतारा सप्तमेचनृणां भवेत्॥ १००॥

टीका-रेवती से मृगशिर तक शुक्र अन्ध रहता है सो सन्मुख और दाहिने शुभ है॥ ९६॥ जब

पूर्व पश्चिम में सूर्य उदय होय तो पांच सात दिन बालक रहे । अस्त में पांच सात दिन वृद्ध है, तैसेही बृहस्पति जानिये ॥ ९७॥ चन्द्र ३।१० ६ शुभ हैं । और शुक्लपक्ष में २।५।९ शुभ है । और ३।५।७ त्याग के सब तारा शुभ हैं, १।६।३।११ जो चन्द्रमा बली हो तो तारा क्लेशप्रद न होय. और जो तारा ३।५।७ जिस मनुष्य को होय तो चन्द्रतारा क्लेशदायी होय ॥

अथ तारावलयन्त्रम्									
सू.	मं.	रा.	के.	३	३	६	१६	१२	शु
चं.	१	१०	६	३	७	शु.	२	५	ऽशु,
तारा	९	६	४	शु	२	१	८	मध्य	३
बुं.	६	८	२	४	१०	११	शु.	१	७।०
बृ.	२	५	७	९	११	शु.	शु.	घा	०
शु.	१	२	३	४	५	८	९	११	१२शु

जन्मभाद्गणयेद्धीमान्क्रमाच्चादि नभावधिम् । नवभिस्तुहरेद्भागं

शेषंताराविनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ जन्म
सम्पद्विपत् क्षेमः प्रत्यरिः साध
कोवधः । मैत्रातिमैत्रंताराः स्यु
स्त्रिरावृत्त्यानवैवहि ॥ २ ॥ त्रिषष्ठे
दशमेभौमो राहुः केतुःशनिः शुभः।
षष्ठेष्टमेद्वितीयेवा चतुर्थेदशमेबु
धः ॥ ३ ॥ द्वितीयेपञ्चमेजीवः सप्त
मे नवमेशुभः । विवाहशुक्रोद
शमे षष्ठेस्यात्सप्तमेशुभः ॥ ४ ॥
एकादशेग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु
शोभनाः । ग्रहाणांगोचरंज्ञेयं फ
लंविज्ञैः शुभाशुभम् ॥ ५ ॥ दश
म्यवधिकृष्णेतु पक्षपूर्णोहिचन्द्र
माः। ततः परंक्षीणचन्द्रः शुभका
र्येविवर्जितः ॥ ६ ॥

टीका-जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनके ९का भाग हरिये शेष बचे सो तारा कहिये सो जन्म, संपत्ति, विपत्ति, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र, अतिमैत्र, ये संज्ञा तीन आवृत्ति विचार के ॥ १ ॥ २ ॥ ३।६।१० भौम राहु, केतु, अरु शनि ये शुभ हैं । ६।८।२।४।१० बुध शुभ है । ११ ९।२।५।७ गुरु शुभ है । ११ सर्वग्रह शुभ हैं ॥३॥ ४॥५॥ कृष्णपक्ष का १० दिन तक चन्द्रमा पूर्ण है सो शुभ है फिर १० दिन तक क्षीण है सो शुभ कार्य को वर्जित है ॥ ६ ॥

पुनर्व्वसुद्वयंक्षौरे श्रुतियुग्मंकरत्रयम् । रेवतीद्वितयंज्येष्ठा मृगशीर्षंच गृह्यते ॥ ७ ॥ क्षौरेप्राणहरास्त्याज्या मघामैत्रंचरोहिणी । उत्तराकृत्तिकावारा भानुभौमघनैश्चराः ॥ ८ ॥ रिक्ताषष्ठ्यष्टमीज्ञेयाक्षौरंचन्द्रक्षयोर्निशि ।

सन्ध्याविष्टिघ्नचगण्डान्ते भोजनान्ते चगोगृहे ॥ ९ ॥

अथ क्षौरकर्ममुहूर्त.						
पु.	पु.	अ.	ध.	ह.	चि.	स्वा.
रे.	ऽश्वि.	ज्ये.	मृ.	न.	क्ष.	त्र.
बु.	बृ.	शु.	१	२	३	५
७	१०	११	१२	१३	ति	थि

टीका—उत्तरा पु. पु. अ. ध. ह. चि. रे. अ. ज्ये. मृ. ये ग्राह्य हैं और जो प्राणहर्ता हैं तिन्हैं त्यागिये. म. अ. रो. भ. उ ३ कृ. और भौम शनि रवि ये वार ४।६।०।९।१४ ये तिथि रात्रि अरु संध्या ये समय अरु गंडांत मूल भद्रा भोजन करके गोशाला ये वर्ज्य हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

रेवतीयुगलपुष्ये रोहिण्याम्मृगमैत्रयोः। श्रवणोत्तरशक्रेषु राज्ञांस्यादभिषेचनम् ॥ १० ॥

टीका-रे. अ. पु. रो. मृ. अनु. श्र. उ. ज्येष्ठो इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक कीजे ॥ १० ॥

रेवतीयुगलंज्येष्ठा मैत्रंहस्तत्र यंमृगः। पुनर्वसुश्चविज्ञेयो गण स्तिर्यङ्मुखोबुधैः ॥ ११ ॥ वृक्षा रोपणंवाणिज्यं सर्वसिद्धिंचकार येत्। वाहनानिचयन्त्राणि गम नंचविधीयते ॥ १२ ॥ पूर्वात्रयंम घाश्लेषा विशाखाकृत्तिकायमः। मूलंचाधोमुखोज्ञेयो नवकोऽयं गणोबुधैः ॥ १३ ॥ भूकार्यंमुग्रका र्यं च खननंविवरस्यच। युद्धं चाधोमुखं यच्च तत्कार्यंकारयेद् बुधः ॥ १४ ॥ उत्तरात्रितयंपुष्यो रोहिण्यार्द्राश्रुतित्रयम्। ऊर्ध्व वक्त्रोगणोज्ञेयो नक्षत्राणां मनी

षिभिः ॥ १५ ॥ प्रासादच्छत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरणम्। नानाभिषेकमेवं च कुर्यादूर्ध्वमुखेगणे॥

टीका–रे. अ. ज्ये. अनु. ह. चि. स्वा. मृ. पुन. इन तिर्यङ्मुख नक्षत्रनमें ये कार्य कीजै वृक्षारोपण वाणिज्य बाहन. यंत्र रहटादि अरु गमन ये शुभ हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥आश्लेषा. वि. कृ. भ. मू. इन अधोमुख नक्षत्रनमें ये कार्य कीजे. भूमि ग्रामादि कार्य उग्र संघातादि खनन कूपादि इतने कार्य्य शुभ हैं ॥ १३ । १४ ॥ उत्तरात्रय. पुष्य. रो. आ. श्र. ध. श. इन ऊर्ध्वमुख नक्षत्रन में ये काम कीजे. शिरोपाव देय, छत्रधारे. गृहादि. राजोपकरण. अभिषेक. अश्वाद्यारोहण ये शुभहैं ॥१५ ॥ १६ ॥

अथ तिर्यङ्मुखाधोमुखऊर्ध्वमुखयंत्रम्।

रे	ऽश्वि.	ज्ये.	ऽनु.	ह.	चि.	स्वा.	मृ.	पुन.	तिर्य.
पु.	पू.	पू.	म.	ऽश्ले.	वि.	कृ.	भ.	मू.	ऽधो
उ.	उ.	उ.	पू.	रो.	आ.	श्र.	ध.	श.	ऊर्ध्व

पुनर्वसुद्वयंपौष्णं मृगाश्ववीच करत्रयम् । मूलं श्रुतित्रयंमैत्रं भिषक्कर्मणिगृह्यते ॥ १७ ॥ सोमशुक्रसुरेज्यानांवाराःशकुनमुत्तमम् । लग्नेषुचापमीनेषु वृषोग्राह्यस्तुलाधरः ॥ १८ ॥

टीका—पु. रे मृ. ह. चि. स्वा. मू. अ. ध. स. शुक्र. गुरुवार. ध. मी. वृ. तु. ये लग्न उत्तम. इन सब विचार के वैद्य से औषध कराइये॥१७॥

अथ भैषज्यमुहूर्तयंत्रम् ।							
पु.	पु.	रे.	मृ.	ऽश्वि	ह.	चि.	स्वा.
मू.	अ.	ध.	श.	अ.	न.	क्ष.	त्र.
चं.	शु.	गु.	९	१२	२	७	लग्न

अमावस्याष्टमीत्याज्या पूर्णिमाचचतुर्दशी । रविवारेवर्जनी

यो गोपशूनांचनिर्गमः॥१९॥ चि
त्रोत्तरारोहिणीच श्रवणोपिविव
र्जितः। एतेषुपशुजातीनामशुभो
निर्ग्गमोभवेत् ॥२०॥

टीका—३०।८।१५।१४ ये तिथि. रविवार अरु तीनों उत्तरा, श्र. चि. रो. ये नक्षत्र पशुनके देनेमें वर्जित हैं, इनते अन्यमें दीजिये ॥१९॥२०॥

अथ पशुनिष्कासनमुहूर्तयंत्र।									
अ.	भ	कृ	मृ.	अ.	पु.	पु.	ऽश्ले.	म.	पू.
ह.	स्वा.	वि.	ऽनु	ज्ये.	मू.	पू.	ध.	श.	पू.
रे.	न.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वा.	र.
२	३	४	५	६	७	९	१०	१२	१३

उत्तरायांविशाखायां रोहिण्यां
च पुनर्व्वसौ। नवम्यांचचतुर्द
श्यामष्टम्यांनानयेत्पशून ॥२१॥

टीका—तीनों उत्तरा; वि. रो. पुन. ये नक्षत्र और ९।१४।८ ये तिथि पशु लेने में त्याज्य हैं॥२१॥

पूर्वामैत्रद्वयंमूलं वासवंरेवतीकरः । पुनर्वसुद्वयंग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये॥२२॥पुष्योभाद्रपदायुग्मंस्वातीश्रुतिरथाश्विनी। हस्तोत्तरामृगोमैत्रंतथाश्लेषाच्च रेवती॥२३॥ ग्राह्याणिभानिचैतानि क्रयविक्रययोर्बुधैः । चन्द्रभार्ग्गवजीवानां वाराःशकुनमुत्तमम् ॥ २४॥

टीका—पूर्वात्रय, अनु. ज्ये. मू. ध. रे. ह. पु. पु. इन नक्षत्रनमें पशु लीजै ॥ २२ ।पुष्य, पू. भा. स्वा. श्र. अश्वि. ह. उत्तरात्रय, मृ. अनु. आश्ले. रे. ये नक्षत्र और चन्द्र, गुरु, शुक्र ये वार उत्तम शकुन है ये सब क्रयविक्रयविषे शुभ हैं ॥ २३ ॥

नन्दातिथेश्चनामादौ पूर्णा-

याश्च तथान्तके। घटिकैकाशुभे त्याज्या तिथिगण्डेघटिद्वयम् २५

टीका—नंदातिथिनके आदि पूर्णाके अंत एक एक घटी अशुभ है ॥ २५ ॥

अथ तिथिगंडांतयंत्र।

१५	अंत.	घ.	टी.	आ.	घ.	१.
५	अंत.	घ.	टी.	आ.	घ.	१.
१०	अंत.	घ.	टी.	आ.	घ.	१.

ज्येष्ठाश्लेषारेवतीचनामान्ते घटिकाद्वयम्। आदौमूलमघाश्विन्या भगण्डघटिकाद्वयम् २६

टीका-ज्येष्ठा. आश्ले. रे. के अंत की २ घटी, मू. म. अश्विनी के आदि की २ घटी शुभ कार्य में अशुभ हैं ॥ २६ ॥

अथ नक्षत्रगंडांतयंत्र ।							
ज्ये.	अं.	घ.	२	मू.	आ.	घ.	२.
ऽश्ले.	अं.	घ.	२.	म.	आ.	घ.	२.
रे.	अं.	घ.	२.	ऽश्वि	आ.	घ.	२.

मीनवृश्चिककर्कान्ते घटिका र्द्धंपरित्यजेत् । आदौमेषस्यचा पस्य सिंहस्यघटिकार्द्धकम् ॥२७॥

टीका—मीन वृश्चिक कर्क के अंतघटी में, धन सिंह के आदि की घटिन में शुभ कार्य न कीजै२७

अथ लग्नगंडांतयंत्र ।							
१२.	अं.	प.	३०	आ.	प.	३०.	१.
८.	अं.	पं.	३०	आ	पं.	३०	९.
४.	अं.	पं.	३०	आ.	पं.	३०.	५.

तिथिगण्डेभगण्डेच लग्नगण्डे

चजातकः। नजीवतियदाजातो
जीवितेचधनीभवेत् ॥ २८ ॥

टीका—तिथि नक्षत्र लग्नके गंडांतों में जन्मे तो न जीवे. अरु जो जीवे तो धनी होय ॥ २८ ॥

सप्तम्यांचरवेर्वारे बुधश्चप्रति
पद्दिनम्। संवर्त्ताख्यस्तदायोगो
वर्जनीयः सदाबुधैः ॥ २९ ॥

टीका—सप्तमी को रवि परे वा बुध को प्रति पत् तिथि आवे तो संवर्ताख्ययोग कहिये सो शुभकार्यको वर्जित है ॥ २९ ॥

शुक्रे नन्दा बुधेभद्रा शनौरिक्ता
कुजेजया। गुरौपूर्णातिथिर्ज्ञेया
सिद्धियोगउदाहृतः ॥ ३० ॥

टीका—शुक्रेनंदा बुधे भद्रा, शनौरिक्ता, कुजे जया. गुरौ पूर्णा, होय तो सिद्धियोग कहिये. ये शुभकार्य को सिद्धिप्रद हैं ॥ ३० ॥

अथ सिद्धियोगयंत्रम्।					
शु.	बु.	श.	मं.	गु.	वार
१	२	३	४	५	तिथि.
६	७	८	९	१०	तिथि
११	१२	१३	१४	१५	तिथि

विष्कुम्भःप्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यःशोभनस्तथा। अतिगण्डः सुकर्माच धृतिःशूलस्तथैवच ॥३१॥ गण्डोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातोहर्षणस्तथा। वज्रंसिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघःशिवः॥३२॥ सिद्धः साध्यःशुभः शुक्लो ब्रह्मऐन्द्रोऽथ वैधृतिः। सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥ ३३ ॥

टीका—विष्कुंभ १, प्रीति २, आयुष्मान् ३, सौभाग्य ४, शोभन ५, अतिगंड ६, सुकर्मा ७, धृति ८, शूल ९, गंड १०। वृद्धि ११, ध्रुव १२, व्यघात १३, हर्षण १४, वज्र १५, सिद्धि १६, व्यतीपात १७ वरीयान् १८, परिघ १९, शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२, शुभ २३ शुक्ल २४, ब्रह्मा २५, ऐंद्र २६, वैधृति २७, ये योग नामतुल्य फलप्रद हैं ॥३१। ३२। ३३॥

तिथिन्तुद्विगुणीकृत्वा हीनमेकेन कारयेत्। सप्तभिस्तुहरेद्भागं शेषंकरणमुच्यते॥ ३४॥ बवश्च बालवश्चैवकौलवस्तैतिलस्तथा गरश्चवणिजोविष्टिः सप्तैतानिच राणिच॥३५॥ कृष्णपक्षेचतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमेदले। चतुष्पदश्चनागश्च अमावास्यादलद्वये ॥ ३६ ॥ शुक्लप्रतिपदायांचकिंस्तु

घ्नःप्रथमेदले । स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानिजगुर्बुधाः। ३७ शुक्लप्रतिपदान्तेच बवाख्यः करणोभवत् । एकादशचविज्ञेयाश्च रस्थिरविभागतः ॥ ३८॥

टीका--शुक्लप्रतिपदाते गततिथि वर्तमान तिथिसमेत दूनी करे एक घटावै. सातको भाग दीजै. जो अंक बचे सो करण जानिये॥ ३४॥बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज्, विष्टि, ये सात करण चरसंज्ञक कहिये ॥ ३५ ॥ कृष्ण चौदशीको अन्तदल शकुनीनाम करण कहिये और अमावस्या के पूर्वदलको चतुष्पद करण तथा अंतदल को नागनाम करण कहिये ॥ ३६ ॥ शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वदल को किंस्तुघ्ननाम करण कहिये. इन चारों को बुधजन स्थिर कहते हैं. अंतदलको बव कहै, ये ग्यारह करण चर स्थिर विभाग कर जानिये और कृष्ण १ के पूर्वदल में बालब धरिके क्रमसों कृष्ण चतुर्दशी

के पूर्वदलतांई फिरि शुक्लप्रतिपदाके अंतदलमें बव धरिये. या क्रमसों सदा भुगते हैं ॥ ३६ । ३७

कृष्णपक्षकरणानि.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	ति.
बालव	तैतिल	वणिज	वज	कौलव	गर	विष्टि.	बालव	तैतिल	वणि	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पा	दिवा.
कौलव.	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणि.	बव	कौल	गर	विष्टि	बाल	तैतिल	वणिज,	शकुनी	नाग	रात्रि

शुक्लपक्षकरणानि ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	ति.
किंस्तुघ्न	बालव.	तैतिल.	वणिज.	बव.	कौलव.	गर.	विष्टि.	बालव.	तैतिल.	वणि.	बव.	कौलव.	गर.	विष्टि.	दिवा.
बव.	कौलव.	गर.	विष्टि.	बालव.	तैतिल.	वणि.	बव.	कौल	गर.	विष्टि.	बाल.	तैति.	वणि.	बव.	रात्रि.

दस्रोयमोनलोधाता चंद्रोरुद्रो
दितिर्गुरुः । भुजंगमश्चपितरो
भगोर्यमदिवाकरौ ॥३८॥ त्वष्टा

वायुः शक्रवन्हीमित्रः शक्रश्चनि-
र्ऋतिः । जलंविश्वेविधिर्विष्णुर्वा
सवोवरुणास्तथा ॥४०॥ अजैकपाद
हिर्बुध्न्यः पूषेतिकथिताबुधैः ।
अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणा
मधीश्वराः ॥ ४१ ॥

टीका—अश्विनी का स्वामी अश्विनीकुमार, भरणी यम. कृत्तिका अग्नि. रोहणी ब्रह्मा. मृग चन्द्रमा. आ. रुद्र. पु. आदिति. पुष्य गुरु.आश्लेषा सर्प. म. पितर. पू. फा. भग. उ. फा. अर्यमा. ह. सूर्य. चि. त्वष्टा. स्वा. वायु. वि. इन्द्राग्नी. अनु. मित्र. ज्ये. इन्द्र. मू. राक्षस. पू. षा. जल. उ. षा. विश्वेदेव. अभि. विधि. श्र. विष्णु ध. वासव. श. वरुण. पू. भा. अजैकापाद्. उ. भा अहिर्बुध्न्य. रे. पूषा. ये. नक्षत्रोंके स्वामी कहिये जिस देवता की प्रतिष्ठा पूजा करै ताको नक्षत्र लीजै ॥ ३९ । ४० । ४१ ॥

अथ नक्षत्रदेवता।

(१)														
अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	आ	म	पू	उ	ह	चि	नक्षत्र
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
अश्वि	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्रमा	रुद्र	अदिति	गुरुः	सर्प	मित्र	भग	अर्य	सूर्य	त्वष्टा	देवता

(२)														
स्वा	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	ऽभि	श्र	ध	श		उ	रे	नक्षत्र
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५,	२६	२७	२८	
वायु	इंद्राग्नि	मित्र	इन्द्र	राक्षस	जल	विश्वे	विधि	विष्णु	वसु	वरुण	अजैक	अहिर्बु	पूषा	

इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्यविरचितेशीघ्रबोधसंग्रहे नक्षत्रप्रकरणं संपूर्णम् ॥

इति द्वितीयप्रकरणम्।

श्रीः ।

॥ अथ तृतीयप्रकरणप्रारम्भः ॥

॥ श्लोक ॥

शिरोमुखंकर्णनेत्रं स्पृष्ट्वापृच्छ
तियोनरः । सुवर्णधनधान्यनां
लाभस्तत्रनसंशयः ॥ १ ॥ स्कन्ध
ग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभोहि
दुःखतः । कुक्षिनाभिसमालम्भे
भक्ष्यपानादिसिध्यति ॥ २ ॥ जं
घालिंगकटिस्पर्शे कन्यालाभः सु
तोद्भवः । जानुगुल्फपदस्पर्शे म
हाक्लेशःप्रजायते ॥ ३ ॥ केशस्प
र्शेभवेन्मृत्युः फलस्पर्शेशुभंभवेत् ।
तृणांगारकसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न

जायते ॥ ४ ॥ काष्ठपंकपटस्पर्शे ग्रहपीडाभयम्भवेत्। सुगन्धमद्य भाण्डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते॥५॥ शून्यालयेषु मशाने च शुष्ककाष्ठक्ष तेतरौ। गुल्फभस्माधमस्थाने प्र श्नः क्लेशः प्रजायते ॥ ६ ॥ देवगृहे नदीतीरे दिव्यस्थाने शुभम्भवेत्। शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥ ७ ॥

टीका-जो प्रश्न पूछे तो माथे, मुख, कान, नेत्र अपने हाथ छुए तो निःसन्देह धन धान्य पावे. कन्ध, ग्रीवा, कण्ठ, हाथ छुए होय तो लाभ दुःख ते होय, जो काख, नाभि छुए तो भोजन पाना दिक पावे. जो जङ्घा, लिंग, कटि छुए तो कन्या वा पुत्र होय. और गोडा पाय छुए तो महाक्लेश पावे. केश छुए हो मृत्यु होय फल छुए शुभ होय

तृण अग्निते सिद्धि न होय. काष्ट, कीच, वस्त्र छुए ग्रहभय होय सुगन्ध वा मद्यपात्र छुए सिद्धि होय और शून्य गृह, श्मशान, सूखे काष्ठपर घायल तरुलता विषे भस्मपै बैठे पूछे तो क्लेश पावे। १॥ २। ३। ४। ५। ६॥ देवेति। देवस्थान नदीके तीर. पवित्र ठौर में और शुद्ध दिशान के सन्मुख हो पूछे तो शुभ कहे. जो विदिशा हैके पूछे तो अशुभ है॥ ७॥

तिस्रोमीनेचमेषेच घटीपंचश्रुतिःपलम्। चतस्रश्चवृषेकुम्भे पलाप्रोक्तास्तुषोडश॥ ८॥ मिथुने मकरेपञ्चघटिकाविंशिखाः पलम्। पञ्चकर्कचचापेच शशिवेदाःपलाः स्मृताः॥ ९॥ कन्यांपञ्चतुलेपञ्च पलश्चन्द्रस्तथाग्नयः। घटिकाः पञ्चसिंहेऽली द्व्यवेदाः पलाः स्मृ

ता:। एवंलग्नप्रमाणांस्यात्कथित
र्पूर्वसूरिभिः ॥ १० ॥

टीका—तिश्च इति. मी. मे. ३।४५ वृ. कुं. ४।
१६ मि. म. ५।५ क. ध. ५।४१ क. तुला ५।३१
सिं. वृश्चिक. ५।४२ या प्रकार लग्न प्रमाण
पण्डित कहे हैं ॥ ८।५।१ ॥

सूर्येधेनुश्चताम्रं चगोधूमंर
क्तचन्दनम् ॥ चन्द्रे शंखंचन्दनंच
वस्त्रंचसिततन्दुलाः ॥ ११ ॥ कुजे
वृषःप्रवालव्योरक्तवस्त्रंगुडौदनम्
बुधेकर्पूरमुद्गाश्च हरिद्राचहरि
न्मणिः ॥ १२ ॥ पीतवस्त्रद्वयंजीवे
हरिद्राचणकानिच ॥ अश्वः शु
क्रेसितोदेयः शुक्लधान्यानियानि
च ॥ १३ ॥ शनौतैलंतिलादेयाः कृ

षणागोदानमुत्तम् ॥ राहोभ्रचम हिषीछागौमाषाश्चतिलसर्षपाः ॥ १४ ॥ अजमेषौचदातव्यौ केतौ चान्नञ्चमिश्रितम् । स्वर्णगोविप्रपूजाभिःसर्वेषांशान्तिरुत्तमा ॥ १५ ॥

टीका—अथ ग्रहाणां दानानि ॥ सूर्येति । सूर्य को लालगाई, तांबा, गहूं, रक्तचन्दन, चन्द्र को शङ्ख, चन्दन, श्वेतवस्त्र, श्वेत चावल, भौम को वृषभ, रक्तवस्त्र, गुडौदन, बुध को कर्पूर, मूग, हलदी, हरितमणि,बृहस्पतिको पीतवस्त्र,दो हलदी चणाकीदाल, शुक्रको श्वेत घोडा श्वेत धान्य, शनिको तैल, काली गाई, राहुको भैंसी, बकरा उडद, तिल,सरसों केतुको बकरा, मेंढा, सतनजा, अरु जों सोना, गेहूं , ब्राह्मण पूजा इत्यादिक सर्व ग्रहन के दोषको शान्ति करते हैं ॥ ११ । १२ । १३ । १४ । १५ ॥

मेषे [illegible]गुरौसुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखीनरः ॥१६ ॥ वृषेगुरौस्वल्पवृ

ष्टिः प्रजापीडार्चाविग्रहः। अना
वृष्टिः प्रजानाशो रौरवंमिथुने
गुरौ ॥१७॥ कर्कैगुरौमहावृष्टिर्देश
भंगोमहर्घता॥ सिंहेगुरौसुभिक्षं
च सुवृष्टिश्चप्रजासुखम्॥१८॥ क
न्यागुरौरोगपीडासुभिक्षं सस्यज
न्मच॥ तुलेगुरौसस्यनाशोबहुक्षी
रप्रजायते॥१९॥अलौजीवेचदुर्भि
क्षं राजचौरौरगाद्भयम्।चापेगुरौ
शुभावृष्टिः शुभंसस्यमहर्घता।२०।
दुर्भिक्षं मकरेजीवे राजयुद्धंपशु
क्षयः॥ कुंभेगुरौचदुर्भिक्षं धातु
मलंमहर्घता॥२१॥ दुर्भिक्षंक्षिणो
देशे झषेजीवेनचान्यगे ॥२२॥

टीका—जब मेषराशिमें बृहस्पति आवै तब सुभिक्ष होई. वर्षा अधिक होई. मनुष्य सुखित रहे. अरु वृषमें बृहस्पति आवै तो वर्षा ओछी होय प्रजाको पीडा होइ विग्रह फल. अरु मिथुन को बृहस्पति होइ तब वर्षा अति अच्छी होइ.वैर बाढ़. प्रजाको पीडा होइ. अरु कर्क उच्चस्थान में बृहस्पति आवै तो वर्षा बहुत होइ. अरु देश भंग होइ. अन्न महँगा होइ सिंह को बृहस्पति होइ तो सुभिक्ष करै वर्षा अधिक होइ प्रजा सुखित रहे कन्याका गुरु होइ तो रोग पीडा धान्योत्पत्ति और अन्न सस्ता होइ तुला के गुरु होय तो खेती नास करे, दूध बहुत, वृश्चिक के गुरु होयँ तो राज चोरभय दुर्भिक्ष करे. धन के गुरु होयँ तो वर्षा खेती बहुत करे. रस महँगो करे. मकर के गुरु होयँ महादुर्भिक्ष, राजन को युद्ध पशुन को नाश करे कुंभ के गुरु होयँ तो दुर्भिक्ष, धातु महँगी करे. मीन के गुरु होय तो दक्षिण देश में दुर्भीक्ष करे अन्य देश में नहीं॥ १६।१७।१८।१९। २०।२१।२२॥

मार्गकार्त्तिकसंक्रान्तौ वृष्टिर्वर्षतिमध्यमा। पौषेमाघेनृणांसौ

स्वयंसस्यपूर्णासुन्धरा ॥२३॥ चैत्र फाल्गुनवैशाखज्येष्ठानां संक्रमेघनः । यदिवर्षतिसर्वत्र सुभिक्षंच प्रजासुखम् ॥२४॥ आषाढेसंक्रमेवृष्टौ व्याधिश्चश्रावणेसुखम् । भाद्रेचबहवोरोगा सुखंसर्वत्रचाश्विने ॥२५॥ इत्येषामपिसंक्रांतौवृष्टिश्चापिशुभाशुभम् ॥२६॥

टीका—जो मार्ग, कार्तिकके दिन थोरी वा बहुत वर्षा हो तो वर्षाऋतु में मध्यम वर्षा होय और समय मध्यम होय, पौष माघ में संक्रांति के दिन मेघ वर्षै तो प्रजा सुखीरहे और सब अन्न अधिक उत्पन्न हो और चैत्र, फाल्गुन वैशाख में और ज्येष्टमें संक्रांति के दिन मेघवर्षै तो सर्वत्र सुभिक्ष रहे. और अन्नादिक सकल पदार्थनते सतुष्ट आरोग्यता पूर्वक प्रजा सुखी रहे, यदिति जो आसाढ में संक्रांति के दिन जल वर्षै तो प्रजा

को रोग अधिक जो श्रावणमेंसंक्रांति के दिन जल वर्षे तो प्रजा को अधिक सुख होय. भाद्रेति।जो भादो में संक्रांति के दिन मेघ वर्षै तो अनेक रोग होय और जो आश्विनमें संक्रांति को जलवर्षे तो आनंदहोय. ऐसे संक्रांतियों से वर्षा देखिके शुभा शुभ फल कहना ॥२३।२४। २५।२६॥

चैत्रस्यशुक्लपञ्चम्यां पूर्ववायुर्घनागमः।भाद्रेगुण त्रयेमौल्यं रसानांजायतेतदा ॥ २७ ॥ ज्येष्ठस्य शुक्लपंचम्यां वृष्टौपश्चिममारुतः। तदाचतुर्गुणंमौल्यं धान्यानांकार्तिकेभवेत् ॥ २८ ॥ श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां वृष्टिर्वातोदिनद्वयम् । दक्षिणेपश्चिमेज्ञेयं दुर्भिक्षंधान्यसंक्षयः ॥ २९ ॥ चित्रास्वातीविशाखाया श्रावणेचैववर्षति । सर्वर

त्नंपरित्यक्त्वा कर्तव्यश्चान्नसं
चयः ॥ ३० ॥

टीका—जो चैत्र शुक्ल पंचमी को पूर्व पवन चले और मेघ वर्षै तो भादों में रस, गोरस,घृत तिगुने मोल बिके. जो ज्येष्ठशुक्ल पंचमी को पश्चिम पवन चले तो मेघ वर्षै और कार्तिकमें अन्न चौगुन मोल बिके. जो श्रावण शुक्लपंचमी को दो दिन वर्षै व पवन चले तो मेघ वर्षै दक्षिण पश्चिम में धान्यक्षय होय। २७। २८। २९॥ जो श्रावणमें चित्रा, स्वाती, विशाखा वर्षै तो सर्वरत्न बेचके अन्न संचय कीजे ॥ ३० ॥

आषाढपूर्णिमायांचेदनिलोवा
तिनिर्ऋतौ। अनावृष्टिर्धान्यना
शोजलंकूमेनदृश्यते॥३१॥आषा
ढपूर्णिमायान्तुवायव्येयदिमारु
तः।धर्म्मसिद्धिस्तदालोके धनधा
न्यंगृहेगृहे ॥३२॥ आषाढपूर्णिमा

यांतु ईशान्यवातिमारुतः । सुखि
नोहितदालोका गीतवाद्यपराय
णाः ॥३३॥ वह्निकोणेवन्हिभीतिः प
श्चिमेचजलाद्भयम् । अन्यत्रयदि
वायुःस्यात्सुभिक्षंजायतेतदा ३४
सर्वमासेपूर्णिमायां भूमिकम्पोय
दा भवेत् । उल्कातारावज्रपातै
र्ग्रसितौशशिसूर्यकौ ॥ ३५ ॥ धूम्र
केतुःशक्रचापग्रहणेबहुधातथा ।
तदासौसर्ववस्तूनां जायतेचमह
र्घता ॥ ३६ ॥

टीका—आषाढ़के पूर्णिमाको नैर्ऋत पवन बहै तो वर्षा थोरीहोय और धान्यभी, थोरे उपजे तृण थोरे उपजे, कूप सुखजाय, जो आषाढ पौर्णिमाको वायव्य पवन चले तो लोक धर्म्मशील

रहे और धनधान्य होय. और जो ईशान मारुत बहे तो लोक सुख आनन्दसो रहे. और जो आग्नेय पवन चले तो अग्निभय होय. पश्चिम पवन चले तो जलभय होय. जो और दिशान को पवन चले तो सुभिक्ष होय. सो जो कोई पौर्णिमाको भूमिकम्प वा दिनमें तारा टूटे उल्का पात वा बज्रघात होय. वा चन्द्र सूर्य ग्रसै वा केतु उदय होय इन्द्रधनुष कटे तो सब वस्तु महगी होय। ग्रहण में अवश्य ॥ ३१।३२।३३।३४॥

आषाढेशुक्लपंचम्यां द्वितीयायांचवर्षति। यदिमेघस्तदावृष्टिः श्रावणेजायतेध्रुवम् ॥ ३७॥ तृतीयायांपूर्ववायुः पूर्वेयातिचवारिदः। यदिव्योम्नितदाभाद्रे वर्षतेविपुलंजलम् ॥ ३८॥ चतुर्थ्यां दक्षिणोवायुर्म्मेघः पूर्वेचगच्छति। आश्विनेचतदामासे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ ३९॥

टीका--आषाढ शुक्लपंचमी वा द्वितीयाको वर्षै तो श्रावण में विशेष वर्षै और ज्येष्ठ ३पूर्व को पवन चले और मेघ पूर्व आकाशमें जाय तो भादो में जल ज्यादा वर्षै. जो ४ को पवन दक्षिण दिशा चलै और पूर्व को मेघ जाय तो आश्विन में विशेष वर्षै ॥ ३७ । ३८ । ३९ ॥

पंचम्यामुत्तरेवायुर्दृश्यतेच यदाबुधैः । तदाचकार्त्तिकेमासे वृष्टिर्भवति भूयसी ॥ ४० ॥ चतुष्टये चदिवसे यदावर्षतिवारिदः । अतिवृष्ट्याचदुर्भिक्षंजायतेनात्रसंशयः ॥ ४१ ॥ दिनद्वयंयदावाता वान्तिदक्षिणपश्चिमे । तदानश्यन्तिधान्यानि दुर्भिक्षंचप्रजायते ॥ ४२ ॥ तृतीयायांचपंचम्यां वातः पूर्वोत्तरेयदि । तदाधान्यानिजायन्ते सर्वंकृतयुगोपमम् ॥ ४३ ॥

टीका–जो आषाढ शुक्ल पंचमी को उत्तर पवन बहै तौ कार्तिक में अधिक वर्षै, जो आषाढ की ।२।३।४।५। को वर्षै तो पृथ्वी पर अति वृष्टि से दुर्भिक्ष परै, जो आषाढ सुदी।२।३। को पवन दक्षिण ते पश्चिम को जावै तो धान्य का नाश होय और दुर्भिक्ष परै, जो आषाढ सुदी ३।५ को पूर्ववाही वा उत्तरवाही पवन चलै तौ बहुत अन्न समृद्धि होय और सतयुग की समान सर्व होय ॥ ४०।४१।४२।४३ ॥

पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्जति। आर्द्रादितोविशाखान्तं सूर्यचारेणवर्षति॥४४॥ यदितिष्ठतिभौमस्यक्षेत्रेकोपिग्रहस्तदा। षण्मासंतुषधान्यानां जायतेचमहर्घता। चन्द्रेचदिननाथेच सर्वरोगःशुभन्तदा। शनौराहौसर्वधान्यं समर्घंराजविग्रहम्। बुधक्षेत्रे

रवौचन्द्रे विरोधःसर्वभूभुजाम्॥४७॥
उत्पत्तिस्तुसुधान्यानां पंचमास
म्प्रजायते । सुभिक्षंतुमहावृष्टिः
पशूनांतृणसंकुलम् ॥ ४८ ॥

टीका—जो पौषमास में मूलते भरणी पर्यंत चन्द्र नक्षत्र में बादर न होय तो आर्द्राते विशाखालौं सूर्य नक्षत्र वर्षे, जो भौमके क्षेत्रमें कोऊ ग्रहहोय तो ६ छह मासताईं चाउर महँगे रहें, जो शुक्रके क्षेत्रमें भौमको उदय होय तौ २ मास महँगी रहै, जो चन्द्रमा अथवा सूर्य उदय होय तौरोगकरै परन्तु क्षेमरहै जो शनि वा राहु उदय होय तौ सर्वान्न महँगो होय अरु राजविग्रह करै जो बुधके क्षेत्रमें चन्द्र सूर्य उदय होय तौ राजनमें विरुद्धकरै. अरु पांच मासमें धान्य उपजै. अतिवृष्टि होय पशुनको तृण बहुत होय ॥ ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ ॥

शुक्रक्षेत्रेबुधपश्चंद्रपश्चंद्रक्षेत्रेभृ
गोःसुतः । पाषण्डानांभवेद्वृद्धिर्धा

न्यानांच महर्घता ॥ ४९ ॥ बुध
क्षेत्रेशनौचन्द्रेसप्तधान्यमहर्घता
शुक्रक्षेत्रेगुरौभौमेकार्पासादिमह
र्घता ॥ ५० ॥ भौमक्षेत्रेशनौराहु
स्ताम्रादीनांमहर्घता । शनिक्षे
त्रेशनीराहुः सुभिक्षं चन्द्रभास्करे
॥ ५१ ॥ पशुनाशोधान्यवृद्धिर्गुडा
दीनांमहर्घता । गुरुक्षेत्रेशनौरा
हौस्वल्पवृष्टिस्तृणक्षयः॥५२॥भौ
मेराज्ञांविरोधःस्याद्बुधेवृष्टिश्चभू
यसी । तृणवृद्धिःपशूनांचसौख्यं
धान्यंबहूनिच ॥ ५३ ॥ भौमक्षेत्रे
यदासन्तिराहूभौमार्कभार्गवाः ।
धणमासंगुडकार्पा सघृतक्षीरमह

र्घता ॥५४॥ मन्दक्षेत्रेयदासन्ति मन्दराहुबुधास्तथा । चतुष्पदानांनाशश्चद्विपदानांचजायते ५५

टीका—जो शुक्रकी राशिमें बुध और चन्द्रमा होय और चन्द्रमाकी राशिमें शुक्र होय तो पाष पड बढे अन्न महगो होय. बुधके गृहमें शनि वा चन्द्रमा होय तो सातो अन्न महँगे बिके. शुक्र के घरमें गुरु वा भौम होय तो कपासादि नीरस महगे बिके. जो भौमके घरमें शनि वा राहु होय तो ताम्रादि धातु महँगी बिके. जो शनिके घरमें राहु तो सुभिक्ष होय, जो सूर्य चन्द्रके घरमें शनि राहु होय, तो पशुमर और गुडादिक महगे होय. धान्य अधिक होय जो गुरुके घर शनि राहु होय तो स्वल्पवृष्टि और तृणादिक क्षय होय जो गुरुके क्षेत्रमें मंगल होय तो राजन में विरोध होय. जो गुरुके घर बुध होय तो वर्षा अधिक होय तृण विशेष, पशुनको सुख होय. धान्य विशेष होय. भौमके घर राहु, भौम सूर्य वा शुक्र होय, तो ६ छह मासतांई गुड,कपास,घृत, दुग्ध

महंगे रहैं. और जो शनिक्षेत्रविषे राहु, शनैश्चर और बुध ये ग्रह स्थित होय तो चौपायनको नाश होय. और द्विपद जो पक्षी और मनुष्य उनको नाश होय ॥ ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५॥

भौमक्षेत्रेयदासन्ति शुक्रमन्दनिशाकराः। तदामुक्तापशूनांच शंखस्यचमहर्घता ॥ ५६ ॥ भौमक्षेत्रे भार्गवश्चधान्यानांचमहर्घता। शनिक्षेत्रेरवौचन्द्रेवस्त्राणांचमहर्घता ॥ ५७॥ शुक्रक्षेत्रेगुरुर्भौमः प्रजापीडाप्रजायते। ग्रहराशिसमायोगे फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ५८ ॥ चन्द्रोदयेकुजक्षेत्रेतुषधान्यस्यवृद्धये। चन्द्रोदयेभृगुक्षेत्रे स्वल्पवृद्धिःक्रयाणके ॥ ५९॥ प्रजा

पीडाबुधक्षेत्रेसोमशुक्रोदयोभवेत्। रविक्षेत्रेतुलावृद्धिः शनिसोमभृगूदये॥ ६०॥ चन्द्रक्षेत्रेशुक्रचन्द्रबुधानामुदयोभवेत्। षण्मासंस्याच्चदुर्भिक्षमतिवृष्टिश्चजायते।६१। उदितौचबुधक्षेत्रेयदिराहुशनैश्चरौ। पशुक्षयः प्रजापीडाधान्यानांचमहर्घता॥ ६२॥ शुक्रक्षेत्रेसोमसूर्यसूर्यपुत्रोदयोयदा। उदयास्तमहापीडाजायतेच महर्घता६३

टीका—जो भौमक्षेत्रमें शुक्र, शनि, चन्द्रमा, उदय करे तौ मोती, शङ्ख, पशु महँगे होय. जो भौमक्षेत्रमें शुक्र उदय करै तो अन्न महँगा होय शनिक्षेत्रमे रवि, चन्द्र उदयते वस्त्र महँगे होय, अरुण पाते अवश्य. जो शुक्रक्षेत्रमें गुरु वा भौम उदय करे तौ प्रजाको पीडा होय और

ग्रहराशि को योग परै तो ऐसे फल करै.जो भौम क्षेत्रमें चन्द्रोदय होय तो धान्यवृद्धि करै शुक्रके क्षेत्रमें चन्द्रोदय होय तो खरीद करनेवाले को स्वल्पवृद्धि करै.जो बुधके क्षेत्रमें चन्द्र शुक्र उदय करे तो प्रजाको पीडा करै. जो रविक्षेत्रमें शनि चन्द्र उदय करैं तो तौल बढे जो चन्द्रक्षेत्रमें शुक्र चन्द्र बुध करैं तो ६ छह मास दुर्भिक्ष रहै और वर्षा अधिक होय. जो बुधके क्षेत्रविषे राहु और शनैश्चरको उदय होय. तो पशुनको क्षयहोय और प्रजाको पीडा होय. और अन्न महगा होय और शुक्रके क्षेत्रमें बुध सूर्य, शनि उदय करैं तो उदय अस्त पर्यंत संसार पीडित होय और अन्न महगा होय ॥५६।५७।५८।५९।६०।६१।६२॥

यदोदयःशनिक्षेत्रेभौमभास्करयोर्भवेत् । घृतानांचतदावृद्धिर्गुडानांचमहर्घता ॥६४॥ यदासावुदितश्चैवशनिक्षेत्रे शनैश्चरः। तदासौ तृणकाष्ठानांलोहानांचमहर्घता ॥ ६५ ॥

टीका—जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य भौम को उदय होय तो घृतकी वृद्धि होय, और रक्तवस्त्र तथा मङ्गलिक वस्तु सब सस्ती होय. तथा गुडादि महंगो होइ. जो शनिक्षेत्रमें शनि उदय होय तौ तृण, काष्ठ, लोह महंगे होय ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

आर्द्रायांतुयदाभौमःशनिरग्ने स्तथाभवेत् । बुधोभाद्रेचदुर्भिक्षं सुभिक्षं भृगुनन्दने ॥६६॥ गुरुर्यदा विशाखायांतदाधान्यमहर्घता । मंगलंवर्षकालश्चशनौसर्वत्र मंगलम् ॥ ६७ ॥ सुभिक्षं चानुराधायां यदिकोपिग्रहोभवेत् । कल्याणं चसुभिक्षं चा ऽऽश्लेषायांचस्थिते गुरौ ॥ ६८ ॥ कार्पासाबहवोमन्दे भौमेकटकपीडनम् । बुधेतिला श्चमाषाश्चमहर्घंवर्षकालतः ६९

सूर्यैसर्वाणिधान्यानि महर्घाणि भवन्तिच। शुक्रेचमहतीवर्षासस्यानिसकलानिच ॥ ७०॥

टीका-जो आर्द्राके भौम होय वा कृत्तिकाके शनि, और भाद्रपादाके बुध होय तो दुर्भिक्ष करै और जो शुक्र होय तो सस्ता होय ॥ ६६ ॥ जो विशाखाके गुरु होयँ तो अन्न महँगो होय. परन्तु वर्षपर्यन्त मङ्गल रहे और जो शनि होयँ तो सर्व मङ्गल विनोद होयँ और मङ्गल कार्य होय ॥६७॥ जो अनुराधा को कोऊग्रह होयँ तो सुभिक्ष होय और जो ऽश्लेषा को गुरु होयँ तौ प्रजाको कल्याण होय और अन्न क सुभिक्ष होय ॥ ६८ ॥ जो आश्लेषाको शनिहोय तौ कर्पास बहुत होय जो भौम होय तो फौजको पीडा करे और जो आश्लेषाके बुध होय तो वर्षभर तिल और उडद महँगे होय जो आश्लेषके सूर्यहोय तौ सब अन्न महँगे होयँ और जो आश्लेषाके शुक्रहोयं तो वर्षा बहुतहोयं. और सकल अन्न बहुत उत्पन्न होयं ॥ ६९ । ७० ॥

मूलेकुलित्थमुद्गानांगुरौवृद्धिः प्रजायते । भौमेमुद्गस्यनाशःस्याद्बुधेचसर्वसंपदः ॥७१॥ पूर्वाषाढगतेभौमेपीडाचपशुपक्षिणाम् । केतौमहर्घतामन्देजायतेचमहर्घता ॥७२॥ उत्तराषाढकेजीवेगुडानां चमहर्घता । भौमेचपशुजातीनां जायतेचमहर्घता ॥ ७३ ॥ अभिजिन्नामनक्षत्रे यदाच्छायासुतो भवेत् । सर्वसस्यानिजायन्तेसुभिक्षंच कुजेतथा ॥ ७४ ॥ श्रवणेचयदाजीवस्तदास्युःसर्वसंपदः । बुधे राजसुतत्रासःशनौभूरीक्षुकारकः ॥ ७५ ॥ कृत्तिकायांचरोहिण्यांच

दाजीवोहितिष्ठति । मध्यमानि
चसस्यानितदावृष्टिश्चमध्यमा ॥
७६ ॥ आर्द्रायांमृगशीर्षेचयदावा
चस्पतिःस्थितः । दुर्भिक्षंस्याद
नावृष्टिःप्रजानांचसदाशिवम् ७७
फाल्गुनीद्वयहस्तेषु मघायांचय
दागुरुः । सुभिक्षंचसुवृष्टिश्चप्र
जानांस्यादरोगता ॥ ७८ ॥

टीका—जो मूलके गुरु होय तो कुलित्थ और मूंग बहुत होय. जो भौम होय तौ मूंग नाश होय बुध होयँ तौ सर्व संपदा होय ॥ ७१ ॥ जो पूर्वाषाढाको भौम होय तौ पशुपाक्षिनको अति पीडा होय. केतु होय तो सर्व वस्तु महंगी करे. तैसेही शैनिश्चर करे ॥ ७२ ॥ जो उत्तराषाढाके गुरु होयँ तौ गुड महगा होय भौम होय तौ सर्वान्न उपजै सुभिक्ष होय ॥ ७३ । ७४ ॥ श्रवण के गुरु होय तौ सर्व संपदा करे,बुध होय तौ राज

पुत्रन को पीडा करे. शनिहोय तौ ईख छुवारे अधिक होय ॥ ७५ ॥ जो कृत्तिका वा रोहिणी को गुरु होय तौ अन्न मध्यम उपजै. वर्षा मध्यम होय ॥७६॥ जो आर्द्रा तथा मृगशिर के गुरु होय तो दुर्भिक्ष होय। वर्षा लघु प्रजाको सदा अकल्याण होय ॥ ७७ ॥ फाल्गुनेति । मघा, पूर्वा, उत्तराफाल्गुनी, हस्तके गुरु होय तौ सुभिक्ष और आरोग्यता होय ॥ ७८ ॥

चित्रास्वात्योर्यदाजीवस्तदाचित्रपयोधरः। विचित्राणिभवन्त्येवसस्यानिचक्कचित्क्वचित् ॥ ७९ ॥ विशाखामैत्रयोर्जीवेधान्यंवर्षाच मध्यमम् । ज्येष्ठामूलेमासयुग्मं वृष्टिर्मासद्वयेनच ॥ ८० ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढेस्थितो यदिबृहस्पतिः । तदारोग्यंसुभिक्षं चसुवृष्टिश्चप्रजायते॥ ८१ ॥ अनावृष्टिश्च

दुर्भिक्षं रेवत्यां संस्थिते गुरौ । धनिष्ठायां च शुक्रेपि पीडा भवति हस्तिनाम् ॥ ८२ ॥

टीका—चित्रा तथा स्वातीको गुरु होय तौ विचित्र वर्षा होय. और कहुं विचित्र पृथ्वी फलै फूलै और धान्य क्वचित् क्वचित् होय ॥ ७९ ॥ विशाखा और अनुराधाको गुरु होय तौ वर्षा और अन्न मध्यम रहे. ज्येष्ठा, मूलकें गुरुमें दो मास वर्षै ॥ ८० ॥ पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा के गुरु में प्रजा आरोग्य रहे वर्षा अच्छी होय और सुभिक्ष होय ॥ ८१ ॥ जो रेवतीके गुरु होय तौ वर्षा न गिरे. तथा अन्न महगा होय धनिष्ठाके शुक्र होय तौ हाथीनको पीडा होय ॥ ८२ ॥

इति श्रीकाशिनाथभट्टाचार्यविरचितशीघ्रबोधे लोकोपकारकतिलकवार्तिके तृतीयप्रकरणंसमाप्तम् ॥ ३ ॥



अथ चतुर्थप्रकरणप्रारम्भः॥

——:o:——

अथ होडाचक्रम्।

अथ नक्षत्रका विचार कहते हैं. एक नक्षत्र के चारि चरण हैं जिस चरणमें जन्म होय तिस चरण कै अक्षरको आदिदेके नाम बालक कन्या को राखिये. सो कहै हैं. चू, चे, चो, ला अश्विनी १. ली, लू, ले, लो, भरणी २. आ, ई, उ, ए, कृतिका ३. ओ, वा, वी, वू, रोहिणी ४. वे, वो, का, की, मृग ५. कू, घ, ङ, छ, आर्द्रा ३. के, को, हा, ही, पुनर्वसु ७. हु, हे, हो, डा, पुष्य ८. डी, डू, डे, डो, आश्लेषा ९. मा, मी, मू मे मघा१०. मा, टा, टी, टू, पूर्वा ११. टे, टो, पा पी. उत्तरा १२. पू, ष, ण, ठ, हस्त १३. पे, पो, रा, री, चित्रा १४. रू, रे, रो, ता, स्वाती १५. ती, तू, ते, तो, विशाखा १६. ना, नी, नू, ने, अनुराधा १७. नो, या, यी, यू, ज्येष्ठा १८. ये, यो, भा, भी, मूल १९. भू, धा, फा ढा, पूर्वाषाढा २०. भे, भो, जा

जी, उत्तराषाढा २१- जू, जे, जो, खा, अभिजित् २२ खी, खू, खे, खो, श्रवण २३. गा, गी, गू गे धनिष्ठा २४ गो, सा, सी, सू शततारका २५. से, सो, दा, दी, पूर्वाभाद्रपदा २६. दू, थ, झ, ञ, उत्तराभाद्रपदा २७. दे, दो, चा, ची. रेवती ॥ २८ ॥

अथ लध्वंकराशयः ॥

आला मेष १. ऊवा वृषभ २. काच्छा मि. ३. डाहा कर्क ४. माटा सिं. ५. पाठा कन्या. राता तु. ७ नोया वृ. ८. भाधा धन ९. खागा मकर १० गोसा कुंभ ११. दोचा मीन ॥ १२ ॥

तनुर्धनंसहजसुहृत्पुत्रशत्रुकलत्रकाः। मरणंधर्मकर्मायव्ययोद्वादशराशयः ॥ १ ॥

द्वादशभावानां कोष्ठकम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तनु.	धन.	सह	सुहृ.	पुत्र	श.	क.	मृत्यु.	धर्म	कर्म.	आय	व्यय.

अथ सपादनक्षत्रद्वयतो राशिक्रमः ।

सप्तविंशतिभानांचनवभिर्नवभिःपदैः । अश्विनीप्रमुखानांच मेषाद्याराशयःस्मृताः ॥ २ ॥

टीका—अश्विनी भरणी कृतिकापादं मेषः १ कृत्तिकायास्त्रय;पादा रोहिणीमृगशिरार्द्धं वृषभः २. मृगशिरार्द्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः ३. पुनर्वसुपादमेकंच पुष्यआश्लेषांतं कर्कः ४. मघा पूर्वाउत्तराफाल्गुनीपादमेकंसिंहः ५उत्तराफाल्गुनी त्रयःपादा हस्ताचित्रार्द्धं कन्या ६, चित्रार्द्धं स्वाती विशाखापादत्रयं तुला ७, विशाखापाद मेकमनुराधाज्येष्ठांतं वृश्चिकः८,मूलंच पूर्वाषाढोत्तराषाढापादमेकं धनुः९,उत्तरायास्त्रयः पादा अभिजिच्छ्रवणधनिस्ठार्द्धं मकरः १०. धनिष्ठार्द्धं शताभिषापूर्वाभाद्रपदापादास्त्रयः कुंभः११.पूर्वा भाद्रपदापदमेकमुत्तराभाद्रपदारेवत्यंतं मीनः१२

तृतीयेदशमेपंचनवपञ्चमयो
र्दश। दशपंचाष्टमेतुर्येसप्तमेविंश
तिस्तथा ॥ ३ ॥ विश्वास्तुग्रहदृष्टी
नामेषुस्थानेषुउच्यते। पंचविंशो
पकंप्रोक्तंपादमेकंक्रमोच्यते। आ
यव्ययेधनेषष्ठे लग्नेखेटीनदृ
श्यते ॥ ४ ॥

टीका—पांच बिश्वेदृष्टिको १ चरण कहिये. ऐसेही २० बिश्वेलौं चरण जानिये. आय कहे ११ व्यय १२ धन २ लग्न १ षष्ठ ६ इन स्थानों में कोई ग्रहकी दृष्ठि नहीं होती है ॥ ३। ४ ॥

तृतीयेदशमेमंदोनवमेपंचमेगु
रुः। विंशतेवीक्ष्यते विश्वांश्च-
तुर्थेचाष्टमेकुजः ॥५॥ रविवारे-
णसंयुक्तायदास्यान्माघज्येष्ठयोः
अमावास्यातदापृथ्वी रुंडमुंडा

चजायते ॥ ६ ॥ अयनास्त्रिगुणा
मासाएकपंचाशतायुताः । दलि
ताघटिकाज्ञेयाः पलास्त्रैगुण्ययवा
सराः ॥ ७ ॥ एकपक्षेयदायांति
तिथयश्चत्रयोदश । त्रयस्तत्रक्ष
यंयांतिवाजिनोमनुजागजाः ॥८॥

टीका-तिसरे ३ दशयें १० शनि और नवयें९ पांचयें ५ गुरु. चौथे ४ आठयें८मङ्गल. या प्रकार तीनों ग्रह बीसौं विश्वा संपूर्ण दृष्टि जहां परै तहां ते देखते हैं ॥ ५ ॥ माघ ज्येष्टकी आमावा स्याको जो रविवार परे तौ रुंड मुंड पृथ्वी में परै ॥६ ॥ मकर को अयन लगे तिस दिनते वर्तमान दिनताई जे मास पूरे बीते होय सो तिगुने करै. तामें ५१ जोरिके आधे करे जो रहै सो घटी जानिये. और महीननते आधिक जो दिन बढै सो तिगुनेकरै. जो अंक होय तितने पल उन घरिनमें जोरिके दिनप्रमाण शुद्ध या प्रकार जानिये और कर्ककी अयनके दिनते गिनके या

प्रकार गणितसों रात्रिप्रमाण जानिये परन्तु उत्तरायणके सूर्य विषे दिन बढतहैं तहां दिन बढते हैं ओर दक्षिणायन में रात्रि बढती हैं. तहां रात्रि प्रमाण बनाइये ७ जो एक पक्षमें तेरह तिथिहोंयं तो मनुष्योंको नाश करे और घोडनका नाश करें और हाथिन को क्षय होय यह त्रयोदश दिनकी पक्ष तीनो योनिंको निषिद्ध हैं ॥ ८ ॥

सूर्ययुक्ताच्चनक्षत्राद्दिनभंचत्रयंत्रयम् । आदित्यश्चबुधःशुक्रःशनिश्चचंद्रःकुजस्तथा ॥ ९ ॥ जीवोराहुश्चकेतुश्चहोमेक्रूरानशोभनाः आदित्त्येतुभवेच्छोकोबुधेसंपत्तिरुत्तमा ॥ १० ॥ शुक्रेचैवधनप्राप्तिःशनौपीडाचजायते । चंद्रे भवतिलाभश्चभौमेच बंधुबंध

नम् ॥ ११ ॥ गुरौपरमकल्याणं रा
हौहानिश्चसर्व्वदा । केतौचप्राण
संदेहोवन्हिचक्रमुदाहृतम् ॥१२॥
सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषे गु
णेभ्रेभुविवन्हिवासः । सौख्याय
होमेशशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशो
दिविभूतलेच ॥ १३ ॥

टीका-जिस नक्षत्रके सूर्य होय तहां ते तीन तीन नक्षत्र सूर्यादि ग्रहोंको बांटि दीज सूर्य,बुध शुक्र, शनि, चन्द्र,मंगल,गुरु, राहु, केतु, या क्रमते दिनके नक्षत्रको विचारिये. जो क्रूरके भागमें परे तो शोकप्रद हैं. बुध. उत्तम संपत्ति. शुक्र धर्मप्रद शनि पीडा. चन्द्र लाभ. भौम बंधन करे, गुरु परम कल्याण. राहु सदा हानि. केतुके भागमें प्राणसंदेह. या प्रकार वह्निचक्र जानिये ॥ ९ ।१० ११ । १२ ॥ तिथिवार जोरिकै एक और मिलावे चारनको भाग दीजे तीन शून्य होयं तौ अग्नी

पृथ्वी में जानिये सुखप्रद है. और एक बचै तौ स्वर्ग में जानिये. अर्थ नाश करे. २ बचे तो पाताल में जानिये. प्राणनाशकरै. ॥ १३ ॥

अथ संवत्सरनामानि.

प्रभवोविभवः शुक्लः प्रमोदोथप्रजापतिः ॥ अंगिराःश्रीमुखोभावो युवा धता तथेश्वरः ॥ १४ ॥ बहुधान्यःप्रमाथी च विक्रमोवृषभस्तथा । चित्रभानुःसुभानुश्चतारणः पार्थिवोव्ययः ॥ १५ ॥ ब्रह्मविंशतिरित्येकासृष्टिरत्रप्रजापतेः । सर्वजित्सर्वधारीच विरोधीविकृतिस्तथा ॥ १६ ॥ खरोनंदननामाच विजयश्चजयोऽपरः । मन्मथो

दुर्मुखश्चैवहेमलंबिविलंबकौ १७
विकारीशार्वरीचाथप्लवंगः शुभकृ
त्तथा। शोभनश्चतथाक्रोधीविश्वा
वसुस्तथपरः॥ १८॥पराभावाख्यो
ह्यपरो विष्णोरित्येकविंशतिः ।
प्लवंगः कीलकः सौम्यस्तथासाधा
रणोपरः ॥ १९ ॥ विरोधकृत्समा
ख्यातःपरिधावीप्रमादकृत्। आ
नंदो राक्षसश्चाथनलश्चपिंगल
स्तथा ॥२०॥ कालःसिद्धार्थिरौद्रौ
चदुर्मतिर्दुंदुभिस्तथा। अपरोरु
धिरोद्गारीरक्ताक्षीक्रोधनस्तथा२१
क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि

तुर्विंशतिः । वत्सराःषष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥२२॥

टीका—प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति ५अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ युवा ९ धाता १० ईश्वर ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृषभ १५ चित्रभानु १६ सुभानु१७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० सर्वजित १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृति ४ खर५नंदन६विजय ७ जय८ मन्मथ ९ दुर्मुख १० हेमलंबी ११ विलंब १२ विकारी १३ शार्वरी १४ प्लव. १५ शुभकृत१६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वासु १९ पराभव २० प्लवंग १ कीलक २ सौम्य३सधारण ४ विरोधकृत् ५ परिधावी ६ प्रमादी ७ आनंद ८ राक्षस ९नल १० पिंगल ११ काल १२ सिद्धार्थ १३ रौद्र१४दुर्मति १५ दुंदुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्षी१८क्रोधन १९ क्षय २० ये ६० संवत्सरहैं. जैसे नाम वैसा उनका फलहै ॥१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२॥

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः । बुधः कन्यामिथुनयोः

पतिः कर्कस्य चंद्रमाः ॥२३॥ स्वामी
ज्योमीनधनुषोः शनिर्मकरकुंभयो
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो
गणकोत्तमैः ॥२४॥ कन्याराहुगृहं
प्रोक्तं केतो र्वृचमिथुनं स्मृतम्। का
र्तिकाद्विगुणा मासा गताभिस्तिथि
भिर्युताः ॥२५॥ सप्तविंशतिभिर्न्यु
ना दिनतारैकसंयुताः। राहोर्नी
चं धनवृचैव केतोस्तस्माच्च सप्तमम्

टीका—मेष वृश्चिकके स्वामी मङ्गल वृष
तुलाके शुक्र. कन्या मिथुनके बुध. कर्कके चन्द्रमा
मीन धनके गुरु. मकर कुंभके शनि. सिंहके सूर्य
जानिये. और कन्याके पति राहु. मिथुन के केतु
कार्तिकते गतमास दूने करि गत तिथी जोरि २७
को भाग दीजै. शेष बचै सो नक्षत्र जानिये
अश्विनी ते गनिये. धनके राहु नीच ताके सातवें
केतु नीच मिथुनके जानिये ॥ २३ । २४ । २५।२६

वारेरूपंतिथौरुद्रा धट्यांपंच दशैवच। एकत्रिंशत्पलेदद्यात्सूर्यसंक्रमणंभवेत् ॥ २७ ॥ सार्धाष्टमासेपूर्वस्मिन्नुदितःपश्यतेभृगुः। सार्धमासद्वयं सूर्यमंडलेचततोवसेत् ॥ २८ ॥ उदितःपश्चिमेभागे नवमासंचवीक्ष्यते। दशाहंसूर्यमध्येतु ततश्चास्तमितोभवेत् २९ एकग्रामेपुरेवापि दुर्भिक्षेराजविग्रहे। तीर्थयात्राविवाहेचशुक्रदोषोनविद्यते ॥ ३० ॥ दशार्द्राद्याःस्त्रियस्ताराविशाखाद्यानपुंसका तिस्रस्ततश्चमूलाद्याःपुरुषाश्चचतुर्दश ॥ ३१ ॥ स्त्रीपुंसयोर्महा

वृष्टिःस्त्रीनपुंसकयोःक्वचित्। स्त्री स्त्रियोः शीतलच्छायायोगःपुरु षयोर्नच ॥ ३२ ॥

टीका—अब संक्रांतिक्रिया. प्रथम वर्ष की संक्रांति के वारमें एक जोरिये. और तिथिन में १९ जोरिये घरिनमें १९ जोरिये. पलमें३१ जोरिये या भांति जो संक्रांति बनावनी होय तहांकी संक्रांति में जोरि के भाग दीजै तो शुद्ध संक्रांति बन जाइ. सार्धेति। साढे आठ मास शुक्र पूर्व में उदय रहे और अढाई मास सूर्यमंडल में रहे. उपरांत ९ मास पश्चिममें उदय होत हैं.। फिर दशदिन सूर्यमंडल में, फिर पूर्व में उदय होय एकग्राम बसे. शुक्रदोष न गनिये. और दुर्भिक्ष राजविग्रहपरे विवाह तीर्थयात्रामे दक्षिण सन्मुख शुक्रदोष न गनिये ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ आर्द्रादि १० नक्षत्र स्त्री है विशाखादि ३ नपुंसक हैं. मूलादि १४ पुरुषसंज्ञक हैं. जो स्त्री नक्षत्र होय और सूर्यपुरुष में आवै तो महावृष्टि होय स्त्रीनपुंसक में थोरी वर्षै स्त्री स्त्री में मेघछाया रहै पुरुष पुरुषमें न वर्षै ॥ ३१ । ३२ ॥

उदयास्तंगतः शुक्रो बुधश्चवृ
ष्टिकारकः। जलराशिस्थितेचंद्रेप
क्षांतेसंक्रमेतथा ॥ ३३ ॥ बुधःशुक्र
समीपस्थःकरोत्येकार्णवांमहीं।
तयोरंतर्गतोभानुःसमुद्रमपिशोष
येत् ॥ ३४ ॥चलत्यंगारकेवृष्टिस्त्रि
धावृष्टिःशनैश्चरे। वारिपूर्णांम
हींकुर्वा पश्चात्संचरतेगुरुः॥३५॥
भानोरग्रेमहीपुत्रोजलशोषःप्रजा
यते। भानोःपश्चाद्धरासूनुर्वृष्टि
र्भवतिभूयसी ॥ ३६ ॥

टीका—शुक्र बुधके उदय अस्तमें वर्षा होय. और जलराशी चन्द्रमा में पक्षके अंत सक्रांति परे तो बर्षा होय. ॥ ३३ ॥ जो बुध शुक्र समीप में होय तो पृथ्वीभरमे जल बर्षै और तिनके बीच

में सूर्य आनपरै तो समुद्र के जलकोभी शोषलये ॥३४॥ मंगल चलै तो मेघ वर्षै और शनिके उदय अस्त तथा चलबे में जहां तहां वर्षै और तिनके पाछे गुरु आवे तो पृथ्वीभरमें बर्षै. ॥ ३५ ॥और सूर्यके आगे भौमभंये जल शोषहोय. जो पीछे होय तो अतिवर्षाकरे ॥ ३६ ॥

कर्केकुंभेचसिंहेच मकरेचदिवाकरः । पूर्वेवा पश्चिमेवापिद्वारं कुर्याच्चवेश्मनः ।३७। मेषेवृषेवृश्चिकेचतुलेचापियदारविः । गृहद्वारंतदाकुर्यादुत्तरंवापिदक्षिणम् ॥३८॥ धनुर्मिथुनकन्यायांमीनेचयदिभानुमान् । नकर्तव्यंतदागेहं कृतेदुःखमवाप्नुयात् ॥ ३९ ॥

टीका— क. कु. सिं. म. के सूर्य में गृह बनावै, तो घरका द्वार पूर्व पश्चिम में शुभ हैं. ॥ ३७ ॥ मेष. वृष, वृश्चिक. तु. के सूर्य में उत्तर दक्षिण घर

का द्वार शुभ है ॥ ३८ ॥ ध. मि. क. मी. के सूर्य में गृह निर्माण करना अशुभ और दुःखप्रदहै३९

यदैकमासेग्रहणंजायतेशशिसूर्ययोः। शस्त्रकोपैःक्षयंयांतितदा भीतिःपरस्परम् ॥४०॥ ग्रस्तोदितौचग्रस्तास्तौधान्यभूपालनाशकौ। सर्वग्रस्तौचन्द्रसूर्यौदुर्भिक्षमरणप्रदौ ॥४१॥

टीका-जो एकमासविषे चन्द्र सूर्य दोनों ग्रहणपरे तो राजन में क्रोधते युद्ध होय ॥ ४० ॥ जो सूर्य चन्द्रमा ग्रसित उदयहोय तो अन्न कोनाशकरे. और जो ग्रसित अस्तहोय तो राजा का नाशकरे सर्वग्रस्त होय तो दुर्भिक्ष परै और मरण होय ॥ ४१ ॥

उपरागोयदामेषे पीडयंतेचसदाजनाः। कांबोजाश्चकिराताश्चपांचालाश्चकलिंगकाः॥४२॥

वृषेचग्रहणेपीडापण्ञ्वःपथिकाङ्ग
नाः। महांतोमनुजाश्चैवतेपीड्यं
तेचसर्वदा ॥४३॥ रविचन्द्रमसौ
ग्रस्तौ मिथुनेचवरांगनाः। पीड्यं
तेबाह्लिकामत्स्या यमुनातटवा
सिनः ॥ ४४॥ कर्कटेग्रहणेपीडाम
ल्लादीनांचजायते । अंतरंसर्वरा
ज्ञांचतद्वामत्स्यनिवासिनः ॥४५॥
सिंहेचग्रहणेपीडासर्वेषां वनवा
सिनाम् । नृपाणांनृपतुल्यानांम
नुजानांचजायते ॥४६॥ कन्यायांग्र
हणेपीडात्रिपुराणांचशालिनाम्
कवीनांलेखकानांचजायतेपीडनं
तथा ॥४७॥ तुलायामुपरागेचपी
डनंबककाकयोः। कौंकणस्थाःप

राश्चैवपीड्यंतेमाधवश्चये॥४८॥
वृश्चिकेग्रहणे पीडासर्पजातेश्च
जायते। औदुंबरस्यमद्रस्यचोल
यौधेयकस्यच ॥४८॥ यदोपराग
श्चापेचतद्दामत्स्याश्चवाजिनः।
विदेहमत्स्यपांचालाः पीड्यंते
भिषक्कोविदौ॥५०॥ मकरेग्रहणेपी
डानीचांमंत्रवादिनाम् । स्थाव
राणांजंगमानां चित्रकूटस्थसंक्ष
यः ॥५१॥ कुंभेचैवोपरागेचपर्वश्च
मस्थैस्तथार्बुदैः। तस्करैरोगिणां
मृत्युःपीड्यं तेबहुधाजनाः ॥५२॥
मीनोपरागेपीड्यंतेजलद्रव्याणि

सागरः । जलोपजीविनोलोकाये चयत्रप्रतिष्ठिताः ॥ ५३ ॥

टीका–जो मेष राशिपर ग्रहण परे तो कांबोज, किरात, पांचाल, कालिंग देशको पीडाकरे ॥४२॥ जो वृषपै परे तो पशु और पथिक और बड़े मनुष्य को पीडा करे ॥ ४३ ॥ और जो मिथुनपै परै तो सुंदर श्रेष्ट स्त्री, और वहांके देश मत्स्यादि, जीवजंतु व मत्स्य देश को वा यमुनातटवासिन को पीड़ा करे, ॥४४॥ जो कर्कपै परै तो मल्लादि अंतर्वेदि सर्वार मत्स्यदेशको पीडाकरे४५ जो सिंहपै परे तो सर्व वनवासी और राजा और राजनके सब मनुष्य को पीडा करे ॥ ४६ ॥ जो कन्याराशिपर ग्रहणपरे तो त्रिपुष्कर देशवासिन को पीडा करे और धनको नाश करे और कवि चतुरन को पीडा करै और लेखक चित्रकारन को पीडाकरे. ॥४७॥ जो तुलाराशिपै परे तौ पक्षिन को काक बकादिन को कौंकणकाण्वन को और साधुनकी पीडा करे॥४९॥ धनराशिपै ग्रहण होय तो मत्स्य, घोडे, तपस्वी मल्ल, पांचालवासी, मिथिलावासी और वैद्य और पंडितको पीडा

होय ॥ ५० ॥ जो मकर राशिको ग्रहण होय तो नीच मंत्रवादिनको पीडा करे और स्थावर जंगम पशु पीडा पावैं. और चित्रकूटवासिनको क्षय होय ॥ ५१ ॥ कुंभपै परे तो अर्बुददेश और पश्चिम-पर्वतवासी पीडा पावैं. और चोर पीडित होय ५२ मीनपै परे तो जलजंतु जलजीवि और जलद्रव्य पीडा पावैं. ॥ ५३ ॥

गृहकृत्यासुवृष्टिश्च नीहारश्च भयंकरः। विद्युत्पातोऽग्निदाहो थपरिवेषश्चरोगकृत् ॥ ५४ ॥ दिग्दाहोऽग्निभयंकुर्यान्निर्घातो नृपभीतिदः। झंझावायुश्चंडशब्दश्चौरभीतिप्रदायकौ ॥ ५५ ॥ ग्रहयुद्धेराजयुद्धं केतुदृष्टेतथैवच । ग्रहणांतेमहावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ ५६ ॥

टीका—अथ दैव्यापत्ति कहते हैं, ग्रह इति। जो विना पवन आकाश तें भयंकर धूरि बर्षै मनुष्य न सूझै विना मेघ बिजुरी चमकै अग्निदाह अरु सूर्य के रक्तमंडल परै तौ रोग होइ. जो सूर्यास्त भये पीछे फेर दिशान में अग्नि लगीसी वा पीत रंग आकाश दीखै तौ अग्नि भय होइ. सूखे मेघ गर्जै तौ राजन को भय अतिवेगसे प्रचण्ड शब्द वायु चलै तौ चोरभय होइ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ग्रह इति। ग्रहन को युद्ध होइ वा केतु उदयहोइ तौ राजन मे युद्ध होइ अरु ग्रहण पर पीछे जल बर्षै तौ सर्वदोष मिटैं ॥ ५६ ॥

अश्विन्यामुदितेकेतौ हन्यात्सलङ्कपालकम्। भरण्यांचकिरातेशं कृत्तिकायांकलिंगकम् ॥ ५७ ॥ रोहिण्यां शूरसेनेशं मृगे काशिनराधिपम्। आर्द्रायांजलजाधीशं भस्मकेशंपुनर्वसौ॥५८॥

पुष्येचमगधाधीशं सार्पस्थःका शिकाधिपम्। मघायांवंगनाथंच पूर्वायांपांडुनायकम्॥५९॥ उज्ज यिन्यान्नृपंहन्ति उत्तराफाल्गुनी गतः।गण्डकाधिपतिंहस्त चित्रा यांकुरुभूभुजाम् ॥ ६० ॥ स्वात्यां काश्मीरकांबोजभूपतीनां विना- शकः। इक्ष्वाकुकुरुदेशानां विशा खायां विनाशकः ॥ ६१ ॥ मैत्रेयो ग्रस्यनाथंच सार्वभौमंतथेंद्रकम्। आन्ध्रमद्रकनाथंचमूलस्थोहन्ति निश्चितम्॥६२॥ पूर्वाषाढेकाशि राजाउत्तराषाढकेतथा । पौण्ड्रे यशैबवैदेहा श्रवणेकैकयेश्वरः

॥६३॥ वसौपञ्चनदीधीघ्रां वाह्रणो सिंहलेश्वरम् । पूर्वापाद्रदेवंगं नैमिषेघ्रंतथोत्तरे ॥६४॥ रेवत्या मुदितेकेतौ किराताधिपतेर्वधः। धूम्राकारः सपुच्छश्च केतुर्व्वि श्वस्य पीडकः ॥ ६५ ॥

टीका–अश्विन्यामिति । जो अश्विनीमें केतु को उदयहोइ तो लंका देश के राजा को पीडा करै. भरणी में होइ तो किरात देशके राजाको पीड़ा करै. कृत्तिका में होइ तौ कलिंग देशके राजा को पीड़ा करै. ॥ ५७ ॥ रोहिण्यामिति । रोहिणी में होइ तो शूरसेन देशके राजा को, मृगशिर में काशिराजा को, अद्रामें जलज कहे पद्मक देशके राजाको पुनर्वसु में भस्मक देश के राजा को पीड़ा करै ॥ ५८ ॥ पुष्य में मगध देशाधिपति को, आश्लेषा में काशिपति को, मघा में बंगदेशपतिन को, पूर्वाफाल्गुनी में पांडु-देशपतिन को पीड़ा करै ॥ ५९ ॥ उत्तरा फाल्गु

णी में उज्जैन नृपति को, हस्त में होय तो गंड-
नदी के राजा को पीड़ा करै, चित्रा में कुरुक्षेत्र के
राजा को हनन करै ॥ ६० ॥ स्वाती को होय तो
काश्मीर के राजा को और काम्बोज देश के
भूपति को विनाश करै, विशाखा को होइ तो
इक्ष्वाकु देश के राजा को और कुरुदेशाधिपति
को विनाश करै ॥ ६१ ॥ जो अनुराधा में होय
तो उग्रदेश के नाथ को पीड़ा करै और ज्येष्ठा
में होय तो सर्व पृथ्वीपति चक्रवर्तिन को पीड़ै;
मूल में होय तो अन्धक देश और मदक देश के
राजा को पीड़ा करै ॥ ६२ ॥ पूर्वाषाढ़ा में होय
तो काशी के राजा को पीड़ा करै, उत्तराषाढ़ा
में होय तो पौण्ड्र देश और शैव देश के और
मैथिल देश के राजा को पीड़ा करै, श्रवण में
होय तो कैकय देश के राजा को पीड़ा करै ॥ ६३ ॥
धनिष्ठा में होय तो पंचनदी तट के राजन को पीड़ा
करै, शतभिषा में होय तो सिंहलदेश के राजा को
पीड़ा करै, पूर्वाभाद्रपदा में होय तो बंगालदेश
के राजा को पीड़ा करै ॥ ६४ ॥ उत्तराभाद्रपदा
के होय तो नैमिषारण्यवासिन को पीडा करै.
जो रेवती में केतु उदय करै तो किरात देश के
राजा को पीडा करै और केतु स्वरूप धुवां के

समान पुच्छसहित होता है, सो विश्वको पीड़ा प्रद होता है ॥ ६५ ॥

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयोभवेत् । आयुष्मान्स्वातिसंयुक्तोनृपनाशः पशुक्षयः ॥६६॥ धनुर्नक्रे चमेषाद्याश्चत्वारस्तुनिशाचराः।तेविनामिथुनंपंचज्ञेयाः पृष्ठोदयाबुधैः ॥६७॥शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुम्भएवचः । दिवाबलास्तुमीनस्तुब लीरात्रौ तथादिने ॥ ६८ ॥

टीका—जो कार्तिककी अमावस, दिवाली रवि, भौम, शनिवार में पड़े और स्वाती नक्षत्र आयुष्मान् योगसंयुक्त होय तो राजन को नाश करे और युद्धादिक अधिक होय. और पशुन का क्षय होय ॥ ६६ ॥ धनु, मकर, मेष, वृष,

कर्क, मिथुन इनकी निशाचर संज्ञा कहिये और मिथुन बिना ये पांचों की पृष्ठोदयसंज्ञा कहते हैं ॥ ६७ ॥ सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ इन राशिन की शीर्षोदय संज्ञा कहिये और मीन लग्न दिवा बली है और रात्रि विषे भी बलवान् है, जैसे दिन विषे ॥ ६८ ॥

तद्दृक्षंद्विगुणंकृत्वा रामैर्हीन ञ्चकारयेत् । मुनिभिश्चहरेद्भागं शेषांकेलभतेफलम् ॥६९॥ चन्द्रवे देचदुर्भिक्षंसुभिक्षंयुग्मबाणयोः । रामेरसेचमध्यंच शून्येशून्यंप्रकी र्तितम् ॥ ७० ॥ अतिचारगतेसौ म्येक्रूरेवक्रत्वमागते । हाहाभूतं जगत्सर्वं रुंडमुंडंचजायते ॥ ७१ ॥

टीका—जिस लग्न में जो पृच्छक पूछै तिसको द्विगुणो करके तीन घटाय दीजिये तिसमें सात को भाग दीजै जो शेष बचै ताको फल कहिये॥६९॥

जो १। ४ बचे तो दुर्भिक्ष कहिये, और २। ५ बचै तो सुभिक्ष कहिये, और ३। ६ बचै तो भाव सम रहिये, और शून्य पूर्ण होय तो बाज़ार से वस्तु न आवे ॥७०॥ जो सौम्यग्रह अतिचार और पापग्रह वक्री होय तो जगत् में हाहाकार मचावै युद्ध ते रुंड मुंड गिरै ॥ ७१ ॥

मन्त्रस्वीकरणं चैत्रेब हुदुःखफलप्रदम्। वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥ ७२॥ आषाढे बन्धुनाशः स्याच्छ्रावणे तु शुभावहः। प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥ ७३॥

टीका—जो चैत्रमासमें दीक्षा लेय तो बहुत दुःख पावे, वैशाख मास में मन्त्रदीक्षा लैवे तो रत्नलाभ होय, ज्येष्ठमास में लेवै तो निश्चय मृत्यु होय॥ ७२॥ जो आषाढमास में मन्त्रदीक्षा लेय तो भ्रातृको नाश होय, श्रावणमास में मन्त्र दीक्षा लेय तो शुभ होय, भाद्रपदमास में मन्त्र

दीक्षा लेवै तो प्रजानाश और आश्विनमास में मन्त्र दीक्षा लेवै तो सब सुख पावै ॥७३॥

कार्तिकेधनवृद्धिःस्यान्मार्गशी र्षेशुभप्रदम्। पौषेतज्ज्ञानहानि स्यान्माघेमेधाविवर्धनम् ॥ ७४॥ फाल्गुनेसुखसौभाग्यं सर्वत्रपरि कीर्तितम् । दीक्षाकर्मफलंमासे ष्वित्येवंचशुभाशुभम् ॥७५॥

टीका—जो कार्तिक मास में मन्त्रदीक्षा लेवे तो धनकी वृद्धि होय,अगहन मासमें मन्त्र सुनै तो शुभ कहिये, पौष मास में मंत्र सुनै तो ज्ञान हानि होय, माघ मास में मंत्र सुनै तो ज्ञान की वृद्धि होय॥ ७४॥ जो फाल्गुनमासमें मंत्रदीक्षा लेवे तो सुख सौभाग्य और यशस्वी होय॥७५॥

मासंशुक्रबुधादित्याश्चन्द्रःपाद दिनद्वयम् । भौमस्त्रिपक्षंजीवो ब्दं साधवर्षद्वयंशनिः राहुःकेतुः

सदाभुंक्तेसार्धमेकंतुवत्सरम् ७६

सूर्यर्क्षाद्रसपृष्ठभैः सुखयुतं वेदैः शिरोमृत्युदं वाहौनागसुसौख्य भोगमतुलं गर्भेशरैर्नाशयेत् । द्वौ द्वौमुक्तिकरौकलत्रसरणांह्यंघ्रौद्वयं चक्रमाचचुह्लीचक्रविचारणांसुधिषणैःप्रोक्तंहिगर्गादिभिः ॥ ७७ ॥

टीका—सूर्य शुक्र बुध एकमास पर्यंत राशि में रहते हैं, और चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है, मंगल डेढमास रहताहै, और बृहस्पति एक वर्षपर्यंत रहताहै, शनि अढाई वर्ष पर्यंत रहता हैं, राहु केतु डेढ डेढ वर्ष रहताहै ॥ ७६ ॥ सूर्य नक्षत्र से ६ पृष्टके श्रीप्रद हैं, माथे के ४ मृत्युप्रद हैं, बाहु के आठ सुखप्रद हैं, गर्भ के पांच नाशप्रद हैं, भुज के २ भोग चरण २ नाश ये चुह्ली निमित्त, दिननक्षत्र को विचारिये ॥ ७७ ॥

इतिश्रीकाशिनाथभट्टाचार्यकृतौ शीघ्रबोधसंग्रहे चतूर्थप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

इति शीघ्रबोधः संपूर्णः ।

श्री

Munshi Chand Mehta
Railway Mail Service
Cawnpore. E.I.R.
or
116 Civil Lines
Cawnpore

कृ० ... मेहता

इन्सपेक्टर रा० मे० स० नं० ...

— रेलवे मेल सर्विस ई० आई० आर०॥

— बंगला नं० ११६ सिविल लैन

कानपुर

१।१। ...१०१३

घाट
मीरघाट

हैरनराज मीरघाट लहोरी टोला
पास पं. अनन्तराम मिश्र
बनारससिटी

।३।

।। हनुमते नमः ।।

श्री

